हिन्दी दैनिक

रोजनामा इन्डो गल्फ

www.Newsindogulf.com/Email:-Newsindogulf730@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

पटना,गुरूवार | 26 दिसंबर 2024 | वर्ष : 02 | अंक :218 | पृष्ठ -14 | PRGI NO - BIHHIN/2023/86924 | मूल्य - ₹ 3 | पटना संस्करण

ब्रीफ न्यूज

भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने कैथोलिक बिशप कॉन्फ्रेंस मुख्यालय का दौरा किया

एजेंसी

नई दिल्ली: भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा ने क्रिसमस के अवसर पर यहां ह्यकैथोलिक बिशप कॉन्फ्रेंस ऑफ इंडियाह्ल (सीबीसीआई) मुख्यालय और सेक्रेड हार्ट कैथेड्रल चर्च का दौरा किया।नड्डा ने सोशल मीडिया मंच जैसा कि हम ईसा मसीह के जन्म का जश्न मनाते हैं, आइए हम देने की भावना, शांति की खोज, आशा की शक्ति और एक राष्ट्र के रूप में हम कैसे प्रेम, करुणा और सद्भाव के मूल्यों को अपना सकते हैं और बढ़ा सकते हैं, इसका भी जश्न मनाएं।भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि वह सभी देशवासियों की खुशी और कल्याण की प्रार्थना करते हैं। उन्होंने कहा, ह्यह्यहमारा राष्ट्र सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के मंत्र से निर्देशित होकर विकास के पथ पर आगे बढ़ता रहे और सभी भारतीयों के योगदान से विकसित भारत 2047 के अपने लक्ष्य तक पहुंचे। आप सभी को क्रिसमस की शुभकामनाएं! प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी सोमवार को सीबीसीआई का दौरा किया था।

JDU ने फिर किया साफ, NDA में सबकुछ ठीक,

नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ेंगे बिहार चुनाव

2024 के लोकसभा चुनाव से कुछ महीने पहले नीतीश कुमार ने महागठबंधन सरकार गिरा दी और फिर से बीजेपी के साथ सरकार बना ली। राज्य में बीजेपी एनडीए में सीनियर पार्टनर है। राज्य विधानसभा में जहां भाजपा के 84 विधायक हैं,

एजेंसी

पटना: केंद्रीय मंत्री और जदयू नेता राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह ने मंगलवार को कहा कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) 2025 का बिहार विधानसभा चुनाव मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ेगा। रंजन सिंह ने बताया कि 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ेगा। बिहार में लोकसभा चुनाव में सत्तारूढ़ एनडीए ने अच्छा प्रदर्शन किया. बिहार में एनडीए में बीजेपी के अलावा जेडी-यू, एलजेपी (रामविलास) और हिंदुस्तान अवाम मोर्चा (सेक्युलर) शामिल हैं।2024 के लोकसभा चुनाव से कुछ महीने पहले नीतीश कुमार ने महागठबंधन सरकार गिरा दी और फिर से बीजेपी के साथ सरकार बना ली। राज्य में बीजेपी एनडीए में सीनियर पार्टनर है। राज्य विधानसभा में जहां भाजपा के 84

विधायक हैं, वहीं जदयू के 48 विधायक हैं। वहीं, इससे पहले बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जदयू ने अरविंद केजरीवाल के लिए दिल्ली में मुश्किलें बढ़ा दी है। पूर्वांचली वोट को लेकर हो रही लड़ाई के बीच जदयू ने साफ कह दिया है कि वह भाजपा के साथ मिलकर दिल्ली में चुनाव लड़ेगी। केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह ने कहा कि जदयू आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव एनडीए के साथ गठबंधन में लड़ेगी। उन्होंने आगे कहा कि अरविंद केजरीवाल का पूर्वांचल के लोगों के प्रति प्रेम बढ़ता जा रहा है। असल में वह पाखंडी और अवसरवादी हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने पूर्वांचल और बिहार के लोगों के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया। अरविंद केजरीवाल ने रोहिंग्या को पूर्वांचल के लोगों से जोड़ा। उन्होंने करहा कि कोरोना के दौरान अरविंद केजरीवाल ने लाखों लोगों को भेजा नोएडा सीमा पर और बिहार के लोगों के लिए एक भी शिविर नहीं लगाया। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि हम अरविंद केजरीवाल को बेनकाब करेंगे।

घोषणाएं करने, फीता काटने, दीया जलाने में माहिर थीं कांग्रेस सरकारें, MP में बोले पीएम मोदी

एजेंसी

नई दिल्ली: पीएम नरेंद्र मोदी ने खजुराहो में केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना और अन्य विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी। अपने संबोधन की शुरूआत में मोदी ने कहा कि आज पूरे विश्व में क्रिसमस की धूम है। मैं देश और दुनिया भर में उपस्थित ईसाई समुदाय को क्रिसमस की ढेर सारी बधाई देता हूं। उन्होंने कहा कि मोहन यादव जी के नेतृत्व में बनी भाजपा सरकार का एक साल पूरा हुआ है। मध्य प्रदेश के लोगों को, भाजपा के कार्यकताओं को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इस एक वर्ष में मध्य प्रदेश में विकास को नई गति मिली है। आज भी यहां हजारों करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं की शुरूआत हुई है।मोदी ने कहा कि आज ऐतिहासिक केन बेतवा लिंक परियोजना का शिलान्यास भी हुआ है। ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सोलर प्लांट का भी लोकार्पण हुआ है और ये मध्य प्रदेश का पहला फ्लोटिंग सोलर प्लांट है। मैं इन परियोजनाओं

मोदी ने कहा कि आज ऐतिहासिक केन बेतवा लिंक परियोजना का शिलान्यास भी हुआ है। ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सोलर प्लांट का भी लोकार्पण हुआ है

के लिए मध्य प्रदेश को ढेर सारी बधाई देता हूं। उन्होंने कहा कि आज श्रद्धेय अटल जी की जन्मजयंती है। आज भारत रत्न अटल जी के जन्म के सौ साल हो रहे हैं। अटल जी की जयंती का ये पर्व, सुशासन की हमारी प्रेरणा का भी पर्व है।विपक्ष पर वार करते हुए उन्होंने कहा कि अतीत में कांग्रेस सरकारें, घोषणाएं करने में माहिर हुआ करती थीं। घोषणाएं करना, फीता काटना, दीया जलाना, अखबार में तस्वीर छपवा देना... उनका (कांग्रेस) काम वहीं पूरा हो जाता था ।

नीतीश ने 200 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया

एजेंसी

पटना : बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंगलवार को पूर्वी चंपारण जिले में 201.12 करोड़ रुपये की कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। कुमार ने अपनी प्रगति यात्रा के दूसरे दिन मंगलवार को केसरिया विधानसभा क्षेत्र के सुंदरपुर गांव का दौरा किया और विभिन्न योजनाओं की डिजिटल माध्यम से आधारशिला रखी।मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) की ओर से जारी बयान के मुताबिक, कुमार ने सुंदरपुर में एक सरकारी स्कूल के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया। कुमार ने जल-जीवन-हरियाली योजना के तहत निर्मित एक तालाब का प्रबंधन भी जीविका परियोजना के तहत स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं ह्यजीविका दीदियों को सौंपा। उन्होंने 1,26,354 जीविका दीदियों को 3.35 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता के प्रतीकात्मक चेक वितरित किए।मुख्यमंत्री ने पूर्वी चंपारण जिले के मजुराहा में धनौती नदी और इब्राहिमपुर क्षेत्र में बूढ़ी गंडक नदी पर दो पुलों के तत्काल निर्माण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया।इसके अलावा मुख्यमंत्री ने पर्यटन विभाग के अधिकारियों को अरेराज क्षेत्र में पुराने समेश्वरनाथ मंदिर के विकास पर ध्यान देने को कहा।

मांग किससे रहे हैं, सरकार एनडीए की है; नीतीश के लिए भारत रत्न मांगने पर गिरिराज से बोली आरजेडी

एजेंसी

पटना: केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह द्वारा बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को भारत रत्न देने की मांग पर राजनीतिक पारा गर्मा गया है। विपक्षी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) ने इस मांग को हास्यास्पद बताया है। आरजेडी के प्रवक्ता मृत्युंजय कुमार ने कहा कि केंद्र में एनडीए की सरकार है, तो गिरिराज किससे नीतीश के लिए भारत रत्न मांग रहे हैं। भारत रत्न ही क्यों, नोबल पुरस्कार की मांग भी कर लें। आरजेडी ने दावा किया कि यह एक ड्रामा है जो सिर्फ विधानसभा चुनाव तक चलेगा। इसके बाद नीतीश को महाराष्ट्र जैसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा।इससे पहले केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने

बुधवार को बेगूसराय में मीडिया से बातचीत में नीतीश और ओडिशा के पूर्व सीएम नवीन पटनायक को भारत रत्न देने की मांग की। गिरिराज ने कहा कि नीतीश के सत्ता में आने से पहले बिहार खस्ताहाल सड़कों, जर्जर स्कूलों और इमारतों के लिए जाना जाता था। नीतीश ने बिहार को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। उनके जैसे नेता को भारत रत्न जैसा सर्वोच्च सम्मान देना चाहिए।गिरिराज का यह बयान ऐसे समय में आया है जब आरजेडी ने आरोप लगाया है कि बीजेपी नीतीश को कंट्रोल कर रही है। पूर्व डिप्टी सीएम सह आरजेडी नेता तेजस्वी प्रसाद यादव ने मंगलवार रात को ही कहा था कि बीजेपी ने सीएमओ (मुख्यमंत्री कार्यालय) को अपने नियंत्रण में कर लिया है। नीतीश के चार करीबी नेता जिनमें से दो दिल्ली में हैं, वे बीजेपी के संपर्क में हैं। उन्होंने बिहार में अमित शाह का कंट्रोल होने का आरोप भी लगाया।

प्रवेश वर्मा को अपना सीएम चेहरा घोषित करने जा रही भाजपा, दिल्ली चुनाव से पहले केजरीवाल का बड़ा दावा

एजेंसी

नई दिल्ली: आम आदमी पार्टी (आप) प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने आज (25 दिसंबर) दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए परवेश वर्मा को अपना मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करने की योजना बना रही है। केजरीवाल ने एक्स पर पोस्ट किया कि सूत्रों के मुताबिक, बीजेपी प्रवेश वर्मा को अपना सीएम चेहरा घोषित करने जा रही है। क्या दिल्ली की जनता ऐसे व्यक्ति को अपना सीएम बनाना चाहेगी ?एक अन्य पोस्ट में केजरीवाल

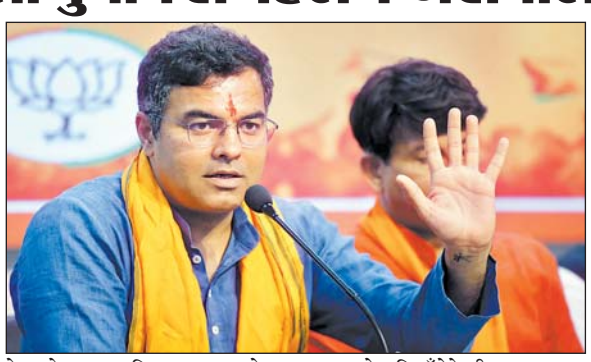

ने आरोप लगाया कि एक भाजपा नेता मतदाताओं को पैसे बांटते हुए पकड़ा गया। उन्होंने आगे लिखा कि अगर दस साल मुझे गालियाँ देने की बजाय जनता के लिए कुछ काम करते तो आज चुनाव में इस तरह वोट खरीदने की जरूरत ना पड़ती। केजरीवाल ने लिखा कि ये लोग हर वोटर को 1100 रुपए दे रहे हैं और कह रहे हैं कि उनकी पार्टी को वोट देना। ये आप जरूरतमंदों की मदद कर रहे हो या खुलेआम वोट खरीद रहे हो? आपके पिताजी को आज शर्म आ रही होगी आप जैसे देशद्रोही बेटे पर।उन्होंने पोस्ट में लिखा कि ये कह रहा है कि उसके घर से कोई महिला खाली हाथ नहीं जाएगी। आज से पूरी दिल्ली की महिलाएं उसके घर जाकर पैसे ले आयें। उन्होंने कहा कि ये लोग चुनाव नहीं लड़ते, बस बेईमानी करते हैं।

ओबीसी कोटे पर फैसला होने के बाद महाराष्ट्र निकाय चुनाव अप्रैल 2025 तक हो सकते हैं : बावनकुले

एजेंसी

नागपुर । महाराष्ट्र के मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा कि अगर उच्चतम न्यायालय जनवरी के पहले सप्ताह में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) आरक्षण पर अपना फैसला दे देता है तो राज्य में स्थानीय निकायों के लंबित चुनाव मार्च-अप्रैल 2025 में होंगे। बावनकुले ने यहां आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि ओबीसी के लिए कोटे पर सुनवाई जनवरी के पहले सप्ताह में शीर्ष अदालत में सूचीबद्ध है। राजस्व मंत्री ने कहा, ह्यह्यराज्य चुनाव आयोग

चुनाव कराएगा और राज्य सरकार पूरी सहायता प्रदान करेगी।बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) सहित अधिकांश नगर निगमों और राज्य के अन्य स्थानीय निकायों का पांच साल का कार्यकाल 2022 में समाप्त हो रहा है। उच्चतम न्यायालय ने दिसंबर 2021 में फैसला दिया था कि स्थानीय निकायों में ओबीसी के लिए आरक्षण की अनुमति तब तक नहीं दी जाएगी जब तक कि सरकार शीर्ष अदालत के 2010 के आदेश में निर्धारित ह्यतीन कसौटियोंह्ल को पूरा नहीं करती। तीन कसौटियों के लिए राज्य सरकार को प्रत्येक स्थानीय निकाय में ओबीसी के पिछड़ेपन पर आंकड़े एकत्र करने के लिए एक समर्पित आयोग स्थापित करने की आवश्यकता थी।

मानसिक बीमार लोग बिहार चला रहे हैं; बीपीएससी अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज से भड़के तेजस्वी यादव

एजेंसी

पटना: पटना में बीपीएससी अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज के मुद्दे पर बिहार का सियासी पारा गर्मा गया है। पूर्व डिप्टी सीएम और राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के नेता तेजस्वी यादव ने नीतीश सरकार पर जमकर हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि बिहार को मानसिक रूप से बीमार लोग चला रहे हैं, उन्हें खोज-खबर नहीं है कि प्रदेश में क्या हो रहा है। तेजस्वी ने कहा कि बीजेपी ने बिहार में गुंडागर्दी की सीमा पार कर दी है। उन्होंने सीएम नीतीश कुमार को भी आड़े हाथों लेते हुए कहा कि मुख्यमंत्री खुद को जेपी (जय प्रकाश नारायण) का चेला बताते हैं, लेकिन छात्रों के लोकतांत्रिक विरोध से उन्हें नफरत है। उन्होंने एनडीए के नेताओं का स्वार्थी करार दिया।बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने बुधवार को सोशल मीडिया पर एक के बाद एक कई पोस्ट किए। उन्होंने पटना में हुए बीपीएससी अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज के कई वीडियो शेयर किए। तेजस्वी ने बिहार सरकार पर भड़कते हुए कहा कि चंद माह पूर्व तक ठउऊ के नेता नीतीश कुमार को किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित बता उन्हें मानसिक रूप से अस्वस्थ बताते नहीं थकते थे। अब वही बीजेपी, एलजेपी और हम के नेता उनके तानाशाही निर्णयों को शिरोधार्य कर बीपीएससी परीक्षार्थियों को पुलिस से पिटवाकर इसे उचित ठहरा रहे हैं।

सीएम सिद्धारमैया के नाम पर सड़क का नाम, भाजपा बोली-

यह मैसूर की समृद्ध विरासत का अपमान

एजेंसी

दिल्ली: मैसूरु में एक सड़क का नाम कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के नाम पर रखने से एक नया विवाद खड़ा हो गया है। विपक्ष ने इस कदम के लिए अधिकारियों पर हमला बोला है। जनता दल (सेक्युलर) पार्टी और भाजपा ने इसे कर्नाटक के लोगों के साथ 'विश्वासघात और अपमान' बताया और फैसले को वापस लेने की मांग की। हेरिटेज शहर के नागरिक निकाय, मैसूर सिटी कॉर्पोरेशन ने मेटागल्ली में श्री लक्ष्मी वेंकटरमण स्वामी मंदिर सर्कल और रॉयल इन जंक्शन के बीच के हिस्से का नाम बदलकर सिद्धारमैया आरोग्य मार्ग करने का प्रस्ताव रखा और इस कदम पर सार्वजनिक सुझाव भी आमंत्रित किए गए।कुछ रिपोर्टों से पता चलता है कि यह चामराजा विधायक हरीश गौड़ा थे जिन्होंने सबसे पहले सड़क के लिए सिद्धारमैया के नाम

की सिफारिश की थी। जेडीएस ने सवाल किया कि एमसीसी कैसे सड़क का नाम सिद्धारमैया के नाम पर रख सकती है, जो मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) घोटाले में आरोपी हैं और जांच का सामना कर रहे हैं। जेडीएस ने कहा कि मैसूर महानगर निगम में कोई निर्वाचित बोर्ड नहीं है। कांग्रेस सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारियों ने अपना कर्ज चुकाने के लिए सड़क का नाम सिद्धारमैया के नाम पर रखने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री के नाम पर एक सड़क का नाम रखना न केवल ऐतिहासिक शहर मैसूर बल्कि पूरे राज्य के साथ विश्वासघात और अपमान है। कर्नाटक सरकार द्वारा मैसूरु में एक सड़क का नाम बदलकर सीएम सिद्धारमैया के नाम पर करने के प्रस्ताव की रिपोर्ट पर बीजेपी नेता शहजाद पूनावाला ने कहा कि कांग्रेस का एकमात्र उद्देश्य हर चीज का नाम टीपू सुल्तान या सिद्धारमैया के नाम पर रखना है...वे मैसूर के लोगों को क्या संदेश देना चाह रहे हैं? सिद्धारमैया ने उनकी जमीनें हड़प लीं, आरोपी नंबर बन गए। टवउऊ घोटाले में 1, और अब एक सड़क का नाम उसके नाम पर रखा जा रहा है। यह मैसूर की समृद्ध विरासत का अपमान है।टवउऊ घोटाला मामले पर विधानसभा में चर्चा कराने की मांग उठी है और पिछले हफ्ते विधानसभा सत्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तीखी नोकझोंक देखने को मिली थी। कांग्रेस नेता बीके हरिप्रसाद ने टवउऊ घोटाले पर बीजेपी अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र की मांगों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और उनसे उन जमीनों के बारे में भी बोलने को कहा जो कथित तौर पर पिछली बीजेपी सरकार के दौरान आरएसएस को आवंटित की गई थीं।

अटल जन्म शताब्दी वर्ष समारोह एवं सुशासन दिवस पर भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय के सभागर में मनाई गई

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

अटल जन्म शताब्दी वर्ष समारोह एवं सुशासन दिवस पर भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय के सभागर में मनाई गई भारत रत्न प्रख्यात कवि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की जयंती एवं सुशासन दिवस कार्यक्रम पार्टी के जिला अध्यक्ष शंकर झा के अध्यक्षता एवं कार्यक्रम के जिला संयोजक जन्मेजय सिंह के संचालन में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मधुबनी लोकसभा के सांसद डॉक्टर अशोक यादव के गरिमामई उपस्थिति में अटल जी के चित्र पर पुष्पांजलि का कार्यक्रम से शुरूआत की गई कार्यक्रम में पधारे खजौली के विधायक अरुण शंकर प्रसाद विधान परिषद सदस्य उत्तर बिहार के प्रांतीय सहसंयोजक घनश्याम ठाकुर मधुबनी के मेयर अरुण राय पूर्व जिला अध्यक्ष भोगेन्द्र ठाकुर पूर्व बिहार प्रदेश उपाध्यक्ष मृत्युंजय झा किसान मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष हितेंद्र नारायण ठाकुर जिला महामंत्री देवेंद्र यादव प्रमोद सिंह कार्यक्रम के सह संयोजक आईटी सेल जिला संयोजक राजीव झा प्रशांत ठाकुर अजय प्रसाद इन सभी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी को पुष्पांजलि करते हुए दीप जलाकर कार्यक्रम का विधवत शुरूआत किया अटल जी के जीवन चरित्र पर बोलते हुए कार्यक्रम का मुख्य अतिथि सांसद डॉक्टर अशोक यादव ने बताया कि अटल जी ऐसे राजनेता के रूप में अजर अमर हो गए जिनका ना कोई जोर पहले था ना कोई भारतीय राजनीति में आगे होगा अटल जी ने भारतीय राजनीति में सुचिता सौम्याता सरलता और समरस समाज की स्थापना कैसे हो इस बात पर हमेशा से जोर देने का कार्य किया चाहे गीत का क्षेत्र हो काव्य पाठ का क्षेत्र हो वकालत का क्षेत्र हो देश का विकास हो इन सभी कार्यों में अटल जी इकलौते राजनेता हुए अटल बिहारी वाजपेई आज भी भाजपा के एक-एक कार्यकताओं के हृदय में जीवित है अटल जी को याद करते हुए जिला अध्यक्ष शंकर झा ने बताया कि सन 1982 में अटल जी मधुबनी आए थे तत्कालीन जिला अध्यक्ष प्रो गंगाराम झा के द्वारा जन सहयोग से अर्जित सीकों से अटल जी को तोलने का कार्यक्रम तय किया गया हम सभी ने मिलकर अटल जी के वजन के बराबर सिक्कों से तौलते हुए वह सिक्का पार्टी फंड में दान दे दिया खजौली के विधायक अरुण शंकर प्रसाद ने अटल जी को आजाद शत्रु बताते हुए कहा कि राजनीति के क्षेत्र में एकमात्र आजाद शत्रु हुए और वह अटल बिहारी वाजपेई हुए विधान परिषद सदस्य घनश्याम ठाकुर ने अटल जी को याद करते हुए बताया कि हर वर्ग हर राज्य हर क्षेत्र को विकास के लिए संकल्पित प्रधानमंत्री अटल जी एकमात्र अटल हुए मेयर अरुण राय ने बताया कि आज अत्यधिक खुशी हो रही है कि वे अटल जी के पार्टी का सदस्य हैं कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मृत्युंजय झा ने बताया की अपनी कविताओं से पत्थरों में जान फूंक देने वाले अटल बिहारी वाजपेई आज भी स्मृतियों में हम सभी के हृदय में जीवित हैं कार्यक्रम में जिला उपाध्यक्ष प्रभाशु झा प्रमिला पूर्व राधा देवी युवा मोर्चा अध्यक्ष अशोक कुशवाहा महिला मोर्चा अध्यक्ष पूनम मलिक संजीव बदल सुबोध चौधरी पिंटू नोनियार कन्हैया कुमार मनोज कुमार मुन्ना सुनील मिश्रा विनोद प्रसाद अरुण कांत झा दीपक कल्याण शंभू झा प्रतिमा रंजन मीनाक्षी श्रीवास्तव श्रवण पुर्वे वरुण लाल दास सभी मंडलों के नवनियुक्त मंडल अध्यक्ष के साथ सैकड़ो कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी शामिल हुए सुशासन दिवस कार्यक्रम को पूरे जिले में 22 स्थान पर मनाया गया

पूर्व राज्यपाल के मुहिम को आगे बढ़ाएंगे बिहार के नए राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान- मनोज शर्मा

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना 25 दिसंबर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता और पूर्व विधायक श्री मनोज शर्मा ने बिहार के नवनियुक्त महामहिम राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान को बधाई दी है। उन्होंने शुभकामनाएं देते हुए कहा है कि बिहार में महामहिम राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान एक सफल प्रशासक साबित होंगे, अब तक जहां भी, जिस पद पर भी वह रहे, उन्होंने राजनीतिक सुचिता का पूरी तरह से पालन किया है. माननीय वर्तमान राज्यपाल संविधान के तमाम पहलुओं पर बहुत ही स्पष्ट राय रखते हैं. वह एक प्रगतिशील इंसान होने के साथ-साथ एक राष्ट्रवादी व्यक्ति भी है. इन्होंने कभी भी अपनी मानवीय मूल्यों के साथ समझौता नहीं किया है. इन्होंने पद छोड़ना मुनासिब समझा है जबकि, चाहते तो सत्ता में शीर्ष पद पा सकते थे। श्री शर्मा ने बिहार के पूर्व राज्यपाल महामहिम श्री राजेन्द्र वी आर्लेकर की भी प्रशासनिक कुशलता की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि श्री आर्लेकर एक सुलझे हुए व्यक्ति के साथ साथ बिहार के लिए एक बेहतर प्रशासक साबित हुए। केंद्र सरकार ऐसे कुशल और दक्ष नीतिनिर्धारकों से अलग अलग राज्यों में सेवा लेती रही है। बिहार से श्री आर्लेकर जी के जाने का दुख तो हैं ही लेकिन, श्री आरिफ मोहम्मद खान जी के आने की खुशी भी है। श्री आर्लेकर ने अपने अल्पसमय में बिहार के शैक्षणिक व्यवस्था और अपने स्तर के प्रशासनिक व्यवस्था को दुरुस्त करने की जो मुहिम छेड़ी थी, उसे माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान अपनी कुशल नेतृत्व के साथ पूरा करेंगे। श्री आर्लेकर जी के जाने से जो राजभवन में खालीपन आया है, उसे श्री आरिफ जी अपनी क्षमता, कुशलता और व्यवहारिता से भरेंगे। भाजपा प्रवक्ता ने आगे कहा कि 2010 के बेस्टसेलर बुक टेक्स्ट एन्ड कॉन्टेक्स्ट कुरान एन्ड कंटेंपरेरी चैलेंजेस के लेखक महामहिम श्री आरिफ मोहम्मद खान अपने निजी जीवन और सार्वजनिक जीवन में बहुत ही स्पष्टवादी रहे हैं। उन्होंने स्पष्टता के साथ राजनीति की है।

भाजपा प्रदेश कार्यालय में पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जन्मशताब्दी समारोह आयोजित, किया गया नमन,

संवाददाता
मोहम्मद आरीफ

- श्रद्धेय वाजपेयी जी की कृति और कृतित्व पर लगाई गई फोटो प्रदर्शनी, काव्यांजलि का भी किया गया आयोजन
- अटल बिहारी वाजपेयी जी ने भारतीय राजनीति में उच्च आदर्शों, सादगी और नैतिक मूल्यों को स्थापित किया :डॉ. दिलीप जायसवाल
- श्रद्धेय वाजपेयी के 'राजनीति में मतभेद हो सकते हैं, मनभेद नहीं' मंत्र ने लोकतंत्र की गरिमा को बढ़ाया : डॉ. दिलीप जायसवाल
- श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी ने देश के भविष्य की चिंता की : सम्राट चौधरी
- श्रद्धेय वाजपेयी ने राजनीति में अमिट छाप छोड़ी : विजय सिन्हा

पटना, 25 दिसंबर। भाजपा प्रदेश कार्यालय में आज पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के मौके पर अटल बिहार जन्मशताब्दी समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान पूर्व प्रधानमंत्री को नमन किया गया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस समारोह में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल, उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उपमुख्यमन्त्री विजय कुमार सिन्हा, पटना के सांसद रविशंकर प्रसाद, संगठन महामंत्री भीखूभाई दलसानिया,मंत्री हरि सहनी सहित कई वरिष्ठ लोगों ने भाग लिया। समारोह की शुरूआत में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस के उपरांत दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह की शुरूआत की गई।

इस मौके पर भाजपा अध्यक्ष डॉ. जायसवाल ने कहा कि 25 दिसंबर का दिन भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। यह दिन भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के रूप में मनाया जाता है। अटल बिहारी वाजपेयी का जीवन, उनकी विचारधारा और उनकी नेतृत्व क्षमता न केवल भारतीय जनता पार्टी बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

इस अवसर पर डॉ. दिलीप जायसवाल ने कहा , "अटल बिहारी वजपेयी केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि एक युगद्दष्टा थे। उन्होंने भारतीय राजनीति में उच्च आदर्शों, सादगी और नैतिक मूल्यों को स्थापित किया। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि कैसे कठिन परिस्थितियों में भी सकारात्मकता और धैर्य के साथ राष्ट्र सेवा की जा सकती है।"

पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी के योगदान को याद करते हुए उन्होंने कहा कि उनका शासनकाल विकास और सुशासन के प्रतीक रहा। उनके प्रधानमंत्रित्व काल में भारत ने परमाणु शक्ति के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की। पोखरण परमाणु परीक्षणों के माध्यम से उन्होंने भारत को विश्व मानचित्र पर एक सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित किया।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को संवाद और सहमति के कुशल चैंपियन बताते हुए भाजपा अध्यक्ष डॉ. जायसवाल ने कहा, 'राजनीति में मतभेद हो सकते हैं, मनभेद नहीं' पूर्व प्रधानमंत्री के इस मंत्र ने लोकतंत्र की गरिमा को बढ़ाया। उन्होंने जोर देकर कहा कि उनकी नीतियां सही अर्थों में युवाओं और किसानों के प्रति समर्पण की रही। उन्होंने कहा, "अटल जी की नीतियां युवाओं और किसानों के उत्थान के लिए समर्पित थीं। उन्होंने ग्रामीण विकास, कनेक्टिविटी, और शिक्षा के क्षेत्र में कई क्रांतिकारी कदम उठाए।

भाजपा अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल ने युवाओं से विशेष रूप से आह्वान करते हुए कहा कि वाजपेयी ने युवाओं को देश का भविष्य माना। उनकी जयंती पर हम संकल्प लें कि उनकी शिक्षाओं और आदर्शों को आत्मसात करेंगे। उनके सपनों का आत्मनिर्भर और सशक्त भारत बनाने में अपना योगदान देंगे।

डॉ. प्रेम कुमार ने अटल जी के योगदान को किया याद, बताया राष्ट्र निर्माण में उनका अतुलनीय योगदान

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

- अटल जी की कविताएं और आदर्श आज भी देती हैं नई प्रेरणा।
- भाजपा राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के नेतृत्व में पटना में आयोजित हुआ कार्यक्रम।

बिहार भाजपा के वरीय नेता और सहकारिता सह पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने पटना के दरोगा राय पथ में आयोजित एक भव्य समारोह में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेई जी की 100वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर उन्होंने कहा कि अटल जी के आदर्श और योगदान राष्ट्र के हर नागरिक के लिए प्रेरणास्रोत हैं।डॉ. प्रेम कुमार ने अटल जी के अद्वितीय नेतृत्व का स्मरण करते हुए उनके बहुमूल्य योगदानों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "चाहे परमाणु परीक्षण की बात हो, स्वर्णिम चतुर्भुज योजना, या शिक्षा के क्षेत्र में सर्व शिक्षा अभियान, अटल जी ने हर क्षेत्र में देश को नई दिशा दी। उनका वाक्य, 'सरकारें आएंगी, जाएंगी, मगर यह देश रहना चाहिए', आज भी हर भारतीय के मन में गूंजता है।कार्यक्रम में अटल जी की कविताओं का भी पाठ किया गया, जिसमें "हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा" विशेष रूप से उल्लेखित रही।

इस अवसर पर भाजपा राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के सहसंयोजक शिवपूजन राम, चंद्रवंशी उमेश सिंह, और सैकड़ों कार्यकताओं ने अटल जी के आदर्शों को स्मरण किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री रण विजय रोशन सहित अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का समापन डॉ. प्रेम कुमार के भावुक संबोधन और अटल जी को समर्पित पुष्पांजलि के साथ हुआ। उन्होंने कहा, "अटल जी जैसे व्यक्तित्व को शब्दों में समेटना असंभव है। उनके आदर्श और विचारधारा हमें सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

सम्राट चौधरी ने पशुपतिनाथ धाम से बैजनाथ धाम तक नए एक्सप्रेस-वे की मांग की

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

- केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडगरी को लिखा पत्र
- नए एक्सप्रेस-वे से बिहार में बढेगा सांस्कृतिक पर्यटन, आर्थिक विकास तेज होगा

पटना। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडगरी को पत्र लिखकर पशुपतिनाथ धाम (नेपाल) से बैद्यनाथ धाम (देवघर - झारखंड) तक नया एक्सप्रेस-वे बनाने की मांग की ।

श्री चौधरी ने पत्र में लिखा कि चूंकि बड़ी संख्या में तीर्थयात्री गंगा नदी से जल लेकर सुल्तानगंज से बैजनाथ धाम तक पैदल यात्रा करते हैं, इसलिए इस एक्सप्रेस-वे के दोनों ओर केवल नंगे पैर यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों/श्रद्धालुओं के लिए सर्विस रोड का निर्माण किया जाए।

उन्होंने कहा कि शिव-भक्त श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पशुपतिनाथ (नेपाल) से बैजनाथ धाम (देवघर झारखंड) तक ग्रीनफील्ड एलाइनमेंट का निर्माण प्रस्तावित है, जो भीमनगर, बीरपुर, पसराहा, अगुआनीघाट सुल्तानगंज-कटोरिया, चानन से होकर गुजरेगा। श्री चौधरी ने बताया कि इस एलाइनमेंट में सुल्तानगंज-अगुआनीघाट में गंगा नदी पर पुल का निर्माण पहले से ही चल रहा है, जिससे होकर प्रस्तावित एक्सप्रेस-वे गुजरेगा। उन्होंने कहा कि रक्सौल से हल्दिया तथा दरभंगा से अमस तक एक्सप्रेस-वे का निर्माण पहले ही शुरू किया जा चुका हैं। अब पशुपतिनाथ धाम से बैजनाथ धाम तक प्रस्तावित इस नए एक्सप्रेस-वे के निर्माण के बाद बिहार में पर्यटकों की आमद बढ़ेगी, जिससे निश्चित रूप से बिहार के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था में भी वृद्धि होगी।

भारत रत्न प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100 वीं जयंती मनाई गई

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के ताजपुर प्रखंड क्षेत्र के मानपुरा पंचायत अंतर्गत भाजपा पंचायत अध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार की अध्यक्षता में बुधवार को भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेजी की 100 वीं जयंती मनाई गई। इस दौरान प्रखंड क्षेत्र के सैंकड़ो भाजपा कार्यकताओं ने अटल को श्रद्धांजलि अर्पित की है। इस दौरान अध्यक्ष ने कहा कि, धूल और धुएँ की बस्ती में पले एक साधारण अध्यापक के पुत्र अटल बिहारी वाजपेयी दुनियां के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानमंत्री बने थे। अपनी प्रतिभा, नेतृत्व क्षमता और लोकप्रियता के कारण वे चार दशकों से भी अधिक समय से भारतीय संसद के सांसद रहे थे। उनमें मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम की संकल्पशक्ति, भगवान श्रीकृष्ण की राजनीतिक कुशलता और आचार्य चाणक्य की निश्चयात्मिका बुद्धि था। वे अपने जीवन का क्षण - क्षण और शरीर का कण - कण राष्ट्रसेवा के यज्ञ में अर्पित कर दिए। उनका तो उदघोष था - हम जिएँगे तो देश के लिए, मरेंगे तो देश के ? लिए। इस पावन धरती का कंकड़ कंकड़ में शंकर है, बिन्दु - बिन्दु गंगाजल है। उन्होंने कहा था भारत के लिए हँसते - हँसते प्राण न्योछावर करने में गौरव और गर्व का अनुभव करूँगा। उनके इस न्योछावर को आज देश याद कर रहा है। जयंती समारोह में मंडल अध्यक्ष संतोष कुमार, प्रदेश प्रवक्ता ओबीसी मोर्चा कृष्ण मोहन गुप्ता, प्रदेश के नेता सुरेश साह, शक्ति केंद्र प्रमुख धर्मेंद्र कुमार साह, राजा कुमार, धन्नू राय, महामंत्री मुकेश पासवान, अशोक नायक, ओबीसी मोर्चा मंडल अध्यक्ष अशोक साह, अजय कुमार सिन्हा, सुशील कुमार, मिथिलेश रजक, महेश राय, सत्येंद्र नाथ इत्यादि मौजूद थे।

राष्ट्रीय लोक मोर्चा परिवार ने मनाया पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। बुधवार को मोरवा प्रखंड के लसकारा में राष्ट्रीय लोक मोर्चा के बैनर तले जिलाध्यक्ष विनोद चौधरी निषाद के अध्यक्षता में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जयंती मनाया गया। समारोह को सबसे पहले आगत अतिथियों द्वारा केक काटकर एवं तैल चित्र पर पुष्प अर्पित कर शुरू किया गया। उनके जीवनी पर प्रकाश डालते हुए जिलाध्यक्ष श्री निषाद ने कहा की उन्होंने प्रधानमंत्री का पद तीन बार संभाला एक बार तेरह दिन दूसरी बार आठ महीने तीसरी बार में अपनी कार्यकाल पूरा किए।

महान रंगकर्मी सफदर हाशमी के शहादत सप्ताह मनाने के लिए लिया गया निर्णय

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। महान रंगकर्मी सफदर हाशमी के 37 वें शहादत को सफदर शहादत सप्ताह के रूप में मनाया जाएगा जिसमें जिले के विभिन्न हिस्सों में कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। यह निर्णय बुधवार को स्टेशन रोड स्थित उदय शंकर स्मारक भवन में जनवादी लेखक संघ, जनवादी सांस्कृतिक मोर्चा, सीटू एवं एसएफआई के जिला के पदाधिकारियों की संयुक्त बैठक में लिया गया। जनवादी सांस्कृतिक मोर्चा के जिला अध्यक्ष रामविलास सहनी की अध्यक्षता में संपन्न हुई बैठक में जनवादी लेखक संघ के जिला अध्यक्ष शाह जफर इमाम, कार्यकारी जिला सचिव डॉ अरुण अभिषेक, सीटू के जिला अध्यक्ष रघुनाथ राय, जिला सचिव मनोज कुमार गुप्ता, सांकृतिक मोर्चा के जिला सचिव चंदेश्वर राय एवं एसएफआई के जिला सचिव छोटू कुमार भारद्वाज ने हिस्सा लेकर विचार व्यक्त किया। बैठक में लिए गये निर्णय के आलोक में 2 जनवरी 2025 को स्टेशन चौक स्थित गांधी परिसर में 5 जनवरी 2025 को स्टेशन रोड स्थित उदय शंकर भवन में 7 जनवरी 2025 को उजियारपुर के गावपुर योगी चौक पर तथा 8 जनवरी 2025 को विभूतिपुर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। विदित हो कि 1 जनवरी 1989 को दिल्ली के साहिबाबाद में हल्ला बोल नुक्कड़ नाटक करते समय महान रंगकर्मी सफदर हाशमी और उसके साथियों पर जानलेवा हमला किया गया था और 2 जनवरी 1989 को सफदर की मौत हो गई। उसके बाद लगातार देश के वामपंथी, प्रगतिशील एवं जनवादी संगठनों द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में सफदर की शहादत को याद करने के लिए प्रत्येक वर्ष विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। बैठक में उपस्थित विभिन्न जन संगठनों के पदाधिकारियों ने सभी वामपंथी, जनवादी एवं प्रगतिशील मूल्यों और विचारों में विश्वास रखने वाले लोगों से अपील की है कि उक्त कार्यक्रम में शामिल होकर सफदर की शहादत और उसकी विरासत को जिंदा रखते हुए एक बेहतर निर्माण के आंदोलन में सहयोग करें।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर महिला क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित,

पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल

खेल हमारे सर्वांगीण विकास के लिए बहुत ही बेहतरीन टॉनिक : डॉ. दिलीप जायसवाल

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना, 25 दिसंबर। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्मजयंती के अवसर पर मोइन-उल-हक स्टेडियम पटना में महिला क्रिकेट प्रतियोगिता 2024 का आयोजन किया गया। भारतीय जनता पार्टी, क्रीड़ा प्रकोष्ठ बिहार प्रदेश की ओर से आयोजित पांच दिनों तक चलने वाले इस प्रतियोगिता के अंतिम दिन आज पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

इस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल उपस्थित रहे।

समारोह को संबोधित करते हुए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. जायसवाल ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी न केवल कवि हृदय सम्राट थे बल्कि वे खेल प्रेमी भी थे। उन्होंने बताया था कि खेल न केवल स्वस्थ शरीर के लिए जरूरी है मन मस्तिष्क के लिए भी जरूरी है।

उन्होंने कहा कि खेल हमारे सर्वांगीण विकास के लिए बेहतरीन टॉनिक है। खेल हमारे मानसिक कौशल को विकसित करता ही है हमारे मनोवैज्ञानिक कौशल में भी सुधार लाता है। खेल से हमें प्रेरणा, साहस, अनुशासन और एकाग्रता मिलती है। भाजपा अध्यक्ष डॉ. जायसवाल ने आगे कहा कि खेल हमारे जीवन में शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। खेल हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करते हैं।

पुरस्कार वितरण समारोह में विजेता टीम को पुरस्कृत किया गया और बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली महिला खिलाड़ियों को भी पुरस्कार प्रदान किया गया।

अटल बिहारी वाजपेयी राष्ट्रवाद के जीते जागते राष्ट्र पुरुष थे : डॉ तरुण चौधरी

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। हरपुर एलौथ स्थित भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय पर पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्रध्य अटल बिहारी वाजपेयी का 100 वां जयंती मनाई गई। जिसकी अध्यक्षता जिलाध्यक्ष उपेन्द्र कुमार कुशवाहा ने किया जबकि संचालन प्रभात कुमार ठाकुर ने किया। जयंती सुशासन दिवस के रूप में मनाया गया। इधर दीप प्रज्जवलन के बाद भाजपा नेताओं ने अटल बिहारी वाजपेयी के तैल चित्र पर पुष्पांजलि किया। अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि देते हुए मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य डॉ तरुण कुमार चौधरी ने कहा की आज हम यहाँ एक महान आत्मा के 100 वें जयंती के अवसर पर इकट्ठे हुए हैं। अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर हम उनकी अद्वितीय विरासत, उनकी राजनीतिक प्रतिभा और उनके देश के प्रति योगदान को याद करने के लिए जमा हुए हैं। वाजपेयी ने अपने जीवनकाल में कई महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं, उनके वाणी में एक अद्वितीय ओज था, जिसने लोगों को प्रेरित किया और देश के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। वे राष्ट्रवाद के जीते जागते पुरुष थे, उनके प्रधानमंत्री काल मे पाकिस्तान के खिलाफ करागिल युद्ध पर अभूतपूर्व विजय प्राप्त हुआ। उन्होंने भारत को परमाणु सम्पन्न देश बनाया। वाजपेयी ने भारतीय राजनीति में एक नये दिशा की शुरूआत की, जिसने देश के विकास को नई गति प्रदान की। उनके प्रधानमंत्र काल में प्रधानमंत्री सड़क योजना, सर्व शिक्षा अभियान, प्रारम्भ हुआ जिसने देश को विकास की नई रफ्तार देने का काम किया।भाजपा जिलाध्यक्ष उपेन्द्र कुमार कुशवाहा ने कहा कि उनकी कविताएँ और लेख देश की संस्कृति और इतिहास को दशार्ते हैं।वाजपेयी ने देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित किया, जिसने देश को एक नई दिशा दिखाई। इस अवसर पर हम वाजपेयी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनकी विरासत को आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हैं। कार्यक्रम में पूर्व जिला अध्यक्ष विजय शर्मा जिला महामंत्री कौशल कुमार पांडेय, राजीव कुमार चौधरी, प्रेम दास, जिला उपाध्यक्ष मुकेश कुमार सिंह, जिला मंत्री वीरेन्द्र यादव, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष गीतांजलि, मनीषा पांडे, मंडल अध्यक्ष दीपक सत्यार्थी, सुजय पासवान, राकेश बब्लू, भाजपा नेता प्रदीप शाह शिवे, अमित सम्राट, ललन पाठक, विशुनदेव कुशवाहा, राजू पटेल, ओम प्रकाश विट्ठू, राजेश सिंह, हेमंत मिश्रा, राजीव मिश्रा, विकास सिंह इत्यादि मौजूद थे।

चुलाई शराब के साथ एक कारोबारी गिरफ्तार

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। वारिसनगर थाना कांड संख्या 307/24 दिनांक 24 /12/ 24 धारा 30 (ए) बिहार मध्य निषेध एवं उत्पाद अधिनियम 2016 के तहत प्राथमिक अभियुक्त भोला चौधरी पिता स्वर्गीय रामचंद्र चौधरी साकिन भादो थाना वारिसनगर निवासी को चार लीटर देसी चुलाई शराब के साथ गिरफ्तार कर थाना लाया गया। इधर वारिसनगर थाना अध्यक्ष निरंजन कुमार ने कागजी प्रक्रिया के बाद कारोबारी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया

सेंट पॉल मॉडर्न स्कूल में धूमधाम से मनाया गया क्रिसमस डे, सात दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव उद्घाटन

बखरी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी श्री कुंदन ने दीप प्रज्वलित कर किया

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

बखरी (बेगुसराय) ' स्थित सेंट पॉल मॉडर्न स्कूल में बुधवार को क्रिसमस डे बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल में सात दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव का उद्घाटन भी किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रार्थना सभा से हुई, जिसमें छोटे-छोटे बच्चे सांता क्लॉज के परिधान में नजर आए और उनके द्वारा केक काटकर क्रिसमस डे का जश्न मनाया गया। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिन्हें उपस्थित अभिभावकों ने खूब सराहा।कार्यक्रम के दूसरे सत्र में वार्षिक खेल महोत्सव का भव्य उद्घाटन हुआ।इस उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री कुंदन कुमार, एस०डी०पी०ओ० बखरी, श्री रामचंद्र राम, पूर्व डी०एस०पी० बखरी, श्री धर्मेंद्र कुमार, समाजसेवी, स्कूल-निदेशक दानेश्वर यादव एवं प्राचार्य

ओ० पी० चौधरी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उद्घाटन के बाद छात्रों द्वारा विभिन्न झांकियां प्रस्तुत की गईं, जिन्हें दर्शकों ने खूब सराहा।स्कूल निदेशक दानेश्वर यादव ने अपने संबोधन में क्रिसमस डे की शुभकामनाएं दीं और कहा कि हमें ईसा मसीह के द्वारा दिए गए उपदेशों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। उन्होंने प्रेम, करुणा और भाईचारे की अहमियत पर जोर देते हुए बताया कि क्रिसमस डे का असली संदेश यही है कि हमें नफरत को छोड़कर प्रेम और सहयोग का मार्ग अपनाना चाहिए। साथ ही उन्होंने खेलकूद के महत्व को भी बताया और इस सात दिवसीय खेल महोत्सव की जानकारी दी।मुख्य अतिथि श्री कुंदन कुमार ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की। अतिथि श्री रामचंद्र राम ने भी बच्चों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, जबकि श्री धर्मेंद्र कुमार ने ईसा मसीह के उपदेशों पर प्रकाश डाला। प्राचार्य ओ० पी० चौधरी ने कहा कि क्रिसमस का असली संदेश समाज में शांति, एकता और भाईचारे को बढ़ावा देना है।उद्घाटन समारोह के बाद बच्चों के बीच बैलून ब्रेकिंग रेस और जलेबी रेस का आयोजन हुआ। बैलून ब्रेकिंग रेस में कृष्ण कुमार, विकास कुमार और साइमन्स कुमार ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं, जलेबी रेस में गौतम कुमार, आदर्श कुमार और कृष्ण कुमार ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया।कार्यक्रम को सफल बनाने में आशुतोष राज और आदर्श कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम में अजीत कुमार, सुनील कुमार, गिरीश झा, राकेश कुमार, राम कुमार, विवेक कुमार, निर्भय कुमार, रुचिका केशरी, स्वाति कुमारी, मोहिनी रस्तोगी, गीतांजलि कुमारी, अल्पना कुमारी, गीतांजलि राय, महेश कुमार, नंदनी केशरी, अमरजीत कुमार, नेहा छेत्री, रोहित कुमार आदि भी उपस्थित थे।

ग्राम रक्षा दल सह पुलिस मित्र का बैठक आयोजित

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

बखरी (बेगुसराय) ' मंगलवार को ग्राम रक्षा दल सह पुलिस मित्र की बैठक नदैल चौक स्थित आनंद कुमार शैलेश के आवास पर, अनुमंडल अध्यक्ष बखरी आनंद कुमार शैलेश की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में ग्राम रक्षा दल सह पुलिस मित्र के सदस्यों ने अपनी स्थाईकरण और समायोजन की मांग को लेकर सरकार के खिलाफ विरोध व्यक्त किया। उनका कहना था कि हम सभी सदस्य 2012 से लेकर आज तक पंचायत क्षेत्र में शांति व्यवस्था, रात्रि प्रहरी, राष्ट्रीय त्योहारों, आपदा (बाढ़, भूकंप, कोरोना जैसी महामारी) के दौरान प्रशासन की विधि-व्यवस्था में सक्रिय रूप से सहयोग कर रहे हैं, लेकिन सरकार की ओर से हमें किसी भी प्रकार का मजदूरी या मानदेय नहीं मिल रहा है।सदस्यों ने यह भी कहा कि हम लोग आर्थिक तंगी का सामना कर रहे हैं और सरकार से जल्द से जल्द मानदेय देने और स्थाईकरण की मांग कर रहे हैं, ताकि हमारे और हमारे परिवार का जीवन स्तर सुधर सके। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने उनकी मांगों को नजरअंदाज किया, तो वे आगामी विधानसभा चुनाव में वोट का बहिष्कार करेंगे।इस बैठक में आनंद कुमार शैलेश, लाल बाबू पासवान, अब्दुल वाहिद, रोशन कुमार, विकास भारती, जितेंद्र राय, अवधेश राय, अरविंद शर्मा, दीप माला कुमारी, दीपा कुमारी, सुचिता कुमारी, किरण कुमारी, सविता कुमारी, प्रभात कुमारी, बिरजू पासवान, रामकली, अमानुल्लाह समेत अन्य सदस्य उपस्थित थे।

जदयू अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की बैठक सम्पन्न

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। मुख्यमंत्री अल्पसंख्यक विकास यात्रा आज दिनांक 25 दिसंबर 2024 को समस्तीपुर लोहिया आश्रम में 1:30 बजे अपराह्न जदयू अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की बैठक जिला अध्यक्ष अताउर रहमान की अध्यक्षता में संपन्न हुई।जिसमें आगामी 25 दिसंबर से बिहार प्रदेश जनता दल यूनाइटेड द्वारा घोषित मुख्यमंत्री अल्पसंख्यक विकास यात्रा के तत्वावधान में प्रदेश अध्यक्ष अशरफ अंसारी का जिला वार कार्यक्रम में 27 दिसंबर से 29 दिसंबर तक विभिन्न प्रखंडों में भ्रमण कार्यक्रम तय किया गया है। जहां उक्त कार्यक्रम की सफलता हेतु रणनीति बनाई गई तथा प्रमुख साथियों को उक्त कार्यक्रम की अलग - अलग जिम्मेदारी दी गई। कार्यक्रम का संचालन प्रांतीय नेता ईजहार अशरफ ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉक्टर शाहिद आजाद, हाजी गिलमन अहमद, शारिक रहमान लवली, रियाज हसन, चुन्नू बाबू, सद्दाम हुसैन, मो रमजानी, दानिश कमाल, सरफराज आलम, अनवर आलम, तबरेज अंसारी, मो तोहिद अंसारी, मो रजा अहमद, अब्दुल कुद्दूस, मोहम्मद मुजम्मिल वगैरह मौजूद थे।

बखरी में नारेबाजी कर अमित शाह का किया पुतला दहन

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

बखरी बेगूसराय ' बुधवार को बखरी अंबेडकर चौक पर एससी एसटी ओबीसी मोर्चा के बैनर तले गृह मंत्री अमित शाह का पुतला दहन किया गया।इस दौरान प्रदर्शनकारी ने जमकर भड़ास निकाला तथा मनुस्मृति दहन किया' समाजवादी पार्टी जिलाध्यक्ष दिलीप केशरी ने कहा गृह मंत्री का बयान न सिर्फ हमारे महान नेता डॉ. अंबेडकर का अपमान है, बल्कि यह संविधान और समानता के अधिकारों का भी अपमान है। हम इसका विरोध करते हैं और मांग करते हैं कि अमित शाह माफी मांगें।प्रखंड प्रमुख शिवचंद्र पासवान ने कहा कि अमित शाह का बयान समाज को बांटने बाला है, उन्होंने अंबेडकर जी के विचारों को अपमानित किया है।मौके पर पूर्व मुखिया शिवनारायण राम, विपिन राम,कैलाश सदा,संजय पासवान,भवेश पासवान,भिखारी दास,पूर्व पंसस पंकज पासवान,अधिवक्ता गौरव कुमार, राटन के उपमुखिया अजीत कुमार आदि नेताओं ने गृह मंत्री अमित शाह के द्वारा संविधान निमार्ता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर पर विवादित टिप्पणी को लेकर आक्रोशित दिखे।इस विरोध प्रदर्शन के दौरान बखरी अंबेडकर चौक पर भारी संख्या में लोग एकत्रित हुए।नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि अमित शाह अपने बयान पर माफी नहीं मांगते हैं, तो इस तरह के विरोध प्रदर्शन और आंदोलन जारी रहेंगे।

टिकट जांच अभियान के दौरान बिना टिकट यात्रा के 3503 मामले पकड़े गये,

जुमार्ने के रूप में 28.02 लाख का रेल राजस्व हुआ प्राप्त

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। समस्तीपुर मंडल द्वारा बिना टिकट/उचित प्राधिकार की यात्रा पर रोकथाम के लिए लगातार अभियान चलाये जा रहे हैं ताकि बिना टिकट/उचित प्राधिकार के यात्रा करने वाले यात्रियों को निरूत्साहित किया जा सके। इसी क्रम में दिनांक 24.12.24 को समस्तीपुर मंडल के विभिन्न खण्डों पर सुबह 6 : 00 बजे से रात्रि 22 : 00 बजे तक 16 घंटे तक किला बंदी विशेष टिकट जांच अभियान चलाया गया। इस दौरान अधिकारियों की अलग - अलग टीम जिसमें लगभग 233 टिकट जाँचकर्मी एवं आरपीएफ जवान शामिल थे, के द्वारा स्टेशन एवं ट्रेनों में विशेष टिकट जांच अभियान चलाया गया जिसमें बिना टिकट/बिना उचित प्राधिकार के कुल 3503 मामलों से जुमार्ने के रूप में 28.02 लाख की राशि प्राप्त हुई।इस अभियान के दौरान मंडल के समस्तीपुर, दरभंगा, सहरसा, रक्सौल, नरकटियागंज, बापूधाम मोतिहारी, जयनगर, सीतामढ़ी आदि स्टेशनों पर मुख्य रूप से टिकट जांच की गई। इस अभियान में जंक्शन स्टेशन के सभी एफओबी प्रवेश/निकास द्वार, प्रतीक्षालय एवं प्लेटफार्मों आदि पर विशेष टिकट चेकिंग दस्ते तैनात किए गये। इस टिकट चेकिंग अभियान के परिणामस्वरूप स्टेशन के टिकट काउंटरो पर बढ़ी हुई भीड़ देखी जा रही है और यात्री उचित टिकट लेकर रेल यात्रा करने के प्रति जागरूक हो रहे हैं। विदित हो कि इस तरह के टिकट चेकिंग अभियान मंडल में आगे भी जारी रहेंगे। यात्रियों से अनुरोध है कि कभी भी बिना टिकट रेल यात्रा न करें। यह दंडनीय तो है ही, इससे रेल राजस्व की भी हानि होती है। इसलिए सदैव उचित रेल टिकट लेकर उचित श्रेणी में ही रेल यात्रा करें। ज्ञातव्य हो कि टिकटों से प्राप्त राजस्व का उपयोग यात्री सुविधा में ही किया जाता है। जितने ज्यादा लोग उचित टिकट लेकर यात्रा करने के लिए प्रेरित होंगे उतना ही रेल तथा देश विकास के पथ पर अग्रसर होगा।

देश रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100 वीं जयंती मनाई गइ

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के कल्याणपुर प्रखंड क्षेत्र के फुलहारा राम शिव दरबार ठाकुरबाड़ी में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री देश रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की 100 वीं जयंती मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व मंडल अध्यक्ष रामचंद्र ठाकुर ने की, जबकि संचालन वरिष्ठ भाजपा नेता शशि भूषण शर्मा ने की। मौके पर उपस्थित कार्यकताओं ने उनके बताये मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। वकक्ताओं में पूर्व मुखिया अनामिका देवी, श्याम नारायण शर्मा, नरेंद्र सिंह, सुदेश कुशवाहा, कृष्ण गोपाल शर्मा, सुधीर शर्मा, तेज नारायण राम, प्रवीण कुमार कन्हैया, सुरेंद्र सिंह, सुरेंद्र ठाकुर, नंदकिशोर मिश्रा, पूर्व मुखिया विजय शर्मा अवकाश प्राप्त शिक्षक वेद नारायण झा, सरोज कुमार चौधरी, मनीष कुमार शर्मा, शिवचंद्र चौधरी, दीपक कुमार गुप्ता, प्रभात कुमार सिंह उर्फ सोनू, कमोद राय, सोहन शर्मा आदि ने देश रत्न के संबंध में उनकी जीवनी पर प्रकाश डाला।

मां की ममता फिर हुई शर्मसार, कूड़े के ढ़ेर में मिली नवजात शिशु

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

बखरी बेगूसराय बखरी में मां की ममता हुई शर्मसार।कूड़े के ढ़ेर से हुई नवजात बच्ची बरामद। कलयुगी मां के द्वारा कूड़े के ढेर पर एक नवजात बच्ची को मरने के लिए फेंक दिया गया था।जिसे थाना रोड के खंडर बने प्रिया सिनेमा हॉल के पास कूड़ा कड़कट के ढेर से नवजात बच्ची को नगर परिषद के सफाई जमादार किशन मल्लिक ने इलाज कराकर अपने पास रख लिया था। बुधवार को बखरी पुलिस के सहयोग से विशिष्ट दत्तकग्रहण संस्थान तथा बाल संरक्षण इकाई बेगूसराय के सदस्यों ने नवजात बच्ची अपने साथ ले गई।बाल संरक्षण इकाई बेगूसराय के अधीक्षक वासुदेव कश्यप ने बताया कि उक्त बच्ची को बखरी एसडीपीओ कुंदन कुमार तथा थाना के सहयोग से प्राप्त करने में मदद मिली।अभियान के तहत विशिष्ट दत्तक ग्रहण संस्थान महिला

अधिकारी ऋतु सिंह, चाइल्ड होम के कोडिनेटर विपिन कुमार साह के नेतृत्व में बच्ची को सदर अस्पताल बेगूसराय में भर्ती कराया गया है। अगले दिन उक्त बच्ची को बाल संरक्षण इकाई कार्यालय लाया जाएगा।इस मौके पर बखरी थाना के एसआई पुष्पलता, कुंदन कुमार सिंह,बाल संरक्षण के रणधीर कुमार,आशीष कुमार सहित पुलिसबल आदि मौजूद थे।

अमित शाह द्वारा सांसद में दिए गये बयान से भारत देश हुआ शर्मशार : वसीम राजा

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। भारत के गृह मंत्री अमित शाह द्वारा संसद में दिए गये बयान पर प्रत्येक दिन किसी न किसी नेता घोर निंदा की खबर आ रही है। इसी कड़ी में समस्तीपुर जिले के वारिसनगर ब्लॉक के पूर्व जिला पार्षद सह जन सुराज पार्टी के राज्य अभियान समिति सदस्य वसीम राजा ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि अमित शाह द्वारा दिए गये बयान अत्यंत दुःखद, अत्यंत निंदनीय है। उन्होंने कहा कि अमित शाह को अपना बयान अविलंब वापस लेना चाहिए तथा अपने पद से त्याग पत्र दे देना चाहिए। उन्होंने कहा कि गृह मंत्री अमित शाह ने जो भीमराव अंबेडकर के खिलाफ बयान दिया उससे पूरा भारत देश शर्मशार हुआ है। अमित शाह द्वारा दिए गये अहंकारी बयान ने पूरे मुल्क को झकझोड़ कर रख दिया है, जो देश के लोग उन्हें कभी माफ नहीं करेंगे। वसीम राजा ने कहा कि भीमराव अंबेडकर ही देश के भगवान हैं। उन्हीं के द्वारा बनाए गये संविधान बनाए जाने पर हमारा देश चल रहा है। उन्होंने कहा है कि भारत के प्रधानमंत्री ने किस प्रकार ऐसे अहंकारी लोगों को अपने मंत्री मंडल में शामिल किए हुए हैं। प्रधानमंत्री ऐसे लोगों को तुरंत मंत्री मंडल से हटा देना चाहिए। यह लोग देश में हिंदू मुस्लिम करके देश को कमजोड़ कर दिया। उन्होंने कहा कि इनके जुबान पर हमेशा नफरत करने की बात सामने आती रहती है। यह भारत देश के हित के लिए नहीं है।

किया गया रक्तदान शिविर का आयोजन

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। ब्लड फोर्स टीम के द्वारा समस्तीपुर के चर्चित समाजसेवी रविन्द्र खत्री और रोहन सिंह के जन्मदिन पर जनकल्याण हेतु स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। ब्लड फोर्स टीम के संस्थापक राहुल श्रीवास्तव का एक ही संकल्प है कि आओ मिलकर करे एक ऐसे युग का निर्माण। जहाँ रक्त की कमी से न जाए किसी का भी जान, इसी उद्देश्य के साथ ब्लड फोर्स टीम परिवार ने हर रक्तवीर योद्धा हमेशा की तरह इस बार भी स्वैच्छिक शिविर में अपना अपना योगदान दिए। रक्तदान करने वालों में सौरभ सुमन, राम सुरेश पाठक, दिव्यांशु शेखर, आनंद कुमार शर्मा, योगेंद्र पासवान, अभिषेक गुप्ता, पारितोष कुमार रजक, पूजा अरोड़ा, आदित्य कुमार, कृष्ण मुरारी, विक्रम कुमार मिश्रा, श्रवण कुमार, नन्द किशोर कुशवाहा, कन्हैया कुमार, प्रेम कुमार, रविन्द्र खत्री, विपुलांश शेखर, अभिषेक कुमार, अंकित कुमार, शुभम कुमार भारद्वाज, सोनू कुमार, अंजना शर्मा, खुशबू कुमारी, दीपक कुमार, अभिलाषा शर्मा समेत 25 लोग शामिल थे। टीम के द्वारा सभी रक्तवीरो को सम्मान स्वरूप हॉट & कुल बॉटल और रक्तवीर सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया। मौके पर टीम के कोर मेंबर नीतीश बरनवाल, राहुल यादव, योगेंद्र कुमार, रवि कुमार इत्यादि सदस्य उपस्थित थे।

मोटरसाइकिल के ठोकर से महिला जख्मी

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के कल्याणपुर थाना क्षेत्र के भारतीय स्टेट बैंक के समीप समस्तीपुर - दरभंगा मुख्य सड़क पर एक बाइक सवार ने पैदल जा रही महिला को ठोकर मार दिया जिसमें महिला गंभीर रूप से घायल हो गयी। जिसे स्थानीय लोगों ने इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया। घायल महिला की पहचान अजना पंचायत के फुलहारा गांव के स्वर्गीय अशर्फी पंडित की 70 वर्षीय पत्नी सोनिया देवी के रूप में की गई है। जहां से डाक्टर ने गंभीर स्थिति देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल समस्तीपुर रेफर कर दिया। इसकी जानकारी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर हैदर ने दी है।

घर में एक लाख से अधिक की चोरी

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के कल्याणपुर थाना क्षेत्र के पुरुषोत्तमपुर पंचायत के वार्ड संख्या 02 में अज्ञात चोरों ने एक लाख से अधिक की आभूषण सहित नकदी की चोरी कर फरार हो गये। मामले में ग्रामीणों के अनुसार अलाउद्दीन के घर में मंगलवार की रात अज्ञात चोरों के द्वारा गेट खोल लिया गया। दरवाजे के गेट खोलकर घर में प्रवेश कर गया। चोरो ने गोदरेज में रखे लाखों रुपये की आभूषण सहित नकदी पर हाथ साफ कर लिया। इस संबंध में थानाध्यक्ष राकेश कुमार शर्मा ने बताया कि सूचना मिली है, पीड़ित द्वारा आवेदन देने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। वहीं इस मामले में पुलिस पदाधिकारी तहकीकात में जुट गये हैं।

गुंडागर्दी छोड़ बीपीएससी अभ्यर्थियों से सरकार करे बात: राजेश राठौड़

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना. बुधवार, 25 दिसंबर, 2024बीपीएससी के धरनारत अभ्यर्थियों के ऊपर किए गए लाठीचार्ज पर बिहार कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने सरकार की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि लाठी गोली से सरकार अभ्यर्थियों के वाजिब मांग को दबाने का कुत्सित प्रयास कर रही है।प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता राजेश राठौड़ ने कहा कि लाठीचार्ज और गुंडागर्दी के जगह सरकार बैठ कर छात्रों के साथ बातचीत करके हल निकालना चाहिए लेकिन बार बार वें मांगों को दबाने में अपनी ऊर्जा बर्बाद कर रहे हैं। पहले छात्रों को कंफ्यूज किया गया और फिर उनके साथ पारदर्शिता नहीं बरती गई फिर आंदोलन करने पर लाठीचार्ज किया गया और डराने को उनपर मुकदमें दर्ज किए गए और अब लाठीचार्ज करके उनके आंदोलन को दबाने का यह प्रयास अक्षम्य है। इसलिए अब सरकार को आंदोलनरत छात्रों के साथ बातचीत करके अविलंब हल निकालना होगा।

स्वबोध के जागरण के प्रबल पैरोकार थे मालवीय जी और अटल जी

कृष्णचंद्र गांधी मीडिया सेंटर द्वारा महावीरी शिशु मंदिर में विचार गोष्ठी का आयोजन

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सिवान। बुधवार को महान स्वतंत्रता सेनानी महामना मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की जयंती के अवसर पर महावीरी शिशु मंदिर में कृष्णचंद्र गांधी मीडिया सेंटर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य वक्ता नारायण महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो परमेंद्र रंजन सिंह रहे और अध्यक्षता प्रोफेसर रवींद्र नाथ पाठक ने किया। विचार गोष्ठी का संचालन विद्या भारती प्रचार प्रसार विभाग के क्षेत्रीय संयोजक नवीन सिंह परमार ने किया। इस अवसर पर लोक शिक्षा समिति की वार्षिक पत्रिका ' अरुणोदय' का विमोचन भी आगत अतिथियों द्वारा किया गया।

विचार गोष्ठी के प्रारंभ में आगत अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित किया और मां शारदे, भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित किया। इसके बाद महामना मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के तैल चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किया गया। महावीरी सरस्वती शिशु विद्यामंदिर की बालिकाओं ने वैदिक मंत्रों का सुमधुर गायन प्रस्तुत किया। महावीरी शिशु मंदिर के प्राचार्य कमलेश नारायण सिंह ने स्वागत भाषण दिया और आगत अतिथियों का तिलक लगाकर और अंगवस्त्र से स्वागत किया गया।

विचार गोष्ठी के प्रारंभ में विद्याभारती के विभाग निरीक्षक राकेश कुमार रंजन ने विषय प्रवेश कराया। इस्लामिया कॉलेज के प्राध्यापक डॉक्टर अशोक प्रियंवद ने भारतीय इतिहास लेखन परंपरा पर जोरदार प्रहार करते हुए कहा कि भारत का सांस्कृतिक विरासत बेहद प्रतिष्ठित आयाम से सुसज्जित रहा है। उसे उसी रूप में ग्रहण करने की आवश्यकता है। अपने संबोधन में डॉक्टर गणेश दत्त पाठक ने स्वबोध के विशिष्ट आयामों और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए महामना मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी को स्वबोध के जागरण का प्रबल पैरोकार बताया। मुख्य वक्ता नारायण महाविद्यालय के प्राचार्य परमेंद्र रंजन ने बेहद प्रभावशाली अंदाज में वक्तव्य देते हुए स्वबोध जागरण के सकारात्मक प्रभावों को बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षक समाज का दिशा निर्धारक होता है उसे अपने कार्यों को बेहद निष्ठा से करना चाहिए क्योंकि स्वत्त्व के जागरण में उसकी सबसे बड़ी भूमिका होती है।शिक्षक अपने स्वत्त्व को जागृत कर बच्चों के भी स्वत्व को जागृत करें और अभिभावकों तक एक सकारात्मक संदेश पहुंचाए। बच्चों के नैसर्गिक प्रतिभा और उनकी रचनात्मकता के विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जीवन में मिलनेवाली हर असफलता ही हमारी सर्वोच्च मार्गदर्शक होती है। जब हमारे छात्र और युवा स्वबोध से जागृत होंगे तो उनका आत्मविश्वास इतिहास रचेगा। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर रविंद्रनाथ पाठक ने कहा कि महामना और अटल जी का व्यक्तित्व और कृतित्व सनातनी शाश्वत मूल्यों का संदेश संचारित करता रहा है। स्वबोध से जागृत ऊर्जा हमारे समाज और राष्ट्र को एक प्रतिष्ठित ऊंचाई पर ले जाने वाली है। संगोष्ठी को महावीरी बालिका विद्यालय की छात्रा बहन शिवानी कुमारी, प्रोफेसर शैलेश कुमार ने भी संबोधित किया। वहीं आभार ज्ञापन महावीरी सरस्वती शिशु मंदिर प्रबंध समिति के सचिव कौशलेंद्र प्रताप सिंह ने किया। कल्याणमंत्र के साथ गोष्ठी का समापन हो गया।इस मौके कृष्णचंद्र गांधी मीडिया सेंटर मार्गदर्शक मंडल के सदस्य प्रोफेसर अवधेश शर्मा, उपाध्यक्ष मिथिलेश कुमार सिंह, सचिव इंदल कुमार सिंह, ओमप्रकाश दूबे, पारस नाथ सिंह, शम्भू शरण तिवारी, ज्ञानेश्वर श्रीवास्तव, सिम्मी कुमारी, सुमन उपाध्याय सहित सैकड़ों की संख्या में महावीरी विद्यालय के आचार्य बन्धु भगिनी व नगर के प्रबुद्ध नागरिक उपस्थित थें।:

अतिक्रमण मुक्ति अभियान दूसरे दिन भी समस्तीपुर मंडल के मुक्तापुर स्टेशन पर चलाया गया

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर :- समस्तीपुर मंडल के मुक्तापुर रेलवे स्टेशन पर अतिक्रमण मुक्ति को लेकर आज दूसरे दिन भी अभियान चलाया गया। इसमें स्टेशन परिसर तथा रेलवे फाटक में मध्य अवैध रूप से अतिक्रमित करके बनाई गई दुकानों को रेल प्रशासन द्वारा जेसीबी मशीन से तोड़ कर हटाया गया। इस क्रम में वहां पर अवैध रूप से चल रहे चिकन दुकान सहित अन्य दुकानों को भी हटाया गया। रेलवे की इस कार्यवाई को स्थानीय लोगों और यात्रियों द्वारा काफी सराहा जा रहा है तथा अतिक्रमण को हटाने के लिए रेल प्रशासन द्वारा की गई कार्रवाई का स्वागत किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि मुक्तापुर स्टेशन और रेल फाटक के बीच रेल परिसर में चल रही इस अवैध दुकान को हटाने से रेलवे की काफी जमीन अतिक्रमण मुक्त हुई है, जिससे अब यात्रियों को भी आने जाने में सहूलियत होगी। इस कार्रवाई से यात्रियों और स्थानीय लोगों में हर्ष व्याप्त है। उन्होंने रेल प्रशासन को धन्यवाद दिया है। विदित हो कि रेल प्रशासन ने इस कार्रवाई को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है और अवैध दुकानों को हटाकर रेल परिसर को साफ कर दिया है। यह कार्रवाई रेलवे की जमीन को अतिक्रमण से मुक्त करने और यात्रियों को सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा की सुविधा प्रदान करने के लिए की गई है।

हत्यारों की गिरफ्तारी जल्द हो- रामदेव राय

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

दलसिंहसराय प्रखंड के अजनौल पंचायत के खोकसा निवासी अवनीश कुमार साह की शिक्षिका पत्नी मनीषा कुमारी को मंगलवार तड़के घर में घुसकर चार अपराधियों द्वारा गोली मारकर हत्या जैसी घृणित कार्य की भर्त्सना पूर्व जिला पार्षद सह पूर्व सेवानिवृत शिक्षक सह शिक्षक नेता रामदेव राय ने की तथा संबंधित थानाध्यक्ष और पुलिस कप्तान से मांग की कि उन अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी हो। उनने आगे कहा है वर्तमान सुशासन की सरकार में अपराधियों का मनोबल काफी बढ़ गया है साथ विडंबना ये है शिक्षक समुदाय विशेष रूप से टारगेट पर है। जिससे शिक्षक समुदाय में खौफ है ऐसी स्थिति में शिक्षा का मूल उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा डर के साए में देना अनापेक्षित है। श्री राय ने कहा की शिक्षा विभाग को इसे गंभीरता से लेकर शिक्षको को भयमुक्त वातावरण सुनिश्चित करना चाहिए।

अटल जी का जीवन छात्रों के लिए एक अमूल्य धरोहर है : डीपीओ मानवेन्द्र कुमार राय

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर :- जिला शिक्षा भवन स्थित बिहार शिक्षा परियोजना के सभाकक्ष में भारत रत्न अटल बिहार वाजपेयी की 100 वीं जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उनके तैल चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित करते हुए किया गया। अध्यक्षता करते हुए डीपीओ एसएसए मानवेन्द्र कुमार राय ने कहा कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी का जीवन हर उम्र के लोगों के लिए प्रेरणादायक है। अटल जी का जीवन विशेष रूप से छात्रों के लिए एक अमूल्य धरोहर है, क्योंकि उनके विचार और आदतें हमें जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग दिखाती हैं। अटल जी ने हमेशा अपने जीवन में सिद्धांतों, मेहनत और समर्पण को महत्व दिया, जिससे हर छात्र सीख सकता है।जिला कला एवं संस्कृति पदाधिकारी जुही कुमारी ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी का मानना था कि शिक्षा से ही गरीबी दूर होती है। उन्होंने हमेशा शिक्षा के महत्व को समझा और इसे समाज की प्रगति के लिए अत्यधिक जरूरी बताया। शिक्षक रणजीत कुमार ने उनकी कविता, क्या हार में,क्या जीत में किंचित नहीं भयभीत मेंङ्घछका पाठ करते हुए अटल जी के वास्तविक राष्ट्रवाद पर चर्चा की।शिक्षक सुभीत कुमार सिंह ने अटल जी ने हमेशा अपनी भाषा पर गर्व करने की बात की। उनका मानना था कि अपनी मातृभाषा में आत्मविश्वास से बात करना, भारतीय संस्कृति को सम्मान देना और अपनी भाषा में विचार व्यक्त करना चाहिए।

अटल बिहारी वाजपेयी का मानना था कि शिक्षा से ही गरीबी दूर होती है। उन्होंने हमेशा शिक्षा के महत्व को समझा और इसे समाज की प्रगति के लिए अत्यधिक जरूरी बताया। शिक्षक रणजीत कुमार ने उनकी कविता, क्या हार में,क्या जीत में किंचित नहीं भयभीत मेंङ्घछका पाठ करते हुए अटल जी के वास्तविक राष्ट्रवाद पर चर्चा की।

जब सरकार ने किया हाथ खड़े तब मुखिया ने निजी कोष से किया विद्यालय निर्माण

विधायक व भूमि दाता ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया उद्घाटन

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत भुसवर पंचायत के वार्ड संख्या 2 में पंचायत के ही वार्ड संख्या 2 निवासी डॉक्टर रामसेवक प्रसाद के द्वारा विद्यालय का निर्माण के लिए दान की गई भूमि पर स्थानीय मुखिया व मुखिया संघ अध्यक्ष सह पैक्स अध्यक्ष रंजीत कुमार महतो के द्वारा अपने निजी कोष से विद्यालय निर्माण किए जाने व शिक्षा विभाग को विद्यालय सौंपे जाने को लेकर 25 दिसंबर बुधवार को स्थानीय विधायक अजय कुमार व भूमिदाता डॉ0 रामसेवक प्रसाद के द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर विद्यालय का उद्घाटन किया गया। इस मौके पर स्थानीय मुखिया के द्वारा आए हुए आगंतुक के स्वागत में एक सम्मान समारोह का भी आयोजन किया गया।इस मौके पर एक सभा भी आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता मुखिया रंजीत कुमार महतो एवं संचालन अधिवक्ता सतीश चंद्र ठाकुर ने किया। सभा को विधायक अजय कुमार, जिला पार्षद जितेंद्र राम,पंसस निरंजन कुमार, भूमिदाता डॉ रामसेवक प्रसाद, विश्वनाथ महतो, पूर्व मुखिया शिवदानी प्रसाद सिंह, डॉ लक्ष्मण महतो, पूर्व सैनिक सुरेंद्र प्रसाद सिंह, विद्यालय के प्रधानाध्यापक रंजीत कुमार समेत अन्य लोगों ने संबोधित किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में मुखिया ने डॉ रामसेवक प्रसाद द्वारा भूमि दान किए जाने और अपने निजी कोष से विद्यालय निर्माण किए जाने के कारण, जमीन के अभाव में विद्यालय दूसरे जगह शिफ्ट होकर चलने से बच्चों की हो रही परेशानी को बताते हुए इस पुनीत कार्य हम योगदान किए जाने में स्थानीय विधायक और ग्रामीणों की भूमिका को सराहा।वहीं क्षेत्र संख्या 25 के पंसस निरंजन कुमार ने विद्यालय परिसर को अपने निजी फंड से चार दिवारी करने का घोषणा किया। विधायक ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि समाज के विकास के लिए शिक्षा जरूरी है। इसीलिए लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक होना चाहिए। शिक्षा का ज्योति एक ऐसा ज्योति है जिससे रात में भी सूर्य का प्रकाश जैसा प्रभाव समाज में देखने को मिलेगा। साथ ही उन्होंने भूमिदाता रामसेवक प्रसाद को हृदय से धन्यवाद देते हुए कहा कि अपने निजी आवास का जमीन को शिक्षा के प्रति समर्पित कर डॉक्टर रामसेवक प्रसाद सिंह सूरज चांद की भांति अमर हो गए। उन्होंने विद्यालय का निर्माण अपने निजी कोष से किए जाने पर मुखिया रंजीत कुमार महतो को भी धन्यवाद दिया। उन्होंने आगे कहा कि ऐसे कार्य से मुखिया ने शिक्षा के क्षेत्र में एक मिसाल पेश किया है। इससे पहले विद्यालय कभी पुस्तकालय भवन में, तो कभी पंचायत भवन में, दूसरे दूसरे विद्यालय में शिफ्ट कराकर चलाया जा रहा था।जिससे बच्चों को और शिक्षकों को भी काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था।

नए साल 2025 के प्रथम सप्ताह में राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों में होगा सिर्फ खेल गतिविधि

संवाददाता
मोहम्मद आरीफ

सिवान 25 दिसम्बर बुधवार। बिहार में शिक्षा विभाग और राज्य खेल प्राधिकरण के संयुक्त तत्वाधान मे बिहार प्रतिभा खोज खेल पहचान किया जाएगा। इसके तहत 2 जनवरी से 9 जनवरी 2025 तक राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों में पठन पाठक का कार्य स्थगित रहेगा और इस बीच सिर्फ खेल गतिविधि का आयोजन शिक्षक करेंगे। इस दौरान छात्रों के खेल प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन होगा। इन खेल गतिविधियों में विद्यालयों के सभी शिक्षको की भागीदारी अनिवार्य होगी। इसके लिए जिला पदाधिकारी सिवान श्री राघवेंद्र प्रताप सिंह ने जिले के सभी प्रखण्ड शिक्षा पदाधिकारीयों को निर्देश दिए है की अपने अपने प्रखंडधीन सरकारी विद्यालयों में खेल प्रतियोगिताओं को करा कर छात्रों का चयन करे ताकि वे वे जिला राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सके।

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की स्थानीय शाखा की बैठक संपन्न

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

आज दिनांक 25 दिसम्बर 2024 को भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) पंचायत महथी दक्षिण की तीनों शाखाओं सिरसी, एकडारा और मोहनपुर की संयुक्त बैठक कॉमरेड राम सुहावन महतो की अध्यक्षता तथा जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड अरविन्द कुमार दास के पर्यवेक्षण में पंचायत भवन महथी दक्षिण के परिसर में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम महान फिल्म निमार्ता श्याम बेनेगल के निधन पर शोक संवेदना प्रकट करते हुए उनके सम्मान में मौन रखा गया। तत्पश्चात पिछले बैठक में लिए गए फैसलों के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। 03 जनवरी 2025 को शहीद कॉमरेड ब्रज किशोर ब्रजेश के संकल्प सभा में सलखन्नी चलने का निर्णय लिया गया। 19 जनवरी 2025 को महथी दक्षिण पंचायत के पूर्व मुखिया कॉमरेड मनोज कुमार की दूसरी पुण्यतिथि पर मूर्ति अनावरण करने की तैयारी पर विस्तृत विचार विमर्श किया गया। ज्ञात हो कि तीनों शाखाओं के पार्टी सदस्यों तथा पंचायत की जनता के भरपूर सहयोग से जयपुर में निर्मित प्रतिमा लगाई जा रही है जिसमें कुल मिलाकर डेढ़ लाख से अधिक रुपए खर्च होने की संभावना है।

इस बैठक को लोकल कमेटी सदस्य सह सिरसी शाखा सचिव कॉमरेड शंभु कुमार यादव, एकडारा शाखा सचिव कॉमरेड ललन प्रसाद महतो, मोहनपुर शाखा सचिव कॉमरेड चन्द्र भूषण प्रसाद वर्मा, कॉमरेड अनिल कुमार, कॉमरेड शंभु कुमार महतो, कॉमरेड कृष्ण कुमार राय, कॉमरेड विनय कुमार प्रसाद, कॉमरेड मोहम्मद युनुस, कॉमरेड रामजी राम, कॉमरेड मुनेश्वर प्रसाद सिंह, कॉमरेड कामेश्वर प्रसाद,कॉमरेड पवन कुमार, कॉमरेड ब्रह्मदेव महतो, कॉमरेड राम सकल राम, कॉमरेड प्रमोद कुमार महतो, कॉमरेड शुभम कुमार, कॉमरेड उमेश कुमार, कॉमरेड राम नन्दन महतो, कॉमरेड शंकर ठाकुर, कॉमरेड दिलीप कुमार तथा कॉमरेड सीताराम सिंह ने सम्बोधित किया।

टीबी मुक्त पंचायत बनाने हेतु की गई स्क्रीनिंग

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

नावकोठी बेगूसराय ' प्रखण्ड क्षेत्र अंतर्गत टीवी मुक्त पंचायत बनाने हेतु 100 दिन का अभियान चलाया गया।इसके तहत समसा पंचायत के जीतपुर भगवती स्थान में टीबी मुक्त पंचायत बनाने हेतु स्क्रीनिंग किया गया।इसके तहत 95 शंकित रोगी की जांच एवं स्क्रीनिंग की गई।प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ रामनरेश शर्मा ने बताया कि समसा पंचायत को टीबी मुक्त पंचायत बनाने हेतु 100 शंकित मरीजों की जांच एवं स्क्रीनिंग की गई।उन्होंने बताया कि पंचायत यक्ष्मा मुक्त बनाने हेतु स्वास्थ्य उपकेंद्र एवं ग्रामीण स्तर पर स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर एवं ग्राम पंचायत के सहयोग से टीबी उन्मूलन की दिशा में प्रयास की जा रही है।केंद्र एवं राज्य की सरकार टीबी मुक्त पंचायत अभियान के तहत पंचायत को टीबी मुक्त करने के लिए प्रयासरत है।एस टी एस रिशिका रानी ने बताई कि टीबी के लक्षणों,जांच एवं उपचार की निःशुल्क व्यवस्था सरकार के द्वारा टीवी रोगियों के लिए की गई है।सरकार के द्वारा नवंबर से टीबी रोगियों को प्रतिमाह 6 माह तक ?1000 दिया जाएगा। वहीं उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि टीवी मुक्त पंचायत बनाने में अच्छे सहयोग देने वाले ग्राम पंचायत के मुखिया को सर्टिफिकेट एवं पुरस्कार से राज्य सरकार सम्मानित करेगी।इस दौरान डीपीसी अजय कुमार डब्ल्यू एच ओ, स्वास्थ्य प्रबंधक आनंद ईश्वर,आशा फैसिलटर एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

फाइलेरिया उन्मूलन अभियान में सहयोग का लिया संकल्प

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

शकील हैदर,वरिष्ठ संवाददाता ,छपरा छपरा। फाइलेरिया उन्मूलन की दिशा स्वास्थ्य विभाग के द्वारा स्तर पर प्रयास किया जा रहा है। फाइलेरिया के प्रति जागरूकता और भेदभाव को मिटाने के उद्देश्य से जिले के रिविलगंज प्रखंड के टेकनिवास स्थित हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर रोगी हितधारक मंच का गठन किया गया। सीएचओ सतेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में मंच का गठन किया गया। जबकि रिविलगंज के प्रभारी पदाधिकारी डॉ. राकेश कुमार ने मंच के गठन में मार्गदर्शन और सकारात्मक सहयोग प्रदान किया।इस मंच के गठन में सहयोगी संस्था सेंटर फॉर एडवोकेसी एंड रिसर्च के द्वारा तकनीकी सहयोग किया गया।

क्या है मंच का उद्देश्य :

सीएचओ सत्येंद्र कुमार ने बताया कि मंच का मुख्य उद्देश्य फाइलेरिया रोग के उन्मूलन में स्थानीय समुदाय को शामिल करना और विशेष रूप से उन रोगियों के बीच जागरूकता फैलाना है। जिन्होंने कभी फाइलेरिया की दवाइयां नहीं खाई हैं या जो पहले दवाइयां लेते थे, लेकिन अब उन्हें लेने से मना कर रहे हैं। मंच यह सुनिश्चित करेगा कि फाइलेरिया मरीज सरकारी इलाज की सुविधाओं का उपयोग करें और खुद को स्वस्थ रखें, साथ ही अन्य प्रभावित व्यक्तियों को भी स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ा जाए। इस दौरान उपस्थित सदस्यगण में प्रमुख रूप से सरपंच अजितेश पाण्डे, डॉ. रुपेश कुमार (ग्रामीण चिकित्सक), वीबीडीएस घनश्याम यादव, वीडीसीओ पंकज तिवारी, आगनवाड़ी सेविकाएं किरण कुमारी, प्रियका कुमारी, उमा देवी और गरिमा कुमारी शामिल थी ।फाइलेरिया उन्मूलन में सहयोग का लिया संकल्प : सभी ने इस मंच के गठन को फाइलेरिया उन्मूलन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया और इसके लिए विभिन्न तरीकों से सहयोग देने का वचन लिया। सरपंच अजितेश पांडेय ग्राम कचहरी और आम सभाओं के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने की बात कही। विकास मित्र सुनीता कुमारी ने किशोर-किशोरी समूहों और सामुदायिक बैठकों के माध्यम से सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देने पर जोर दिया। वहीं, आगनवाड़ी सेविकाओं ने गोद भराई और अन्न प्राशन जैसे कार्यक्रमों के जरिए समाजिक जागरूकता फैलाने की आवश्यकता पर बल दिया।

अहमदखान ने राजकीय समारोह में शामिल होकर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

ज़िला अध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा वसी अहमद खान के नेतृत्व में देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेई जी 100वीं जयंती के अवसर पर लिलारू औरंगाबाद के श्री भगवान राम के दरवाजे पर आयोजित राजकीय समारोह में शामिल होकर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

मुसरीघरारी में मोबाइल पार्ट्स की दुकान से लाखों रुपये के सामान की चोरी, पुलिस कर रही जांच

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर :- समस्तीपुर जिले के मुसरीघरारी चौक के निकट समस्तीपुर-मुसरीघरारी मुख्य मार्ग में एक मोबाइल पार्ट्स की दुकान से अज्ञात चोरों ने दुकान का शटर काटकर भीषण चोरी कर ली। इस चोरी में करीब 10 लाख मूल्य के सामान की चोरी होने की बात बताई गई है। इस घटना को लेकर दुकानदार के लिखित बयान पर प्राथमिकी दर्ज करायी जा रही है। । आवेदन में बी.एलौथ निवासी मो. शमसुल उर्फ अन्नू ने कहा है कि मंगलवार सुबह चोरी की जानकारी हुई। दुकान खोलने पहुंचा तो चोरी की जानकारी हुई।सोमवार की देर शाम अन्य दिनों की भांति वे अपनी मोबाइल पार्ट्स की दुकान को बंद कर घर चले गए थे। मंगलवार की सुबह करीब 9:00 बजे जब वे अपनी दुकान पर पहुंचे तो उनकी दुकान के शटर का लॉक कटा हुआ मिला। शटर को उठाकर जब वे दुकान के अंदर गए तो देखा की दुकान में रखे सारे मोबाइल पार्ट्स गायब थे। गायब मोबाइल पार्ट्स की कीमत 10 लाख रुपए थी। इस घटना के संबंध में पूछे जाने पर थानाध्यक्ष मो. फैजुल अंसारी ने बताया कि मोबाइल पार्ट्स की दुकान से चोरी होने की सूचना उन्हें मिली है। घटना की जांच की जा रही है।

एफसीसी क्रिकेट टूनार्मेंट में एसएसबी व जनकपुर के बीच हुआ मुकाबला

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

- एसएसबी टीम को 45 रनों से हराकर जनकपुर की टीम विजयी
- टी ट्वेंटी क्रिकेट प्रतियोगिता का संयुक्त रूप से उद्घाटन करते कमांडेंट, बीडीओ,थानाध्यक्ष व अन्य अतिथि

मधुबनी जिला के हरलाखीप्रखंड के दीन दयाल प्लस टू उच्च विद्यालय के प्रांगण में फ्रैंड्स क्रिकेट क्लब उमगांव के द्वारा आयोजित 31वीं टी-ट्वेंटी क्रिकेट टूनार्मेंट प्रतियोगिता का शुभारंभ बीते वुधवार को हो गया. जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में 48वीं वाहिनी के कमांडेंट गोविंद सिंह भंडारी, सहायक कमांडेंट विवेक ओझा, बीडीओ रजनीश शंकर झा, थानाध्यक्ष जितेन्द्र सहनी,एम आलम, अंशु कुमार सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया. उसके बाद सभी अतिथियों ने दोनों टीम के खिलाड़ियों से हाथ मिलाकर बेहतर प्रदर्शन करने का शुभकामनाएं दी.

उद्घाटन मैच जेसीसी जनकपुर बनाम 48वीं बटालियन जयनगर के बीच खेला गया. जहां टॉस जीतकर जनकपुर की टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ऑवर में नौ विकेट के नुकसान पर 178 रन बनाया. जबकि जवाब में उतरी 48वीं बटालियन की टीम 20 ऑवर में 133 रन ही बना सकी. इस प्रकार जनकपुर की टीम 45 रनों से विजयी हो गयी. उद्घाटन मैच को सम्बोधित करते हुए एफसीसी टूनार्मेंट के प्रायोजक तेजस टीवीएस उमगांव के डायरेक्टर डॉङ्क संतोष सिंह कुशवाहा ने कहा कि खिलाड़ी खेल के मैदान में खेल के भावना से खेलकर लोगों को आनन्द देते हैं. इससे आपसी भाईचारा बढ़ता है. इस तरह का भव्य आयोजन होने से सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के खिलाड़ियों का निखाड़ बढ़ता है और वे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित होते हैं. वहीं बीडीओ श्री झा ने कहा कि खेल से न केवल मनोरंजन होता है बल्कि शारिरिक व मानसिक विकास भी होता है. थानाध्यक्ष ने कहा कि खेल हमें अनुशासित होना सिखाता है. इसलिए खेल को खेल भावना से खेलना चाहिए. खेल में हार जीत तो लगी रहती है. हारे हुए टीम को आगे बेहतर करने के लिए नया ऊर्जा मिलता है. कार्यक्रम की अध्यक्षता जीवछ झा ने की. मौके पर अतिथि के रूप में विवेकानंद एकेडमी आवासीय स्कूल करुणा के एफ आलम, एफसीसी अध्यक्ष भूषण यादव, 31वीं टूनार्मेंट के कार्यकारी अध्यक्ष ऋषिकेश झा, विनय कुमार, विकास कुमार, रमेश गुप्ता, संतोष महतो, रिजवान, मनोज कुमार, प्रमोद यादव, जितेंद्र यादव, शंकर मेहता, ब्रजेश मिश्रा, आशीष कुमार सहित एफसीसी के अन्य सदस्य मौजूद थे. रोमांचक उद्घाटन मैच को देखने हजारों खेल प्रेमियों की भीड़ उमड़ी हुई थी.

विधायक मुकेश कुमार यादव ने पुल का शिलान्यास रखा

मो.सदरे आलम नौमानी
सीतामढ़ी:

बाजपट्टी विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के अंतरगत प्रखंड नानपुर में ग्रामीण कार्य विभाग नावार्ड योजना अंतर्गत कोयली बाजार से बिरार जाने वाली सड़क में उच्चस्तरीय आरसीसी पुल का शिलान्यास बाजपट्टी विधायक मुकेश कुमार यादव ने किया। इस मौके पर इंडिया गठबंधन के तमाम कार्यकर्ताग व खास कर राष्ट्रीय जनता दल के कार्यकर्ता उपस्थित हुए।मुकेश कुमार यादव बाजपट्टी विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में रोड एवं पुल पुलियों का जाल बिछा दिया है जो सराहनीय है

हुसैनगंज प्रखंड के शारीरिक व कम्प्यूटर शिक्षकों को बिहार राज्य खेल प्रतियोगिता के लिए किया जायेगा प्रशिक्षित

बिहार राज्य खेल प्रतियोगिता 2024 (मशाल) योजनान्तर्गत सभी स्कूलों के छात्र व छात्राओं को खेल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रशिक्षित किया जायेगा. इस संदर्भ में हुसैनगंज प्रखंड के सभी 24 मध्य, माध्यमिक, उच्च व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शारीरिक व कम्प्यूटर शिक्षकों को एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया जायेगा. बीईओ ने बताई कि जिस स्कूल में शारीरिक व कम्प्यूटर शिक्षक नहीं हैं उस परिस्थिति में उस स्कूल के अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए प्रधानाध्यापक अधिकृत करेंगे. बीईओ ने बताई कि यह प्रशिक्षण 26 दिसंबर से 28 दिसंबर तक प्रखंड मुख्यालय के लर्निंग सेंटर पर दिया जायेगा. 15-15 शिक्षकों को प्रतिदिन सुबह 9.30 बजे से प्रशिक्षण दिया जायेगा. प्रशिक्षण प्राप्त कर शिक्षक अपने स्कूल के बच्चों को विभिन्न प्रकार के खेलों में भाग लेने के लिए प्रशिक्षित करेंगे. इस प्रशिक्षण को सफल बनाने के लिए जिले से तीन ट्रेनर शिक्षकों को प्रतिनियुक्त किया गया है ।

अलग-अलग घटनाओं में एक दर्जन घायल, दो सदर अस्पताल छपरा रेफर

वरिष्ठसंवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक के अलग-अलग गांवों में घटनाओं में एक दर्जन घायलों को इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया गया। पहली घटना में मशरक में एन एच 227 ए राम जानकी पथ पर बंगरा में बाइक सवार और साइकिल सवार छात्रा की टक्कर हो गई जिसमें चार लोग घायल हालत में इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराए गए। घायलों में बाइक सवार मढ़ौरा थाना क्षेत्र के बरदहिया गांव निवासी रमेश शर्मा की 35 वर्षीय पुत्र चंदन शर्मा, गोपालगंज जिले के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के हमीदपुर गांव निवासी सुनील शर्मा की 32 वर्षीय पत्नी पुनम देवी व 7 वर्षीय पुत्री रिया शर्मा हैं वहीं साइकिल सवार छात्रा एकावना गांव निवासी अमोद सिंह की 15 वर्षीय पुत्री अंकिता कुमारी हैं। बाइक सवार मढ़ौरा से फुआ को बाइक पर बैठा मशरक के रास्ते हमीदपुर जा रहा था वहीं साइकिल सवार छात्रा बंगरा में कोचिंग पढ़ एकावना गांव जा रही थी कि बंगरा में दोनों की टक्कर हो गई। ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डॉ अनंत नारायण कश्यप ने प्राथमिक उपचार कर दो को सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया। वहीं दूसरे घटना में मशरक थाना क्षेत्र के कर्ण कुदरिया गांव में जमीनी विवाद में जमकर मारपीट में एक ही परिवार के आधा दर्जन लोग इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया गये जहा ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डॉ अनंत नारायण कश्यप ने प्राथमिक उपचार किया। घायलों में कर्ण कुदरिया गांव निवासी रामाशंकर यादव की 40 वर्षीय पत्नी संध्या देवी,15 वर्षीय पुत्री अनामिका कुमारी,12 वर्षीय पुत्री रितिका कुमारी,9 वर्षीय पुत्री रिया कुमारी शामिल हैं।मामले में थाना पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस जांच में जुटी है

औंसी थाना की पुलिस ने 45 बोतल नेपाली शराब के साथ एक तस्कर को बाइक के साथ किया गिरफ्तार .

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

मधुबनी जिला के बिस्फी प्रखंड क्षेत्र के :- औंसी थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर थाना के सामने एनएच 527 इ पथ पर एक होंडा एसपी बाइक के अंदर रखी गई 14.685लीटर नेपाली देशी शराब के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया । थानाध्यक्ष विकास कुमार ने बताया कि उक्त रास्ते होंडा एसपी बाइक पे रखे 25बोतल कुल 14.685लीटर नेपाली देशी शराब बरामद की गई । मौके पर शराब करोवारी को भी गिरफ्तार कर लिया गया । गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान मधुबनी जिला के रहिका थाना क्षेत्र के जगत पुर गांव निवासी कौशल कुमार चौधरी के रूप में हुई । थानाध्यक्ष ने बताया कि जप्त शराब के साथ बाइक एवं गिरफ्तार व्यक्ति के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर गिरफ्तार व्यक्ति को न्यायिक हिरासत भेज दीया गया है ।

48वीं वाहिनी, सशस्त्र सीमा बल, जयनगर ने घर से प्रेमी संग भागी नाबालिक युवती को पकड़ा

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

48वीं वाहिनी के आसूचना विभाग से गुप्त सूचना मिली की एक लड़का किसी नाबालिक लड़की को नेपाल ले जाकर शादी करने वाला है । आसुचना के आधार पर श्री गोविंद सिंह भण्डारी, कमांडेंट 48वीं वाहिनी के निदेर्शानुसार बहाय सीमा चौकी पिपरौन के जवानों द्वारा चैक पोस्ट ड्यूटि के दौरान सघन चैकिंग की जा रही थी, इस दौरान दिनांक 24/12/2024 को लगभग 12:15 बजे एक लड़का व लड़की नेपाल जाते हुए दिखाई दिये जिनको रोककर पूछताछ की तो लड़के ने अपना नाम अभिषेक कुमार, उम्र 24 वर्ष, पिता संभू राय, ग्राम झ हनुमानगंज (मिश्रटोला) पोस्ट झ लालबाग, जिला झदरभंगा (बिहार) बताया गया ।लड़की ने अपना पता जिला दरभंगा बताया 'उपरोक्त पकड़े गए युगल से पूछताछ के दौरान उन्हे अपना पहचान पत्र दिखाने को कहा गया तो लड़की के पास कोई पहचान पत्र नहीं पाया गया । लड़की के नाबालिक प्रतीक होने पर समवाय पिपरौन प्रभारी झ निरीक्षक झ सुनील दत्त द्वारा सूचना सर्वो प्रयास संस्थान, मधुबनी को मौके पर बुलाया गया, उनके द्वारा दोनों से गहन पूछताछ कर लड़की के घर संपर्क कर आधार कार्ड मंगवाया गया तो लड़की 15 वर्ष की पायी गयी । दोनों घर वालों को बिना बताए शादी करने नेपाल जा रहे थे । बचाई गई नाबालिग लड़की और पकड़े गए व्यक्ति को अग्रिम कार्यवाही हेतु हरलाखी थाने को सौंप दिया गया ।

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की 100वीं जयंती के अवसर पर मिथिला चित्रकला संस्थान, सौराठ, मधुबनी में ।व्याख्यानमाला का हुआ आयोजन ।

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की 100वीं जयंती के अवसर पर मिथिला चित्रकला संस्थान, सौराठ, मधुबनी में ।व्याख्यानमाला का हुआ आयोजन। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की 100वीं जयंती के अवसर पर मिथिला चित्रकला संस्थान, सौराठ, मधुबनी में कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार एवं जिला प्रशासन, मधुबनी के संयुक्त तत्वावधान में व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। उक्त आयोजन के अवसर पर बी आर आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के राजनीतिशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष, विनोद चंद्र झा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, के राजनीतिशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष, मुनेश्वर यादव, जे एम डी पी एल महिला कॉलेज मधुबनी के पूर्व प्राचार्य, यू एन तिवारी, राम कृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी के इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष नरेंद्र नारायण सिंह "निराला", राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षिका चंदना दत्त, राम कृष्ण महाविद्यालय के राजनीतिशास्त्र के व्याख्याता सुनील कुमार सुमन, जे एम डी पी एल महिला कॉलेज के इतिहास विभाग के व्याख्याता शिवकुमार पासवान ने इस दौरान अटल जी के व्यक्तित्व विभिन्न आयामों पर अपने अपने विचार व्यक्त किए। आयोजन के प्रारंभ में जिला कला एवं संस्कृति पदाधिकारी नीतीश कुमार द्वारा आगत अतिथियों का स्वागत किया गया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो निराला ने अटल जी के विराट व्यक्तित्व की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज और आने वाले कल में भी वाजपेयी जी के राजनैतिक सूझ बूझ की जरूरत बनी रहेगी। प्रो मुनेश्वर यादव ने कहा कि विरले ही अटल जी जैसे ऐसे नेता हुए हैं, जिन्होंने इतिहास की धारा मोड़ दी हो। 13 दिन और 13 महीने के बाद पूरे 5 साल के लिए प्रधानमंत्री पद को सुशोभित करना चुनौतीपूर्ण कार्य था। उन्होंने व्यापार, तकनीक और कनेक्टिविटी के बल पर देश के उत्थान में अटल जी के कार्य को याद किया। प्रो उदय नारायण तिवारी ने उनकी उदार छवि की चर्चा की। श्रीमती चंदना दत्त ने मिथिला और मैथिली के लिए उनके प्रयास की मैथिली में संबोधित कर रेखांकित किया। शिव कुमार पासवान ने दल से ऊपर की उनकी राजनीतिक हैसियत पर प्रकाश डाला। सुनील कुमार सुमन ने अटल जी के गरिमापूर्ण भाषण शैली को याद किया। व्याख्यानमाला के सूत्रधार के रूप में डॉ अभिषेक कुमार ने अटल बिहारी वाजपेयी जी के प्रखर व्यक्तित्व व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों की चर्चा की।

अटल बिहारी वाजपाई का जन्म दिवस मनाया गया

मो.सदरे आलम नौमानी

भारत रत्न' पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100 वीं जयंती के शुभ अवसर पर भाजपा बाजपट्टी मंडल कार्यालय का उद्घाटन बाजपट्टी दक्षिणी मंडल अध्यक्ष सुनील मिश्रा जी बाजपट्टी उत्तरी मंडल अध्यक्ष संजय गुप्ता जी अल्पसंख्यक मोर्चा सीतामढ़ी जिला महामंत्री मोहम्मद शमशाद अंसारी के द्वारा फीता काट कर किया गया । कार्यालय उद्घाटन के पश्चात अटल सभागार में भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई की जयंती मनाया गया। मंडल अध्यक्षों द्वारा अटल जी के जीवनी पर प्रकाश डाला गया ।भाजपा बाजपट्टी कार्यालय उद्घाटन समारोह में बाजपट्टी के तमाम भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता बूथ अध्यक्ष,शक्ति केंद्र प्रमुख

धूमधाम एवं हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में मनी भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की जयंती

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सीवन 25 दिसम्बर 2024 डॉ विजय कुमार पाण्डेय मालवीय चौक स्थित मालवीय प्रतिमा पर सुबह से ही चहल पहल के बीच माल्यार्पण एवम संगोष्ठी का हुआ आयोजन। भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की जयंती आज पूर्वाह्न वैदिक मंत्रोच्चार व दीपप्रज्वलन के साथ मनायी गयी ।सदर विधायक एवम बिहार विधानसभा सभा के पूर्व अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी एवम दरौंदा विधान सभा क्षेत्र के भाजपा के विधायक कर्णजीत सिंह उर्फ व्यास सिंह ,मालवीय जयंती आयोजन समिति के अध्यक्ष वरीय अधिवक्ता सुभाष्कर पाण्डेय एवम महिला नेत्री श्रीमती लीलावती गिरी तथा नप के पूर्व चेयरमैन अनुराधा गुप्ता सहित उपस्थित दर्जनों गणमान्य अतिथियों ने मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर महामना के प्रति अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित किया ।तत्पश्चात मालवीय जयंती आयोजन समिति एवम बीएचयू छात्र परिषद के तत्वावधान में मालवीय पार्क में संगोष्ठी का आयोजन मुख्य अतिथि अवध बिहारी चौधरी की अध्यक्षता में हुई । कार्यक्रम में विधायक कर्णजीत सिंह ने मालवीय पार्क को विकसित करने के लिए हर सम्भव मदद करने का आश्वासन दिया ।मुख्य अतिथि श्री चौधरी ने संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि मालवीय जी विपरीत परिस्थितियों में एक ऐसे आदर्श शैक्षणिक संस्थान का निर्माण किया ।जो सामाजिक सौहाद्र एवम हमारी संस्कृति को सदियों तक संरक्षित रखने का संदेश देता रहेगा ।उन्होंने युवा पीढ़ी के को मालवीय जी के पद चिन्हों पर चलने का संदेश दिया ।इस अवसर पर उन्होंने आयोजन समिति के मांग पर विधायक निधि से मालवीय द्वार का निर्माण अविलम्ब कराने का आश्वासन दिया। संगोष्ठी को पूर्व सांसद ओम प्रकाश यादव , पूर्व विधान पार्षद सह जिला सहकारिता बैंक के अध्यक्ष मनोज सिंह ,वार्ड पार्षद इंतेखाब अहमद ,योगेंद्र सिंह, अभिषेक सिंह ,आयुर्वेद चिकित्सा महाविद्यालय के शाशि निकाय के संरक्षक सह पूर्व प्राचार्य प्रजा पति त्रिपाठी एवम महिला नेत्री श्रीमति लीलावती गिरी ।

रीगा चिनी मिल बरसो बाद हुआ चालू

मो.सदरे आलम नौमानी

सीतामढ़ी:सीतामढ़ी का रीगा चीनी मिल बरसों बाद फिर से चालू हो गया है इस चीनी मिल के चालों होने से गणना किसानों में बे हद खुशी पाई जाती है बंद चीनी मिल का 20 दिसंबर को उद्घाटन किया गया है इस मिल को दक्षिण भारत के व्यापारी ने खरीदा है जिसका नाम है निरानी शुगर लिमिटेड कल इस चीनी मिल में माननीय मुख्यमंत्री के सीतामढ़ी में दौरे के दौरान यहां भी जाने की कार्यक्रम है

हनुमानजी अपनी शक्ति क्यों भूल गए थे?

श्री सीता हरण के बाद हनुमानजी और श्रीराम का मिलन हुआ और हनुमानजी ने श्रीराम को सुग्रीव, जामवंत आदि वानरयूथों से मिलाया। फिर जब लंका जाने के लिए रामसेतु बनाया गया तो श्रीराम ने हनुमानजी को लंका जाने का आदेश दिया, परंतु हनुमानजी ने लंका जाने में अपनी असमर्थता जताई तब जामवंतजी ने हनुमानजी को उनकी शक्तियों की याद दिलाई। परंतु सवाल यह है कि हनुमानजी अपनी शक्ति क्यों भूल गए थे? दरअसल, हनुमानजी को कई देवताओं ने विभिन्न प्रकार के वरदान और अस्त्र-शस्त्र दिए थे। इन वरदानों और अस्त्र-शस्त्र के कारण बचपन में हनुमानजी उधम मचाने लगे थे। खासकर वे ऋषियों के बगीचे में घुसकर फल, फूल खाते थे और बगीचा उजाड़ देते थे। वे तपस्यारत मुनियों को तंग करते थे। उनकी शरारतें बढ़ती गई तो मुनियों ने उनकी शिकायत उनके पिता केसरी से की। माता-पिता में खूब समझाया कि बेटा ऐसा नहीं करते, परंतु हनुमानजी शरारत करने से नहीं रुके तो एक दिन अंगिरा और भृगुवंश के ऋषियों ने कुपित होकर उन्हें श्राप दे दिया कि वे अपने शक्तियों और बल को भूल जाएंगे परंतु उचित समय पर उन्हें उनकी शक्तियों को कोई याद दिलाएगा तो याद आ जाएगी। फिर जब हनुमानजी को श्रीराम का कार्य करना था तो जामवंत जी का हनुमानजी के साथ लंबा संवाद होता है। इस संवाद में वे हनुमानजी के गुणों का बखान करते हैं और तब हनुमानजी को अपनी शक्तियों का आभास होने लगता है। अपनी शक्तियों का आभास होते ही हनुमानजी विराट रूप धारण करते हैं और समुद्र को पार करने के लिए उड़ जाते हैं।

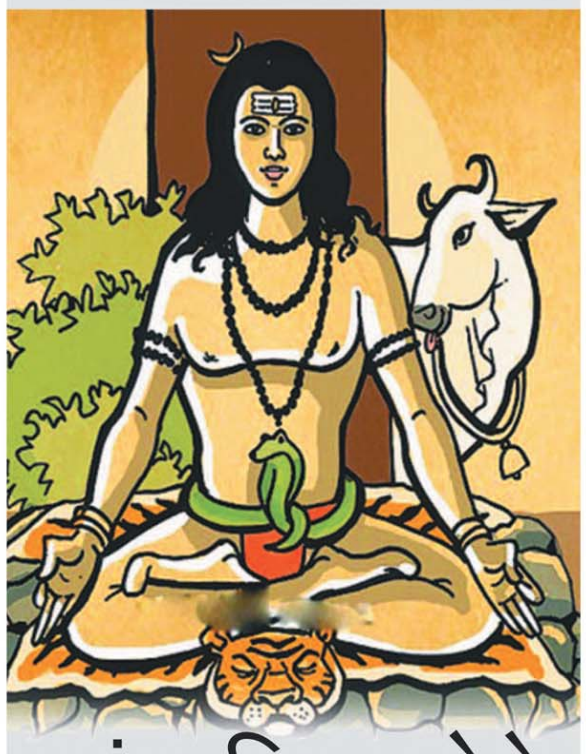

तुरंत सिद्ध होते हैं साबर मंत्र

वैदिक अथवा तांत्रोक्त अनेक ऐसे मंत्र हैं, जिसमें साधना करने के लिए अत्यंत सावधानी की जरूरत होती है। असावधानी से कार्य करने पर प्रभाव प्राप्त नहीं होता अथवा सारा श्रम व्यर्थ चला जाता है, परंतु शाबर मंत्रों की साधना या सिद्धि में ऐसी कोई आशंका नहीं होती। यह सही है कि इनकी भाषा सरल और सामान्य होती है।

माना जाता है कि लगभग सभी साबर साधनाओं और मंत्रों का अविष्कार गुरु गोरखनाथ ने किया है। यह मंत्र बहुत जल्दी ही सिद्ध भी हो जाते हैं और इनकी साधनाएं बहुत ही सरल होती हैं। ओम गुरुजी को आदेश गुरजी को प्रणाम, धरती माता धरती पिता, धरती धरे ना धीरबाजे श्रींगी बाजे तुरतुरि आया गोरखनाथमीन का पुत मुंज का छड़ा लोहे का कड़ा हमारी पीठ पीछे यति हनुमंत खड़ा, शब्द सांचा पिंड काचास्फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।।

इस मन्त्र को सात बार पढ़ कर चाकू से अपने चारों तरफ रक्षा रेखा खींच ले गोलाकार, स्वयं हनुमानजी साधक की रक्षा करते हैं। शर्त यह है कि मंत्र को विधि विधान से पढ़ा गया हो। साबर मंत्रों को पढ़ने पर ऐसा कुछ भी अनुभव नहीं होता कि इनमें कुछ विशेष प्रभाव है, परंतु मंत्रों का जप किया जाता है तो असाधारण सफलता दृष्टिगोचर होती है। कुछ मंत्र तो ऐसे हैं कि जिनको सिद्ध करने की जरूरत ही नहीं है, केवल कुछ समय उच्चारण करने से ही उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगता है। यदि किसी मंत्र की संख्या निर्धारित नहीं है तो मात्र 1008 बार मंत्र जप करने से उस मंत्र को सिद्ध समझना चाहिए। दूसरी बात शाबर मंत्रों की सिद्धि के लिए मन में दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति का होना आवश्यक है। जिस प्रकार की इच्छा शक्ति साधक के मन में होती है, उसी प्रकार का लाभ उसे मिल जाता है। यदि मन में दृढ़ इच्छा शक्ति है तो अन्य किसी भी बाह्य परिस्थितियों एवं कुविचारों का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता।

छठी इंद्री क्या होती है, इसे कैसे जाग्रत किया जा सकता है

- छठी इंद्री को अंग्रेजी में सिक्स्थ सेंस कहते हैं। यह क्या होती है, कहां होती है और कैसे इसे जाग्रत किया जा सकता है यह जानना भी जरूरी है। इसे जाग्रत करने के लिए वेद, उपनिषद, योग आदि हिन्दू ग्रंथों में अनेक उपाय बताए गए हैं। नास्त्रेदमस इसी तरह के उपायों से भविष्यवक्ता बने थे।
- मस्तिष्क के भीतर कपाल के नीचे एक छिद्र है, उसे ब्रह्मरंध्र कहते हैं, वहीं से सुषुम्ना नाड़ी सहस्त्रकार के जुड़कर रीढ़ से होती हुई मूलाधार तक गई है। इसी नाड़ी के बायीं ओर इड़ा और दायीं ओर पिंगला नाड़ी स्थित है। दोनों के बीच सुप्तावस्था में छठी इंद्री स्थित है।
- यह छठी इंद्री ही हमें हर वक्त आने वाले खतरे या भविष्य में होने वाली घटनाओं का आभास करती रहती है लेकिन कुछ लोग इसे स्पष्ट समझ लेते हैं और कुछ नहीं। यदि आप इसे समझें तो आपके साथ घटने वाली घटनाओं के प्रति ये इंद्री आपको सजग कर देगी।
- छठी इंद्री जाग्रत होने से व्यक्ति में भूत और भविष्य में झांकने की क्षमता आ जाती है। ऐसा व्यक्ति मीलों दूर बैठे व्यक्ति की बातें सुन सकता और उसे देख भी सकता है। दूसरों के मन की बात जान ही नहीं सकता बल्की उनका मन बदल भी सकता है और दूसरों की बीमारी दूर की जा सकती है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार छठी इंद्री कल्पना नहीं, वास्तविकता है, जो हमें किसी घटित होने वाली घटना का पूर्वाभास कराती है। यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया के रॉन रेसिक के अनुसार छठी इंद्रिय के कारण ही हमें भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास होता है।
- छठी इंद्री को जाग्रत करने का बहुत ही सरल तरीका है। तीन माह के लिए खुद को परिवार और दुनिया से काटकर आपको योग की शरण में जाना होगा। यम, नियम, प्राणायम और योगासन करते हुए लगातार ध्यान करना होगा।
- प्राणायाम सबसे उत्तम उपाय इसलिए माना जाता है क्योंकि हमारी दोनों भौहों के बीच छठी इंद्री होती है। सुषुम्ना नाड़ी के जाग्रत होने से ही छठी इंद्री जाग्रत हो जाती है। प्राणायम के माध्यम से छठी इंद्री को जाग्रत किया जा सकता है।
- मेस्मेरिज्म या हिप्नोटिज्म जैसी अनेक विद्याएं इस छठी इंद्री को जाग्रत करने का सरल और शॉर्टकट रास्ता है लेकिन इसके खतरे भी हैं। हिप्नोटिज्म को सम्मोहन कहते हैं। सम्मोहन विद्या को ही प्राचीन समय से 'प्राण विद्या' या 'त्रिकालविद्या' के नाम से पुकारा जाता रहा है।
- मन के कई स्तर होते हैं। उनमें से एक है सुक्ष्म शरीर से जुड़ा हुआ आदिम आत्म चेतन मन। यह मन हमें आने वाले रोग या खतरें का संकेत देकर उससे बचने के तरीके भी बताता है। इस मन को प्राणायाम या सम्मोहन से साधा जा सकता है।
- त्राटक क्रिया से भी इस छठी इंद्री को जाग्रत कर सकते हैं। आप बिना पलक गिराए किसी एक बिंदु, क्रिस्टल बॉल, मोमबत्ती या घी के दीपक की ज्योति पर देखते रहिए। इसके बाद आंखें बंद कर ध्यान करें। कुछ समय तक इसका अभ्यास करें। इससे धीरे-धीरे छठी इंद्री जाग्रत होने लगेगी।
- ऐसा कई बार देखा गया है कि कई लोगों ने अंतिम समय में अपनी बस, ट्रेन अथवा हवाई यात्रा को कैंसिल कर दिया और वे चमत्कारिक रूप से किसी दुर्घटना का शिकार होने से बच गए। बस यही छठी इंद्री का कमाल है। आप इसे पहचानें क्योंकि यह सभी संवेदनशील लोगों के भीतर होती है।
- यदि आपको यह आभास होता है कि पीछे कोई चल रहा है या दरवाजे पर कोई खड़ा है। कुछ होनी-अनहोनी होने वाली है या कोई खुशी का समाचार मिलने वाला है तो आप अपनी इस क्षमता पर लगातार गौर करें और ध्यान देंगे तो यह विकसित होने लगेगी। जैसे-जैसे अभ्यास गहराएगा आपकी छठी इंद्री जाग्रत होने लगेगी और आप भविष्यवक्ता बन जाएंगे।

9 प्रमुख मणियां किस मणि को धारण करने से क्या होता है

आपने पारस मणि, नागमणि, कौस्तुभ मणि, चंद्रकांता मणि, नीलमणि, स्यमंतक मणि, स्फटिक मणि आदि का नाम तो सुना ही होगा, परंतु ही यहां निम्नलिखित नौ मणियों की बात कर रहे हैं- घृत मणि, तैल मणि, भीष्मक मणि, उपलक मणि, स्फटिक मणि, पारस मणि, उलूक मणि, लाजावर्त मणि, मासर मणि। आओ जानते हैं कि इन मणियों को धारण करने से क्या होता है। हालांकि यह सभी बातें मान्यता पर आधारित हैं।

- घृत मणि की माला धारण कराने से बच्चों को नजर से बचाया जा सकता है।
- स्फटिक मणि को धारण करने से कभी भी लक्ष्मी नहीं रूठती।
- तैल मणि को धारण करने से बल-पौरूष की वृद्धि होती है।
- भीष्मक मणि धन-धान्य वृद्धि में सहायक है।
- उपलक मणि को धारण करने वाला व्यक्ति भक्ति व योग को प्राप्त करता है।
- उलूक मणि को धारण करने से नेत्र रोग दूर हो जाते हैं।
- लाजावर्त मणि को धारण करने से बुद्धि में वृद्धि होती है।
- मासर मणि को धारण करने से पानी और अग्नि का प्रभाव कम होता है।

तेलमणि को धारण करने से होती हैं सभी मनोकामनाएं पूर्ण

आपने पारस मणि, नागमणि, कौस्तुभ मणि, चंद्रकांता मणि, नीलमणि, स्यमंतक मणि, स्फटिक मणि आदि का नाम तो सुना ही होगा, परंतु ही यहां निम्नलिखित नौ मणियों की बात कर रहे हैं- घृत मणि, तैल मणि, भीष्मक मणि, उपलक मणि, स्फटिक मणि, पारस मणि, उलूक मणि, लाजावर्त मणि, मासर मणि। आओ जानते हैं कि तेलमणि को धारण करने से क्या होता है। हालांकि यह सभी बातें मान्यता पर आधारित हैं।

- तेलमणि को उदउक, उदोक भी कहते हैं और अंग्रेजी में टूर्मेलीन कहा जाता है।
- लाल रंग की आभा लिए हुए श्वेत, पीत व कृष्ण वर्ण की होती है तेलमणि और स्पर्श करने से तेल जैसा चिकना ज्ञात होता है।
- कहते हैं कि श्वेत रंग की तेलमणि को अग्नि में डालने पर ही पीत वर्ण की तथा कपड़े में लपेट कर रखने पर तीसरे दिन पीत वर्ण की हो जाती है। लेकिन बाहर निकालकर हवा में रखने से कुछ समय बाद ही यह पुनः अपने असली रंग में बदल जाती है।
- इस मणि को धारण करने से भक्ति भाव, वैराग्य तथा आत्म ज्ञान प्राप्त होकर सभी तरह की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- कहते हैं कि रोहिणी नक्षत्र, पूर्णिमा या मंगलवार के दिन तेलमणि को जिस खेत में 4-5 हाथ गहरे गड्ढे में खोदकर दबा दिया जाए और मिट्टी से ढंककर सींचा जाए तो सामान्य से बहुत अधिक अन्न उत्पन्न होता है।

इन कारणों से दिखाई देते हैं हमें अच्छे या बुरे सपने

मनोविज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष और योग में अच्छे या बुरे सपने दिखाई देने के कई कारण बताए गए हैं। जब हम कोई स्वप्न देखते हैं तो जरूरी नहीं कि प्रत्येक सपने का अच्छा या बुरा फल होता है। आओ जानते हैं कि सपने किन कारणों से दिखाई देते हैं।

अधिकतर सपने हमें हमारी दिनचर्या में किए गए कार्य से प्राप्त होते हैं। कार्य का अर्थ हमने जो देखा, सुनना, समझा, इच्छा किया और भोगा वह हमारे चित्त में विराजित होकर रात में स्वप्नों के रूप में दिखाई देता है। यह सब बदले स्वरूप में इसलिए भी होते हैं क्योंकि वे हमारे शरीर में स्थित भोजन और पानी की स्थिति और अवस्था से भी संचालित होते हैं। निम्नलिखित बातों से आप समझ सकते हैं। इन कारणों से दिखाई देते हैं स्वप्न :-

- दृष्ट- जो जाग्रत अवस्था में देखा गया हो उसे स्वप्न में देखना।
- श्रुत- सोने से पूर्व सुनी गई बातों को स्वप्न में देखना।
- अनुभूत- जो जागते हुए अनुभव किया हो उसे देखना।
- प्रार्थित- जाग्रत अवस्था में की गई प्रार्थना की इच्छा को स्वप्न में देखना।
- दोषजन्य- वात, पित्त आदि दूषित होने से स्वप्न देखना।
- भाविक- जो भविष्य में घटित होना है, उसे देखना।

अतः अब आप जान सकते हैं कि आपने जो सपने देंखे हैं वे किस श्रेणी के हैं। इससे आप यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि आपका सपना शुभ होगा या अशुभ।

हिन्दू धर्म में सफेद वस्त्र का क्या है महत्व

हिन्दू धर्म में सफेद वस्त्र का बहुत महत्व है। सफेद रंग हर तरह से शुभ माना गया है, लेकिन वक्त के साथ लोगों ने इस रंग का मांगलिक कार्यों में इस्तेमाल बंद कर दिया। हालांकि प्राचीनकाल में सभी तरह के मांगलिक कार्यों में इस रंग के वस्त्रों का उपयोग किया जाता था। यह रंग शांति, शुभता, पवित्रता और मोक्ष का रंग है।

लक्ष्मी का वस्त्र : सच तो यह है कि सफेद रंग सभी रंगों में अधिक शुभ माना गया है इसीलिए कहते हैं कि लक्ष्मी हमेशा सफेद कपड़ों में निवास करती है।

मांगलिक वस्त्र : 20-25 वर्षों पहले तक लाल जोड़े में सजी दुल्हन को सफेद ओढ़नी ओढ़ाई जाती थी। इसका यह मतलब कि दुल्हन ससुराल में पहला कदम रखे तो उसके सफेद वस्त्रों में लक्ष्मी का वास हो। आज भी ग्रामीण क्षेत्र में सफेद ओढ़नी की परंपरा का पालन किया जाता है।

यज्ञकर्ता का वस्त्र : प्राचीन काल में जब भी यज्ञ किया जाता था तो पुरुष और महिला दोनों ही सफेद वस्त्र ही धारण करके बैठते थे। पुरोहित वर्ग इसी तरह के वस्त्र पहनकर यज्ञ करते थे। दूसरी ओर आज भी किसी भी सम्मान समारोह आदि में सफेद कुर्ता और धोती पहनने का रिवाज है।

विधावा का वस्त्र : यदि किसी का पति मर गया तो उसे विधवा और किसी की पत्नी मर गई है तो उसे विधुर कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार पति की मृत्यु के नौवें दिन उसे दुनियाभर के रंगों को त्यागकर सफेद साड़ी पहननी होती है, वह किसी भी प्रकार के आभूषण एवं श्रृंगार नहीं कर सकती। स्त्री को उसके पति के निधन के कुछ सालों बाद तक केवल सफेद वस्त्र ही पहनने होते हैं और उसके बाद यदि वह रंग बदलना चाहे तो बेहद हल्के रंग के वस्त्र पहन सकती है। मध्यकाल में हिन्दू धर्म में कई तरह की बुराइयां सम्मलित हुई उसमें एक यह भी थी कि कोई स्त्री यदि विधवा हो जाती थी तो वह दूसरा विवाह नहीं कर पाती थी। हालांकि आज भी उत्तर भारत के ग्रामीण इलाकों में विधवा विवाह का प्रचलन है जिसे नाता कहा जाता है। कोई स्त्री पुनर्विवाह का निर्णय लेती है, तो इसके लिए वह स्त्रतंत्र है। आज समाज का स्वरूप बदल रहा है। विधवाएं रंगीन वस्त्र भी पहन रही है और शादी भी कर रही हैं। वेदों में एक विधवा को सभी अधिकार देने एवं दूसरा विवाह करने का अधिकार भी दिया गया है। वेदों में एक कथन शामिल है-

'उदीरष्व नार्यभि जीवलोकं
गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं
पत्युर्जनित्वमभि सम्बभूथ।'

अर्थात पति की मृत्यु के बाद उसकी विधवा उसकी याद में अपना सारा जीवन व्यतीत कर दे, ऐसा कोई धर्म नहीं कहता। उस स्त्री को पूरा अधिकार है कि वह आगे बढ़कर किसी अन्य पुरुष से विवाह करके अपना जीवन सफल बनाए। चार कारणों से विधवा महिलाओं को सफेद वस्त्र दिए गए। पहला यह कि यह रंग कोई रंग नहीं बल्कि रंगों के अनुपस्थिति है। मतलब यह कि अब जीवन में कोई रंग नहीं बचा। दूसरा यह कि इससे महिला की एक अलग पहचान बन जाती है और लोग उसे सहानुभूति एवं संवेदना रखते हैं। तीसरा यह कि सफेद रंग आत्मविश्वास, सात्विक और शांति का रंग है। इसके साथ ही सफेद वस्त्र विधवा स्त्री को प्रभु में अपना ध्यान लगाने में मदद करते हैं। चौथा कराण यह कि इससे महिला का कहीं ध्यान नहीं भटकता है और उसे हर वक्त इसका अहसास होता है कि वह पवित्र है। पांचवां कारण यह कि यदि महिला के कोई पुत्र या पुत्री है तो वह अपने भीतर नैतिकता और जिम्मेदारी का अहसास करती रहे ताकि वह दूसरा विवाह नहीं करें। दोबारा शादी नहीं करने से पुत्र पुत्रियों के जीवन पर विपरित या प्रतिकुल असर नहीं पड़ता है।

भारत में एसआईपी में अच्छी वृद्धि, बढ़ा विश्वास

जनवरी से नवंबर तक एसआईपी में शुद्ध प्रवाह 9.14 लाख करोड़ रुपए रहा

मुंबई ।

भारत में एसआईपी में जबरदस्त उछाल देखने को मिला है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) में शुद्ध प्रवाह 233 फीसदी (सालाना आधार) बढ़ा है। इसका मुख्य कारण भारतीय अर्थव्यवस्था की लचीलापन में वृद्धि और भू-राजनीतिक परिस्थितियों में स्थिरता है। आईसीआरए एनालिटिक्स की रिपोर्ट के मुताबिक जनवरी से नवंबर तक कुल एसआईपी में शुद्ध प्रवाह 9.14 लाख करोड़ रुपये रहा, जो पिछले साल के मुकाबले 233 प्रतिशत की वृद्धि है। नवंबर में रजिस्टर्ड नए एसआईपी की संख्या 49.47 लाख हो गई है, जो 2023 में 30.80 लाख थी। एसआईपी एयूएम ने नवंबर में 13.54 लाख करोड़ रुपये के अंडर मैनेजमेंट रखा, जो पिछले साल के 9.31 लाख करोड़ के मुकाबले है। भारतीय म्यूचुअल फंड (एमएफ) इंडस्ट्री ने भी शुद्ध प्रवाह में 135 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि देखी है। विश्वव्यापी अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति के साथ, आने वाले वर्षों में उद्योग में गुना-गुना वृद्धि की संभावना है। विशेषज्ञों का कहना है कि घरेलू म्यूचुअल फंड उद्योग में भी उम्मीदें हैं कि निवेशकों में बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। शुद्ध एयूएम में भी बड़ी बढ़ोतरी हुई है, जिसके साथ नवंबर में एयूएम पहुंचा 68.08 लाख करोड़ रुपये पर। इक्विटी कैटेगरी के लार्ज कैप फंड में सबसे अधिक वृद्धि हुई है, जो नवंबर में लगभग 731 प्रतिशत बढ़कर 2547.92 करोड़ रुपये हुआ है। भावनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो, भारतीय अर्थव्यवस्था का उछाल निवेशकों के बीच नया जोश और विश्वास पैदा कर रहा है। आने वाले दिनों में उद्योग में और भी बढ़ोतरी की संभावना है जिससे निवेशकों को अच्छे रिटर्न की संभावना है।

देश के नौ प्रमुख शहरों में घरों की बिक्री में 21 फीसदी गिरावट की संभावना

- कुल बिक्री तिमाही में 1,08,261 इकाई रह जाने की संभावना

नई दिल्ली ।

रियल एस्टेट की एक आंकड़ा विश्लेषक कंपनी ने जारी की एक रिपोर्ट में कहा है कि देश के प्रमुख नौ आवास बाजारों में अक्टूबर से दिसंबर तिमाही के दौरान घरों की बिक्री में 21 फीसदी की गिरावट की संभावना है। इसका कारण उच्च आधार प्रभाव है, जिसके कारण लगभग 1.08 लाख इकाई रह जाएगी। कंपनी ने दिल्ली-एनसीआर, मुंबई, नवी मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई, और ठाणे के लिए बिक्री आंकड़े जारी किए हैं। दिल्ली-एनसीआर में ही बिक्री में वृद्धि की संभावना है जबकि अन्य शहरों में गिरावट की संभावना है। जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार कुल बिक्री तिमाही में 1,08,261 इकाई रह जाने की संभावना है, जो पिछले साल से कम है। हालांकि, सितंबर तिमाही में बिक्री में पांच प्रतिशत की वृद्धि की संभावना है। रिएल स्टेट के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने बताया कि उच्च आधार प्रभाव के कारण बिक्री में गिरावट आई है, लेकिन त्योहारी मांग के कारण इसमें सुधार हो सकता है। वे ने दावा किया कि आपूर्ति-खपत अनुपात मजबूत और स्वस्थ है, जिससे रियल एस्टेट क्षेत्र में स्थिरता बनी रहेगी। हैदराबाद, बेंगलुरु, चेन्नई, मुंबई, नवी मुंबई, ठाणे, कोलकाता, और पुणे में भी बिक्री में गिरावट की संभावना है। हालांकि, दिल्ली-एनसीआर में बाजार इस रुझान को बदलने के लिए तैयार है और बिक्री में वृद्धि की संभावना है। यह आंकड़े रियल एस्टेट बाजार की मानें और इस क्षेत्र में संवेदनशीलता का पूरा काम करते हैं। देश विस्तार से यह गिरावट के संकेत के रूप में देखी जा सकती है, जो क्षेत्र के निर्माण और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण है।

किआ की नई एसयूवी सिरोस बाजार में पेश

नई दिल्ली ।

किआ मोटर्स ने अपनी नई एसयूवी सिरोस को बाजार में पेश किया है। इस मॉडल का लॉन्च ऑटो एक्सपो 2025 में किया जाएगा। किआ इस एसयूवी के जरिए अपनी दो अन्य एसयूवी मॉडल्स, सेल्टॉस और सोनेट, के बीच के ग्राहकों को आकर्षित करने की योजना बना रही है। यह एक बी सेगमेंट की एसयूवी है, जिसकी बुकिंग 3 जनवरी 2025 से शुरू होगी, और इसकी डिलीवरी फरवरी 2025 से शुरू हो जाएगी। सिरोस को एचटीके, एचटीके (ओ),एचटीके प्लस, एचटीके एचटीएक्स प्लस औरएचटीएक्स प्लस(ओ) के छह वैरिएंट्स में उपलब्ध कराया जाएगा, और यह 8 आकर्षक रंगों में उपलब्ध होगी। डिजाइन के मामले में, किआ ने एसयूवी सिरोस को खासतौर पर स्पेशियस बनाने की कोशिश की है। इस एसयूवी की फ्रंट डिजाइन को बेहद बोल्ड और आकर्षक बनाया गया है, जिसमें वर्टिकल आइस क्यूब एलईडी हेडलाइट्स और बड़ा एलईडी डीआरएल शामिल हैं। इसके फ्रंट में शानदार लुक के साथ हाई सेट बोनट, बंपर में सिल्वर एलिमेंट्स और एडवांस ड्राइविंग असिस्टेंस सिस्टम के लिए रडार मॉड्यूल दिए गए हैं। इसकी साइड प्रोफाइल में लंबी रूफ टेल, ब्लैक बॉडी क्लैडिंग और 17 इंच के अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। इसके अलावा, डबल पैन पैनोरमिक सनरूफ और केबिन में 30 इंच का पैनोरमिक स्क्रीन सेटअप भी उपलब्ध है, जो वायरलेस एंड्रॉयड ऑटो और एप्पल कारप्ले कनेक्टिविटी को सपोर्ट करता है। सेफ्टी फीचर्स की बात करें तो किआ ने सिरोज में 6 स्टैंडर्ड एयरबैग्स और 360 डिग्री कैमरा सुविधा दी है।

इसके अलावा, इसमें ऑटो होल्ड के साथ इलेक्ट्रिक पार्किंग ब्रेक की भी सुविधा है। इंजन के विकल्प में, किआ सिरोस में 1.5 लीटर डीजल इंजन दिया गया है, जो 116 बीएचपी की पावर और 250 एनएम का टॉर्क जेनरेट करता है। पेट्रोल विकल्प में 1.0 लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन मिलेगा, जो 120 बीएचपी की पावर और 172 एनएम का टॉर्क जेनरेट करता है। यह एसयूवी 6-स्पीड मैनुअल, 7-स्पीड डीसीटी और 6-स्पीड टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन गियरबॉक्स के साथ उपलब्ध होगी।

एलआईसी के पास लावारिस पड़े 880 करोड़ रुपए!

- अब तक लगभग 3,72,282 बीमा पॉलिसियां ली गईं, लेकिन मैच्योरिटी पर पैसे निकलवाए नहीं

नई दिल्ली ।

भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में बिना दावा किए पड़ी परिपक्वता राशि जो मिली थी, वह 880.93 करोड़ रुपये थी। इस समय तक लगभग 3,72,282 पॉलिसीधारकों ने बीमा पॉलिसियां ली थीं, लेकिन मैचे योरिटी पर पैसे निकलवाए नहीं। अगर किसी पॉलिसीधारक ने तीन साल से अधिक समय तक कोई लाभ नहीं प्राप्त किया तो वो राशि बिना दावा की गई मानी जाती है और अगर पैसा 10 साल से अधिक समय तक बिना दावा के रह जाता है, तो वह पूरी राशि सरकार के सीनियर सिटिजन वेलफेयर फंड में स्थानांतरित कर दी जाती है। लेकिन अनक्लेम्ड राशि होने के पीछे कई कारण हो सकते हैं। एलआईसी अपने पॉलिसीधारकों तक पहुँचने और अनक्लेम्ड राशियों का निपटारा करने के लिए जागरूकता अभियानों और डिजिटल माध्यमों का सहारा ले रही है। अगर आपके भी किसी एलआईसी पॉलिसी पर अनक्लेम्ड पैसा है, तो आपको एलआईसी कार्यालय जाकर आवश्यक दस्तावेज जमा करने होंगे। सभी एलआईसी पॉलिसीधारकों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी पॉलिसी की स्थिति को समय-समय पर जांचते रहें ताकि उनकी मेहनत की कमाई सुरक्षित रहे और उन्हें अपने भविष्य के लिए भी सुरक्षा मिले। अब एलआईसी ने जनता को ऑनलाइन भी सुविधा दी है, जिससे कोई भी पॉलिसेधारक घर बैठे अपनी पॉलिसी की स्थिति जान सकता है।

गरीबों की मदद के लिए चावल पर जीएसटी घटायाः निर्मला सीतारमण

- चावल पर कर दर को 18 से 5 प्रतिशत कम किया जाएगा

जैसलमेर ।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को जीएसटी परिषद की 55वीं बैठक के बाद बड़े फैसले किए। उन्होंने घोषित किया कि चावल पर कर दर को 18 से 5 प्रतिशत कम किया जाएगा। इसके साथ ही, जीवन रक्षक जीन थेरेपी और एसएएम मिसाइलों के लिए उपयोग होने वाले पुर्जों पर जीएसटी छूट की अवधि भी बढ़ा दी गई है। सभी एसएएम मिसाइलों के निर्माण में उपयुक्त पुर्जों को जीएसटी से छूट दी जाएगी। उन्होंने छोटे व्यवसायों की मदद के लिए कई और कदम उठाए, जैसे 2,000 रुपये से कम के लेन-देन के लिए छूट देना। वित्त मंत्री ने महसूस किया कि ई-कॉमर्स कंपनियों और खाद्य पदार्थों की डिलीवरी सेवाओं पर जीएसटी को लेकर और चर्चा होनी चाहिए। इसके साथ ही, बैठक में और विस्तृत चर्चा की जाएगी। वित्त मंत्री ने उधारकर्ताओं के लिए भी शुल्कों में कई बदलाव की घोषणा की। उन्होंने संशोधन के लिए एक अवधारणा नोट को मंजूरी दी और वस्तुओं की परिभाषा को स्पष्ट करने के उद्देश्य के साथ खुदरा बि के लिए पहले से पैक और लेबल वाली वस्तुओं की परिभाषा में संशोधन किया। इन सभी निर्णयों से सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में सुधार करने का निशाना साबित किया है।

रॉयल एनफील्ड की 3 नई बाइक्स जल्द होगी लांच

नई दिल्ली ।

रॉयल एनफील्ड कंपनी भारतीय बाजार में तीन नई बाइक्स को लॉन्च करने की तैयारी में है। अगर आप भी रॉयल एनफील्ड की नई बाइक खरीदने का प्लान बना रहे हैं, तो आपके लिए यह एक बेहतरीन मौका हो सकता है। पहली बाइक है रॉयल एनफील्ड क्लासिक 650, जो क्लासिक 350 की सफलता को देखते हुए लॉन्च की जाएगी। इस बाइक में 648सीसी का पैरेलल ट्विन इंजन मिलेगा, जो 47.4 बीएचपी की पावर और 52.4 एनएम का टॉर्क जेनरेट करेगा। यह बाइक शानदार परफॉर्मेंस के साथ क्लासिक डिज़ाइन में होगी और 2025 की पहली तिमाही में लॉन्च होने की उम्मीद है। दूसरी बाइक है रॉयल एनफील्ड बुलेट 650, जो रॉयल एनफील्ड की आइकॉनिक बुलेट सीरीज़ का बड़ा वर्जन होगी। इसमें 648सीसी ट्विन-सिलेंडर इंजन होगा, जो बेहतरीन राइडिंग अनुभव देगा। इसकी टेस्टिंग भारतीय सड़कों पर हो चुकी है, और इसकी लॉन्चिंग को लेकर उम्मीदें बहुत ज्यादा हैं। तीसरी बाइक है रॉयल एनफील्ड हिमालयन 650, जो एडवेंचर बाइक प्रेमियों के लिए एक शानदार विकल्प साबित हो सकती है।

जीएसटी काउंसिल की बैठक में पॉपकॉर्न पर लगेंगे 3 तरह के टैक्स

- पॉपकार्न पर फ्लेवर के अनुसार लगाया जाएगा टैक्स

नई दिल्ली । केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के नेतृत्व में जीएसटी काउंसिल की 55वीं बैठक जैसलमेर में आयोजित हुई, जहां पॉपकॉर्न पर नए टैक्स रेट्स के फैसले लिए गए। इसमें काउंसिल ने पॉपकॉर्न को तीन विभिन्न जीएसटी स्लैब में शामिल करने की योजना बनाई है, जो उसके फ्लेवर के अनुसार होंगे। टैक्स की विवरण इस प्रकार हैं- 1. साधारण नमक और मसालों से तैयार किया गया पॉपकॉर्न (पैकेज्ड और लेबल्ड न हो) पर 5 फीसदी जीएसटी लागू होगा। 2. पैकेज्ड और लेबल्ड साधारण नमक और मसालों वाले पॉपकॉर्न पर 12 फीसदी टैक्स लगेगा। 3. चीनी या सुगर फ्लेवर वाले पॉपकॉर्न पर 18 फीसदी जीएसटी लागू होगा। पॉपकॉर्न का व्यापार न केवल भारत में बल्कि दुनियाभर में भी बड़ा है। बीते साल में भारत में पॉपकॉर्न का व्यापार लगातार बढ़ रहा है और एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में इसका मार्केट 8 अरब डॉलर से अधिक का हो गया है। जीएसटी काउंसिल की बैठक में अन्य फैसले भी लिए गए, जिसमें पुरानी कारों पर 18 फीसदी जीएसटी, फोर्टिफाइड चावल पर 5 फीसदी जीएसटी और जीन थेरेपी के लिए पूरी छूट शामिल हैं। हेल्थ इंश योरेंस और लाइफ इंश योरेंस पर जीएसटी की दर कम करने के प्रस्ताव टल गए हैं, जबकि जोमेटो और स्विगी पर ऑनलाइन फूड ऑर्डर करने पर भी कोई राहत नहीं मिली। कुल मिलाकर जीएसटी काउंसिल की बैठक ने व्यापारिक मामलों को ध्यान में रखते हुए पॉपकॉर्न पर टैक्स में बड़े बदलाव किए हैं, जो आम जनता को सीधे असर पहुंचा सकते हैं।

इस साल आईपीओ बाजार में 90 कंपनियों ने रिकॉर्ड 1.6 लाख करोड़ जुटाए

- निवेशकों ने दीर्घकालिक निवेश के लिए भी कंपनियों में विश्वास जताया

मुंबई । आर्थिक वृद्धि की रफ्तार और अनुकूल बाजार परिस्थितियों के साथ, 2024 में आईपीओ के बाजार में भारी चल रही है। इस साल कंपनियों ने आईपीओ के माध्यम से भारी राशि जुटाई है। इस वृद्धि में निवेशकों का भरोसा और नियामकीय ढांचे में सुधार का महत्वपूर्ण योगदान है। साल के दौरान कंपनियों ने आईपीओ के जरिये रिकॉर्ड 1.6 लाख करोड़ रुपये की राशि जुटाई है। एक्सचेंज के पास उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, 2024 में 90 आईपीओ आए जिनके जरिये सामूहिक रूप से 1.6 लाख करोड़ रुपये जुटाए गए। माना जा रहा है कि अगला साल भी आईपीओ के लिए काफी अच्छा रहेगा। आईपीओ के लिए असाधारण रहा यह साल न केवल निर्गम लाने वाली कंपनियों के भरोसे को दर्शाता है, बल्कि इससे निवेशकों के विश्वास का भी पता चलता है। आईपीओ ने न केवल निगमों के भरोसे को बल्कि निवेशकों के विश्वास को भी प्रमाणित किया है। निवेशकों ने सिर्फ लाभ कमाने के लिए नहीं बल्कि दीर्घकालिक निवेश के लिए भी कंपनियों में विश्वास जताया है। हुंदै मोटर इंडिया का ऐतिहासिक 27,870 करोड़ रुपये का आईपीओ इस साल का सबसे बड़ा आईपीओ हुआ है। छोटी, मझोली और बड़ी कंपनियों ने साझेदारी जुटाते हुए धन जुटाया है। निवेशकों की बढ़ती भागीदारी के साथ आईपीओ के बाजार में आने वाले साल में भी तेजी की संभावना है। साल के तैयारी में हैं कंपनियां, जो आईपीओ के माध्यम से और अधिक धन जुटाने की सोच रही हैं। जब बाजार विश्लेषकों का यह मानना है कि 2025 में आईपीओ से जुटने वाली राशि अब कि आंकड़ों को पार कर सकती है, तो निवेशकों की उम्मीदें और भी ऊंचाई पर चढ़ गई हैं। आगामी साल में भी आईपीओ बाजार ऐसे ही गतिविधियों में आगे बढ़ते रहने की संभावना है।

वैश्विक रुझान, एफआईआई की गतिविधियां तय करेंगी शेयर बाजार की दिशा : विश्लेषक

- रुपये-डॉलर का रुख और कच्चे तेल के दाम भी बाजार को प्रभा वित करेंगे

मुंबई ।

इस सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों की दिशा वैश्विक रुझान और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की गतिविधियों से तय होगी। विश्लेषकों ने कहा है कि इस कम कारोबारी सत्र वाले सप्ताह में घरेलू मोर्चे पर कोई प्रमुख घटनाक्रम नहीं है। ऐसे में बाजार भागीदारों की नजरें वैश्विक संकेतकों पर रहेगी। बाजार के एक वरिष्ठ शोध विश्लेषक ने कहा कि आगे की ओर देखें तो घरेलू मोर्चे पर किसी बड़े संकेतक का अभाव है। हालांकि, कुछ वैश्विक संकेतक बाजार को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इसमें अमेरिका में बॉन्ड प्रतिफल, डॉलर इंडेक्स का प्रदर्शन, बेरोजगारी दावे और नए घरों की बिक्री के आंकड़े शामिल हैं। उन्होंने कहा कि बाजार में उतार-चढ़ाव का सिलसिला चल रहा है। साथ ही विदेशी संस्थागत निवेशक लगातार बिकवाल बने हुए हैं। ऐसे में निवेशकों द्वारा सतर्क रुख अपनाए जाने की उम्मीद है। हालिया कमजोरी के रुख के बावजूद बाजार का दृष्टिकोण सतर्क रूप से आशावादी बना हुआ है। हालांकि, एफआईआई की लगातार बिकवाली ने बाजार पर दबाव बढ़ा दिया है। बाजार के जानकारों ने कहा कि एफआईआई का रुख अचानक से लिवाल से बिकवाल का हो गया, जिससे बाजार प्रभावित हुआ है। विश्लेषकों ने कहा कि रुपये-डॉलर का रुख और वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के दाम भी बाजार को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। यह सप्ताह कम कारोबारी सत्रों का रहेगा।

बाजार भागीदारों की निगाह एफआईआई के प्रवाह और वैश्विक बाजारों के प्रदर्शन पर रहेगी। बाजार के जानकारों ने कहा कि भारतीय बाजार में कमजोरी बने रहने की संभावना है। उतार-चढ़ाव के बीच बाजार भागीदारों की निगाह वैश्विक संकेतकों पर रहेगी। उन्होंने कहा कि त्योहारी सीजन आ रहा है और वैश्विक बाजारों में दो-तीन दिन अवकाश रहेगा। ऐसे में स्थानीय बाजार में भी गतिविधियां सुस्त रहेंगी।

केंद्र सरकार और एडीबी ने नीति-आधारित ऋण पर हस्ताक्षर किए

भारत के लॉजिस्टिक्स सेक्टर में एक महत्वपूर्ण उन्नति की उम्मीद

नई दिल्ली । भारत सरकार और एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए मल्टीमॉडल और एकीकृत लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम कार्यक्रम (स्माइल) के तहत ऐतिहासिक नीति-आधारित ऋण पर हस्ताक्षर किए। इस कार्यक्रम के माध्यम से भारत के लॉजिस्टिक्स सेक्टर में एक महत्वपूर्ण उन्नति की उम्मीद है। सरकारी स्तर पर वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग और एशियन डेवेलपमेंट बैंक मिलकर भारत को ईफी सिएंट, रेसीलेंट और सस्टेने बिल लॉजिस्टिक्स सिस्टम में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। मल्टीमॉडल और एकीकृत लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम कार्यक्रम एक अहम नीति-आधारित पहल है जो लॉजिस्टिक्स सुधारों के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाता है। इसके अंतर्गत, मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्बाध एकीकरण के लिए राष्ट्रीय, राज्य और शहर स्तर पर क्षमताएँ विकसित की जाएगी, वेयरहाउसिंग का मानकीकरण होगा, व्यापार लॉजिस्टिक्स में सुधार किया जाएगा, और प्रदूषण को कम करते हुए दक्षता बढ़ाई जाएगी। इन सुधारों से यह आशा है कि लॉजिस्टिक्स लागत में कमी आएगी, परिचालन दक्षता में सुधार होगा, और रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। इसके माध्यम से भारत को विश्वस्तरीय लॉजिस्टिक्स सेवाएं प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण धारा मिलेगी।

सेंसेक्स की प्रमुख 10 कंपनियों का मार्केट कैप 4.95 लाख करोड़ घटा

- टीसीएस और रिलायंस इंडस्ट्रीज को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ

मुंबई ।

बीते सप्ताह सेंसेक्स की प्रमुख 10 कंपनियों के बाजार मूल्यांकन (मार्केट कैप) में 4,95,061 करोड़ रुपये की गिरावट देखी गई है। शेयर बाजार में मंदड़ियों के रुख के बीच टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और रिलायंस इंडस्ट्रीज को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। बीते सप्ताह टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का बाजार पूंजीकरण 1,10,550.66 करोड़ रुपये घटकर 15,08,036.97 करोड़ रुपये, रिलायंस इंडस्ट्रीज के मूल्यांकन में 91,140.53 करोड़ रुपये की गिरावट आई और यह 16,32,004.17 करोड़ रुपये, पर आ गया।

एचडीएफसी बैंक की बाजार हैसियत 76,448.71 करोड़ रुपये घटकर 13,54,709.35 करोड़ रुपये, भारती एयरटेल की 59,055.42 करोड़ रुपये के नुकसान के साथ 8,98,786.98 करोड़ रुपये, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का बाजार पूंजीकरण 43,909.13 करोड़ रुपये घटकर 7,25,125.38 करोड़ रुपये, आईसीआईसीआई बैंक की बाजार हैसियत 41,857.33 रुपये घटकर 9,07,449.04 करोड़ रुपये, इन्फोसिस का मूल्यांकन 32,300.2 करोड़ रुपये घटकर 7,98,086.90 करोड़ रुपये, भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) का मूल्यांकन 20,050.25 करोड़ रुपये घटकर 5,69,819.04 करोड़ रुपये, हिंदुस्तान यूनिलीवर की बाजार हैसियत 12,805.27 करोड़ रुपये घटकर 5,48,617.81 करोड़ रुपये और आईटीसी का मूल्यांकन 6,943.5 करोड़ रुपये घटकर 5,81,252.32 करोड़ रुपये रह गया। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर बरकरार रही। इसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, भारती एयरटेल, इन्फोसिस, एसबीआई, आईटीसी, एलआईसी और हिंदुस्तान यूनिलीवर का स्थान रहा।

घरेलू प्रवासियों की संख्या में कमी आने का अनुमानः ईएसी-पीएम

- 2023 में घरेलू प्रवासियों की संख्या 40.20 करोड़ रही

नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार समिति (ईएसी) की एक रिपोर्ट ने देश में घरेलू प्रवासियों की संख्या में 2011 से 2023 तक 12 प्रतिशत की कमी का अनुमान लगाया है। रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में घरेलू प्रवासियों की संख्या 40.20 करोड़ रही, जो 2011 की जनगणना के अनुसार 11.78 प्रतिशत कम है। ईएसी-पीएम के खास पत्र में इस विषय पर ध्यान दिया गया है। एक पूर्व चेयरमैन ने लिखा है कि यह घटती प्रवासन दर वृद्धि की ओर एक सकारात्मक कदम है। यह बेहतर आर्थिक अवसरों के कारण हो रहा है और इससे देश को आर्थिक वृद्धि में सामर्थ्य मिलेगा। जनगणना 2011 के अनुसार केवल पांच राज्यों में ही कुल प्रवासियों का 48 प्रतिशत हिस्सा है, जिसमें राज्य के भीतरी प्रवासी भी शामिल हैं। प्रवासी संख्या में कमी का अनुमान देश में ला-गई अच्छी सेवाओं और शिक्षा के साथ-साथ उच्च आवृत्ति डेटा का उपयोग करने का परिणाम है। इस स्थिति में, देश को और भी अधिक उन्नति के लिए घरेलू प्रवासियों की सेवाएं सुधारने में महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता हो सकती है। इससे वे अपने परिवारों को सुधारित जीवन प्रदान करके देश की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दें।

मजबूत होते भारत-कुवैत द्विपक्षीय संबंध

सुनील कुमार महला

प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा ने निस्संदेह कुवैत व भारत के संबंधों को ऊंचाइयों पर पहुंचाने का काम किया है।उनकी यह यात्रा निश्चित ही खाड़ी क्षेत्र में एक जिम्मेदार साझेदार के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत करेगी। सच तो यह है कि भारतीय प्रधानमंत्री का कुवैत दौरा भारत और खाड़ी देशों के बीच बढ़ते संबंधों की यात्रा में एक अहम मील का पत्थर साबित होगा। यह दौरा कूटनीति, व्यापार और समुदाय संवाद की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है जो भारत और कुवैत के द्विपक्षीय रिश्तों को जहां एक ओर मजबूती प्रदान करेगा वहीं दूसरी ओर यह दोनों देशों के बीच भविष्य में सहयोग की रूपरेखा भी तय करेगा।

हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ऐतिहासिक कुवैत यात्रा से दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूती मिली है।चार दशक से अधिक समय में इस खाड़ी देश(कुवैत) की यात्रा करने वाले नरेंद्र मोदी पहले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो वर्ष 1981 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के बाद यह यात्रा 43 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली कुवैत यात्रा थी। भारत और कुवैत के संबंध हमेशा से ही मैत्रीपूर्ण रहे हैं और वर्ष 1961 में जब कुवैत अंग्रेजी शासन से आजाद हुआ, तब भारत उसके साथ संबंध बनाने वाले शुरूआती देशों में शामिल था। कहना गलत नहीं होगा कि लंबे समय बाद भारत के प्रधानमंत्री की कुवैत यात्रा से भारत का पश्चिमी एशियाई जुड़ाव और अधिक सुनिश्चित तथा मजबूत हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी और कुवैत के अमीर शेख नवाफ अल-अहमद अल-जाबेर अल- सबा की बातचीत से यह उजागर हुआ है कि भारत और कुवैत कूटनीतिक और आर्थिक रिश्तों को मजबूत करने के लिए हमेशा तत्पर और तैयार हैं।

इस यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री मोदी को कुवैत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ मुबारक अल-कबीर' से सम्मानित किया जाना दोनों देशों के पारस्परिक सम्मान का सूचक है। वास्तव में यह कदम दोनों देशों के रिश्तों की गहराई और महत्व को दशार्ता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि दोनों देशों के बीच आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, परस्पर सौहार्द और सहयोग की भावना इनके बीच गहरी रणनीतिक साझीदारी का रास्ता खोलते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कुवैत यात्रा आर्थिक संबंधों के साथ ही सांस्कृतिक संबंधों को भी मजबूत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण रही। वास्तव में, अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने ऐसे अनेक लोगों से मुलाकात की जिन्होंने भारत-कुवैत संबंधों को मजबूत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनमें अब्दुल्ला अल-बारून भी शामिल हैं, जिन्होंने एक अनुवादक के रूप में भारतीय महाकाव्यों 'रामायण' एवं 'महाभारत' का अरबीभाषियों के लिए अनुवाद किया है। सच तो यह है कि भारत के प्रधानमंत्री की हालिया कुवैत यात्रा ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों के एक नए युग की शुरूआत की है। इस दौरान दोनों देशों के बीच हुए समझौते और रणनीतिक सहमतियां पूरे क्षेत्र की स्थिरता के लिहाज से भी अहम हैं। महत्वपूर्ण है कि कुवैत यात्रा के दौरान भारत और कुवैत के बीच रक्षा, खेल, संस्कृति और सौर क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच महत्वपूर्ण समझौते हुए हैं, जो दोनों देशों के बीच संबंधों को निश्चित ही और अधिक मजबूती और प्रगाढ़ता प्रदान करेंगे। गौरतलब है कि कुवैत भारत का प्रमुख तेल आपूर्तिकर्ता रहा है और आज भी है। आंकड़े बताते हैं कि कुवैत, भारत का छठा सबसे बड़ा कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता है, जो देश की ऊर्जा आवश्यकताओं को तीन प्रतिशत तक पूरा करता है। यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि इससे यह आपूर्ति सुरक्षित होने के साथ ही खाड़ी क्षेत्र में भारत की समग्र ऊर्जा सुरक्षा भी सुनिश्चित हो सकेगी। साथ ही साथ, कुवैत के साथ रक्षा सहयोग भारत की 'ऐक्ट बेस्ट नीति' को भी निश्चित ही मजबूती प्रदान करेगा। आज कुवैत में बहुत से भारतीय निवास करते हैं और वहां की सामाजिक संरचना में भारतीयों का स्थान प्रवासियों के रूप में बहुत ही महत्वपूर्ण है। भारतीयों ने कुवैत को इंजीनियरिंग व शिक्षा, मेडिकल समेत अनेक क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण और अहम् योगदान दिया है। कुवैत भी बरसों-बरसों से भारत का एक महत्वपूर्ण ऊर्जा सप्लायर रहा है, जबकि अनेक भारतीय विशेषज्ञ और भारतीय श्रमशक्ति कुवैत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसी बीच, कुछ समय पहले ही कुवैत नेशनल रेडियो द्वारा साप्ताहिक हिंदी रेडियो कार्यक्रम की शुरूआत किया जाना निश्चित रूप से यह दशार्ता है कि कुवैत के लिए प्रवासी भारतीय कितने महत्वपूर्ण और अहम् हैं। इतना ही नहीं, गत जून में कुवैत की एक इमारत में आग लगने से हुई भारतीयों की मौतों के बाद कुवैत ने जिस तरह का सहयोग दिया, वह भी दोनों देशों के मजबूत संबंधों को ही दशार्ता है।

अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने प्रवासियों को बेहतर वाणिज्यिक सेवाओं और श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा का सकारात्मक व ठोस आश्वासन दिया है, जो विदेशों में अपने नागरिकों के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दशार्ता है। निश्चित ही इससे कुवैत में प्रवासी भारतीयों के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होगी। यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि पीएम मोदी की इस ऐतिहासिक दो दिवसीय कुवैत यात्रा के दौरान भारत और कुवैत ने संबंधों को 'रणनीतिक साझेदारी' तक बढ़ाने पर सहमति जताई है और रक्षा क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को नियमित बनाने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यह और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि ऊर्जा सहयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से दोनों पक्षों ने इस बात पर जोर दिया है कि वे अपने-अपने देशों की कंपनियों को तेल और गैस के अन्वेषण तथा उत्पादन, रिफाइनिंग, इंजीनियरिंग सेवाओं, और 'पेट्रोकेमिकल' उद्योगों में सहयोग बढ़ाने के लिए समर्थन प्रदान करेंगे।

अंत में, यही कहूंगा कि प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा ने निस्संदेह कुवैत व भारत के संबंधों को ऊंचाइयों पर पहुंचाने का काम किया है।उनकी यह यात्रा निश्चित ही खाड़ी क्षेत्र में एक जिम्मेदार साझेदार के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत करेगी। सच तो यह है कि भारतीय प्रधानमंत्री का कुवैत दौरा भारत और खाड़ी देशों के बीच बढ़ते संबंधों की यात्रा में एक अहम मील का पत्थर साबित होगा। यह दौरा कूटनीति, व्यापार और समुदाय संवाद की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है जो भारत और कुवैत के द्विपक्षीय रिश्तों को जहां एक ओर मजबूती प्रदान करेगा वहीं दूसरी ओर यह दोनों देशों के बीच भविष्य में सहयोग की रूपरेखा भी तय करेगा।

संपादकीय

प्रत्यर्पण पर सवाल

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने भारत को एक कूटनीतिक संदेश भेज कर अब्दुस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग की है। भारत और बांग्लादेश के बीच 2013 में सीमाओं पर उग्रवाद और आतंकवाद से निपटने के लिए प्रत्यर्पण संधि हुई थी। दोनों देशों ने वांछित भगोड़ों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया को और अधिक सहज बनाने के उद्देश्य से 2016 में संधि को संशोधित किया। लेकिन दोनों देशों के बीच प्रत्यर्पण संधि लागू होने का यह अर्थ नहीं है कि भारत शेख हसीना को अभियोजन का सामना करने के लिए बांग्लादेश की सरकार को सौंप देगा। इस संधि में से प्रावधान हैं, जिसके आधार पर भारत शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग को ठुकरा सकता है। संधि का अनुच्छेद 8 में यह प्रावधान है कि यदि आरोप भले ही राजनीतिक प्रकृति का है, लेकिन न्याय के हित में सद्भावना पूर्ण नहीं लगाया गया है अथवा यदि इसमें सैन्य अपराध शामिल हैं, जिन्हें सामान्य अपराधी कानून संहिता के तहत अपराध नहीं माना जाता है तो इस स्थिति में प्रत्यर्पण की मांग को अस्वीकार किया जा सकता है। भारत को इस आधार पर शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग को अस्वीकार कर देना चाहिए। वास्तव में बांग्लादेश का वर्तमान सत्ता तंत्र स्वयं में वैध नहीं है। वहां अगस्त की शुरूआत में छात्रों को मोहरा बनाकर इस्लामी कट्टरपंथियों ने शेख हसीना की सरकार को अवैध तरीके से बेदखल कर दिया। इस पूरे घटनाक्रम में अमेरिका, पश्चिमी देश और वहां की सेना ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कहने के लिए अंतरिम सरकार के मुखिया मोहम्मद युनूस एक उदारवादी और लोकतांत्रिक व्यक्ति हैं, लेकिन वास्तविक अर्थों में वह एक कठपुतली हैं जो इस्लामी कट्टरपंथियों के इशारे पर नाच रहे हैं। आज के आधुनिक युग में लोकतंत्र के प्रतिष्ठित मूल्य समानता, धर्मनिरपेक्षता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि में धार्मिक कट्टता का कोई स्थान नहीं है। जिन कट्टरपंथी तत्वों से बांग्लादेश की वर्तमान सत्ता निर्मित हुई है उसे हतोत्साहित किया जाना चाहिए। बांग्लादेश की धार्मिक अल्पसंख्यक विरोधी रु झान ने आखिर में अमेरिका की भी चिंता बढ़ा दी है। वहां के सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवन ने यूनुस से हिन्दुओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा को तुरंत रोकने का आग्रह किया है। ये सभी ऐसे कारण हैं जो हसीना के प्रत्यर्पण को ठुकराने के पर्याप्त आधार उपलब्ध कराते हैं।

चिंतन-मनन

मुक्ति की तलाश

जापान में नानहेन नामक एक परम ज्ञानी फकीर थे। एक दिन एक व्यक्ति उनके पास पहुंचकर बोला, मैं संन्यास लेना चाहता हूं। इसके लिए मैंने अपने घर-परिवार, रिश्ते-नाते सब को तिलांजलि दे दी है। फकीर ने पूछा, क्या तुम बिल्कुल अकेले हो? तुम्हारे साथ वास्तव में कोई नहीं है। व्यक्ति बोला, आप मेरे आगे-पीछे देख लीजिए, आपको कोई नहीं मिलेगा। फकीर बोले, अपनी आंखें बंद करो। अंदर झांककर देखो कि वहां कोई और तो नहीं है? जाओ, कुछ देर के लिए वटवृक्ष की छाया में बैठकर सोचो। थोड़ी देर बाद आना।

वह व्यक्ति वटवृक्ष की छाया में बैठकर ध्यान करने लगा। जब उसने आंखें बंद कीं तो उसे अपने वृद्ध माता-पिता, पत्नी और बच्चों की छवि नजर आने लगी। वह चिंतित हो गया। घबराकर उसने अपनी आंखें खोलीं तो फकीर को अपने पास खड़ा पाया। व्यक्ति ने कहा, मैं तो अपना परिवार, नाते-रिश्ते सब पीछे छोड़ आया था, लेकिन यहां पर आंखें बंद करते ही उनकी छवि सामने घूम रही है। इस पर फकीर बोले, ध्यानमग्न होकर उन व्यक्तियों को अपने दिमाग से निकालने का प्रयत्न करो। कुछ देर बाद मेरे पास आना। दो घंटे बाद युवक ने फकीर का दरवाजा खटखटाया तो फकीर बोले, कौन है? युवक बोला, मैं हूं। फकीर ने कहा, अभी भी तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारा मैं तुम्हारे साथ है। अगर तुम इस मैं और भीड़ को छोड़ सको तो फिर यहां आने की जरूरत ही नहीं रह जाएगी। तुम मैं से मुक्ति पा लो तो फिर संन्यास लेने का भी कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। व्यक्ति ने फकीर की बात समझ ली।

श्याम बेनेगल का जाना नये सिनेमा का अंत

ललित गर्ग

बालीवुड में समानांतर सिनेमा के जनक, 'मंथन' से लेकर 'वेलडन अब्बा' तक जिनके फिल्मी सफर को एक युग कहा जा सकता है, बेहद कलात्मक, बेहद संजीदा, बेहद संवेदनशील, ऐसे बेमिसाल फिल्मकार श्याम बेनेगल का 90 वर्ष की उम्र में जाना अत्यंत दुखद ही नहीं है, एक सार्थक भारतीय सिनेमा एवं गौरवशाली टेलीविजन युग का अंत है। दादा साहब फाल्के के अलावा सात राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित बेनेगल ने हिंदी सिनेमा को नसीरूद्दीन शाह, ओमपुरी, स्मिता पाटिल, अमरीश पुरी, अनंत नगा जैसे प्रख्यात कलाकार दिए। उनकी फिल्मों के साथ भारतीय सिनेमा का एक नया और अविस्मरणीय दौर शुरू हुआ, जिसने भारतीय सिनेमा को एक नई ऊंचाई प्रदान की। पिता के कैमरे से 12 साल की उम्र में पहली फिल्म बनाने वाले बेनेगल ने उस समय अहसास कराया कि भारतीय सिनेमा में एक विराट प्रतिभा मोर्चा संभाल चुकी है, जिसके काम की गूंज उनकी जीवन में ही नहीं, बल्कि भविष्य में लम्बे समय तक देश और दुनिया को सुनाई देगी। जब-जब हमने बहुत ठहरकर, बहुत संजीदगी के साथ उनके काम को देखा तो अनायास ही हमें महसूस हुआ कि वे अपने आप में कितना कुछ समेटे हुए थे, अद्भुत, यादगार एवं विलक्षण। सिनेमा दर्शकों का ऐसे महान फिल्मकार की फिल्मों से अनभिज्ञ रहना इस संसार में रहते हुए भी सूर्य, चन्द्रमा एवं तारों को न देखने जैसा है।

श्याम बेनेगल का जन्म 14 दिसम्बर 1934 को हैदराबाद में हुआ। हैदराबाद की ओसमानिया यूनिवर्सिटी से इकोनोमिक्स में एमए करने के बाद बेनेगल ने आगे जाकर हैदराबाद फिल्म सोसायटी की स्थापना की। उनका संबंध कोंकणी बोलने वाले चित्रपुर सारस्वत परिवार से था। उनका असली नाम श्याम सुंदर बेनेगल था। श्याम बेनेगल की शादी नीरा बेनेगल से हुई थी और उनकी एक बेटी पिया बेनेगल है, जो एक कॉस्ट्यूम डिजाइनर हैं, जिन्होंने कई फिल्मों के लिए भी काम किया है। श्याम ने बचपन में ही अपने फोटोग्राफर पिता श्रीधर बी. बेनेगल के कैमरे से पहली फिल्म शूट की थी। 1962 में उन्होंने पहली डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'घर बैठा गंगा' बनाई, जो गुजराती में थी। बेनेगल को भारत सरकार द्वारा 1976 में पद्मश्री और 1991 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उनकी सफल फिल्मों में मंथन, जुबैदा और सरदारी बेगम शामिल हैं। जिनमें जीवन के कठोर यथार्थ को बेनेगल ने सिनेमा-शिल्प में, महीन अर्थवत्ता के साथ नाटकीयता के धनीभूत आशयों में अभिव्यक्ति दी, प्रस्तुति दी है। उनकी फिल्मों में एक ऐसी सार्वजनीनता है, जो धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, देशी-विदेशी सभी को बहुत भीतर तक स्पर्श करती रही है।

श्याम बेनेगल की आखिरी फिल्म 'मुजीबः द मेकिंग ऑफ ए नेशन' थी, जिसका उन्होंने निर्देशन किया था। इस फिल्म ने भारत ही नहीं, बल्कि बांग्लादेश में भी सुर्खियां बटोरीं। यह फिल्म बांग्लादेश के संस्थापक शेख मुजीबुर्रहमान पर आधारित थी, जो बांग्लादेश के राष्ट्रपति भी थे। उनकी जिंदगी पर बनी फिल्म ने बांग्लादेश में 2024 में तख्तापलट करवा दिया था और शेख हसीना को इस्तीफा देना पड़ा था। यह फिल्म दिखाती है कि मुजीबुर्रहमान के राजनीतिक सफर की शुरूआत कैसे हुई थी, उन्होंने किस तरह बांग्लादेश की स्वाधीनता के लिए काम किया। इस फिल्म को राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और बांग्लादेश फिल्म विकास निगम ने मिलकर बनाया था। यह फिल्म जहां एक राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को प्रस्तुति दी, वहीं दो राष्ट्रों के आपसी संबंधों को भी गहराई से उजागर किया। इस फिल्म को बंगाली के साथ-साथ हिन्दी भाषा में भी रिलीज किया गया था। इस फिल्म का एलान करते हुए बेनेगल ने बताया था कि शेख मुजीबुर्रहमान के जीवन को पर्दे पर उतारना उनके लिए एक कठिन काम रहा है। उन्होंने कहा था, यह फिल्म मेरे लिए एक बहुत ही भावनात्मक फिल्म है। मुजीब के किरदार को बेबाकी से पेश किया है, वे भारत के बहुत अच्छे दोस्त रहे। उनकी यह फिल्म ही नहीं, बल्कि हर फिल्म ने एक इतिहास निर्मित किया। क्योंकि यह उनकी ही प्रतिभा थी कि वे लगातार काम करने की रणनीतियों में बदलाव लाते रहे और फिल्म-निर्माण को एक विराट फलक तक ले जाते रहे। भारतीय सिनेमा के लगभग सौ साला इतिहास में बेनेगल एक बड़े वटवृक्ष की भांति दिखाई देते हैं।

भारतीय सिनेमा को विश्व में नई और अद्वितीय पहचान दिलाने में बेनेगल का अविस्मरणीय योगदान था। बेनेगल की पहली चार फीचर फिल्मों- अंकुर (1973), निशांत (1975), मंथन (1976) और भूमिका (1977)- ने उन्हें उस दौर की नई लहर फिल्म आंदोलन का अग्रणी बना दिया। बेनेगल की मुस्लिम महिला पर आधारित फिल्में मम्मो (1994), सरदारी बेगम (1996) और जुबैदा (2001) सभी ने हिंदी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीते। 1959 में, उन्होंने मुंबई स्थित विज्ञापन एजेंसी लिंटास एडवरटाइजिंग में कॉपीराइटर के रूप में काम करना शुरू किया, जहाँ वे धीरे-धीरे क्रिएटिव हेड बन गए। 1963 में एक अन्य विज्ञापन एजेंसी के साथ कुछ समय तक काम किया। इन वर्षों के दौरान, उन्होंने 900 से अधिक प्रायोजित वृत्तचित्र और विज्ञापन फिल्मों का निर्देशन किया। 1966 और 1973 के बीच बेनेगल ने पुणे स्थित भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान में पढ़ाया और दो बार संस्थान के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उनके शुरूआती वृत्तचित्रों में से एक 'ए चाइल्ड ऑफ द स्ट्रीट्स' (1967) ने उन्हें व्यापक प्रशंसा दिलाई। कुल मिलाकर, उन्होंने 70 से अधिक वृत्तचित्र और लघु फिल्में बनाई हैं।

बेनेगल ने 1992 में धर्मवीर भारती के एक उपन्यास पर आधारित सूरज का सातवां घोड़ा फिल्म बनाई, जिसने 1993 में हिंदी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता। 1996 में उन्होंने फातिमा मीर की ह्यद अप्रेंटिसशिप ऑफ ए महात्माह्न पर आधारित पुस्तक द मेकिंग ऑफ द महात्मा पर आधारित एक और फिल्म बनाई। उनके जीवनी सामग्री की ओर इस मोड़ के परिणामस्वरूप नेताजी सुभाष चंद्र बोसः द फॉरगॉटन हीरो, उनकी 2005 में अंग्रेजी भाषा की फिल्म बनी। उन्होंने समर (1999) में बनी फिल्म में भारतीय जाति व्यवस्था की आलोचना की, जिसने सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता। बेनेगल की फिल्म मंडी (1983), राजनीति और वेश्यावृत्ति के बारे में एक व्यंग्यपूर्ण कॉमेडी थी, जिसमें शबाना आजमी और स्मिता पाटिल ने अभिनय किया था। बाद में, 1960 के दशक की शुरूआत में गोवा में पुर्तगालियों के अंतिम दिनों पर आधारित अपनी कहानी पर काम करते हुए, श्याम ने त्रिकाल (1985) में मानवीय रिश्तों की खोज की। इन फिल्मों की सफलता के बाद, बेनेगल को स्टार शशि कपूर का समर्थन मिला, जिनके लिए उन्होंने जुनून (1978) और कलयुग (1981) बनाई। पहली फिल्म 1857 के भारतीय विद्रोह के अशांत काल के बीच की एक अंतरजातीय प्रेम कहानी थी, जबकि दूसरी महाभारत पर आधारित

थी और यह बड़ी हिट नहीं थी, हालांकि दोनों ने क्रमशः 1980 और 1982 में फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार जीते। हजारों अविस्मरणीय किरदार और जिंदगी की असंख्य सच्चाइयों को खोलती उनकी फिल्में भारतीय सिनेमा की एक अमूल्य धरोहर है।

एक समय ऐसा आया जब बेनेगल की फिल्मों को उचित रिलीज नहीं मिली। इसके चलते हुए उन्होंने टीवी की ओर रुख किया जहां उन्होंने भारतीय रेलवे के लिए यात्रा (1986) जैसे धारावाहिकों का निर्देशन किया और भारतीय टेलीविजन पर किए गए सबसे बड़े प्रोजेक्ट में से एक, जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इंडिया पर आधारित 53-एपिसोड का टेलीविजन धारावाहिक 'भारत एक खोज' (1988) का निर्देशन किया। इसी तरह टीवी सीरीयल 'संविधान','कहता है जोकर' एवं 'कथा सागर' का निर्देशन भी किया। इससे उन्हें एक अतिरिक्त लाभ हुआ, क्योंकि वे 1980 के दशक के अंत में धन की कमी के कारण नया सिनेमा आंदोलन के पतन से बचने में कामयाब रहे, जिसके साथ कई नव-यथार्थवादी फिल्म का निमार्ता खो गया। बेनेगल ने अगले दो दशकों तक फिल्में बनाना जारी रखा।

श्याम बेनेगल की फिल्म-प्रतिभा हमें चौंकाती रही है, रोमांचित करती रही है, उकसाती रही है, क्योंकि उनकी फिल्मों की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वे आम लोगों के जीवन की सच्चाई और उनके संघर्षों को प्रामाणिकता एवं जीवंतता के साथ प्रस्तुत करते रहे हैं। भारतीय जिंदगी के रंग बेशुमार है, कला-संस्कृति की अविस्मरणीय धाराएं हैं, अनूठा एवं बेजोड़ इतिहास और उसकी कहानियां भी अनंत-अथाह। बेनेगल का फिल्मी-युग भारत की खिड़की से विश्व को देखने एवं विश्व को भारत दिखाने की पहल का एक स्वर्णिम युग है। भारतीय सिनेमा दिग्दर्शन के इस विशिष्ट हस्ताक्षर श्याम बेनेगल के निधन से निश्चित ही एक सर्जनशील कलासाधक एवं सच्चाई को रूपहले पर्दे पर उतारने वाले सफल एवं सार्थक फिल्मकार का अंत हो गया।

'वीर बाल दिवस' शहादत की स्मृति

हेमेन्द्र क्षीरसागर

गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 9 जनवरी 2022 को यह घोषणा की थी कि, 26 दिसंबर को श्री गुरु गोबिंद सिंह के पुत्रों साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी की शहादत की स्मृति और सम्मान में राष्ट्रीय 'वीर बाल दिवस' मनाया जाएगा। उल्लेखनीय रहे मुगल शासनकाल के दौरान पंजाब में सिखों के 10 वें गुरु, श्री गुरु गोबिंद सिंह के चार बेटे थे। गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की। धार्मिक उत्पीड़न से लोगों की रक्षा करने के उद्देश्य से इसकी स्थापना की गई थी। श्री गुरु गोबिंद सिंह चार बेटेः अजीत, जुझार, जोरावर और फतेह, सभी खालसा का हिस्सा थे। उन चारों को 19 वर्ष की आयु से पहले मुगल सेना द्वारा मार डाला गया था। गुरु गोबिंद सिंह के छोटे बच्चों ने हिंदु धर्म और अपने आस्था की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। बलिदान हिंदु धर्म के लिए सदा-सर्वदा स्मरणीय रहेगा।

स्तुत्य, यह उनके शौर्य, साहस और बलिदान की गाथा को याद करने का भी ह्यवीर बाल दिवसह्न यह जानने का भी अवसर है। कि कैसे उनकी निर्मम शहीदी हुई और धर्म रक्षा, त्याग, समर्पण कैसा रहा? साहिबजादे जोरावर सिंह (9) और फतेह सिंह (7) सिख धर्म के सबसे सम्मानित शहीदों में से हैं। सम्राट औरंगजेब के आदेश पर मुगल सैनिकों द्वारा आनंदपुर साहिब को घेर लिया गया। इस घटना में श्री गुरु गोबिंद सिंह के दो पुत्रों को पकड़ लिया गया। मुसलमान बनने पर उन्हें यातना और मारने की पेशकश की गई थी। इस पेशकश को उन दोनों ने ठुकरा दिया जिस कारण उन्हें मौत की सजा दी गई और उन्हें जिंदा ईंटों की दीवार में चुनवा दिया गया। बाबा अजीत सिंह (17 वर्ष) और बाबा जुझार सिंह (13 साल) साका चमकौर साहिब में लड़ते, हंसते शहीद हुए थे। इन शहीदों ने धर्म के महान सिद्धांतों से विचलित होने के बजाय मृत्यु को प्राथमिकता दी। शहीदी से ही धर्म, आस्था का यशोगान है।

प्रादुर्भाव, श्री गुरु गोबिंद सिंह साहिब जी के सबसे छोटे पुत्र, साहिबजादा बाबा जोरावर सिंह जी और साहिबजादा बाबा फतेह सिंह जी का जन्म आनंदपुर साहिब में हुआ था। चमकौर की लड़ाई के दिन, बाबा जोरावर सिंह, बाबा फतेह सिंह और उनकी दादी को मोरिंडा के अधिकारियों जानी खान और मनी खान रंगहर ने हिरासत में ले लिया। अगले दिन उन्हें सरहिंद भेज दिया गया जहाँ उन्हें किले के ठंडे बुर्ज (ठंडा बुर्ज) में रखा गया। फिर बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह को फौजदार नवाब वजीर खान के सामने पेश किया गया। फिर उसने उन्हें मौत की धमकी दी, लेकिन वे बेखौफ रहे। अंत में मौत की सजा सुनाई गई।

वीरगति, उन्हें दीवार में जिंदा चुनवा देने का आदेश दिया गया। जैसे ही उनके कोमल शरीर के चारों ओर की चिनाई छाती की ऊंचाई तक पहुंची, वह ढह गई। साहिबजादों को रात के लिए फिर से ठंडे टॉवर में भेज दिया गया। 26 दिसंबर 1705 को बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह को दीवार में जिंदा चुनवाकर शहीद कर दिया गया। सरहिंद के पुराने शहर के पास स्थित इस भाग्यशाली घटना स्थल को अब फतेहगढ़ साहिब नाम दिया गया है, जहाँ अब पावन चार सिख तीर्थस्थल हैं। अलौकिक शहीदी, धर्म, न्याय, देश और मानव कल्याण, प्रेरणास्पद और अनुकरणीय है। शत-शत नमन! (पत्रकार व लेखक)

स्वामी, प्रकाशक और मुद्रक डा0 सरवर जमाल ने आर0 डी0 प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा0 लि0 प्लाट नं0 16-17 पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, रोड नं0 झ्र 09 पटना झ्र 800013 से छपवाकर कार्यालय 203 बी, ब्लाक रंजीत रेसीडेंसीज, साकेतपुरी, मछली गली, राजा बाजार पटना- 800014 से प्रकाशित किया ।सम्पादकः श्रीमती शबाना प्रवीन पी0 आर0 बी0 एक्ट के तहत खबरों की जिम्मेवार। मैनेजिंग एडिटरः डा0 राजीव कुमार, स्थानीय सम्पादकः डा0 नूतन कुमारी, उप सम्पादकः तबस्सुम नवाज PRGI NO:- BIHHIN/2023/86924 E-mail- Newsindogulf730@gmail.com,Mob-9472871824/8544031786 समस्त विवादों का निवारण पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे।

साउथ फिल्म 'एनकेआर 21' में अहम रोल निभाने वाले हैं सोहेल खान

कई बॉलीवुड एक्टर साउथ की फिल्मों में अब अभिनय करते हुए नजर आने लगे हैं। बॉबी देओल के बाद अब एक्टर सोहेल खान भी साउथ की फिल्म में नजर आएंगे, इस फिल्म का उनका पहला लुक हाल ही में सामने आया है। उनकी आने वाली एक दक्षिण भारतीय फिल्म 'एनकेआर 21' का पोस्टर रिलीज हुआ है, जिसमें सोहेल का पहला लुक बिल्कुल अलग नजर आ रहा है।

एक्शन फिल्म है 'एनकेआर 21'

नंदमुरी कल्याण राम की दक्षिण भारतीय एक्शन फिल्म 'एनकेआर 21' में सोहेल खान एक अहम रोल निभाने वाले हैं। इस फिल्म का जो पोस्टर रिलीज हुआ है, उसमें सोहेल का पहला लुक काफी अलग दिख रहा है। यह लुक फिल्ममेकर्स ने सोहेल के जन्मदिन पर खास तौर पर जारी किया है।

मिल रहा है नेगेटिव रोल का फील

सोहेल खान का जो पहला लुक फिल्म 'एनकेआर 21' में सामने आया है, उसमें वह काफी स्टाइलिश नजर आ रहे हैं। सोहले ने चश्मा पहना हुआ है, काले रंग की ड्रेस पहनी है। वह काफी फोकस्ड नजर आ रहे हैं। सोहेल का यह लुक नेगेटिव रोल वाली फीलिंग दे रहा है। फिल्म 'एनकेआर 21' में कल्याण राम और सोहेल खान के किरदार काफी पावरफुल बताए जा रहे हैं। इन दोनों के किरदारों का आमाना-सामना दर्शक होते हुए देखेंगे। यह फिल्म सोहेल खान की साउथ में पहली फिल्म होगी। सोहेल ने बतौर एक्टर बॉलीवुड में कई फिल्मों में काम किया है, वह कॉमेडी, एक्शन, रोमांटिक सभी तरह के रोल कर चुके हैं। अब लगता है कि साउथ की फिल्म 'एनकेआर 21' में वह नेगेटिव किरदार निभाकर, दर्शकों को हैरान कर सकते हैं।इस फिल्म को लेकर सोहेल खान भी काफी एक्साइटेड हैं।

फिल्म की टीम है खास

'एनकेआर 21' में कल्याण राम और सोहेल खान के अलावा भी सई मांजेकर, श्रीकांत, पृथ्वीराज जैसे कलाकार भी शामिल हैं। इस फिल्म का निर्देशन प्रदीप चिलुकुरी कर रहे हैं। इस फिल्म में अजनीश लोकनाथ ने म्यूजिक दिया है। सीनियर एक्ट्रेस विजयाशांति भी फिल्म में एक अहम भूमिका निभाएंगी।

कई बार ऐसा लगा कि अब हार मान लेनी चाहिए

बॉलीवुड अभिनेत्री ऋद्धा चड्ढा और अली फजल ने इंडस्ट्री में अपनी मेहनत और अभिनय के दम पर एक खास पहचान बनाई है। दोनों ने शादी की। साथ ही अब उनकी एक बेटी भी है। कपल ने स्क्रीन लाइव प्रोग्राम में अपने फिल्मी सफर को लेकर बात की है। ऋद्धा और अली ने बताया कि वे निराशा की भावनाओं से कैसे निपटते हैं, उन्होंने बताया कि एक समय आया जब उन्हें लगा कि अब हार मान लेनी चाहिए।

ऋद्धा चड्ढा ने कहा कि करियर में आगे बढ़ने के लिए उन्हें हर 6 महीने में हार माननी पड़ती है। उन्होंने कहा, हर छह महीने में मुझे हार माननी पड़ती है और फिर से शुरुआत करनी पड़ती है।

इन फिल्मों में नजर आए सितारे

अली फजल ने कहा, आमिर खान के साथ वे थ्री ईडियट्स फिल्म में पहली बार नजर आई थीं। ऋद्धा चड्ढा ने कहा, दिबाकर बनर्जी की फिल्म ओए लकी, लकी ओए में उन्होंने साल 2008 में पहली बार काम किया था। इसके बाद दोनों बॉलीवुड अभिनेता फुकरे फिल्म में साथ नजर आए थे। इसके बाद अली को अनुराग कश्यप की गैंग्स ऑफ वासेपुर में नजर आए थे।

निर्माता के तौर पर सामने आए कपल

वर्कफ्रंट की बात करें तो दोनों सितारे गर्ल्स विल बी गर्ल्स को लेकर व्यस्त हैं। इस फिल्म का निर्देशन सुची तलाती ने किया। फिल्म में सह-निर्माता ऋद्धा चड्ढा और कार्यकारी निर्माता अली फजल हैं। अगले साल वह एक फिल्म में एक्टिंग करती हुई भी नजर आएंगी। फिल्म 'अभी तो पार्टी शुरू हुई है' में ऋद्धा अलग तरह का किरदार करने वाली हैं। फिल्म में प्रीति पाणिग्रही और केसव बिनॉय किरण के साथ कनी कुसरुति मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे। यह 18 दिसंबर को प्राइम वीडियो पर रिलीज हो चुकी है।

पुष्पा 3 का निर्माण जल्दी करना चाहते हैं अल्लू अर्जुन, आगे खिसकाई त्रिविक्रम की फिल्म!

साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन की फिल्म पुष्पा 2 द रूल भारत के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर भी ताबड़तोड़ कमाई कर रही है। यह फिल्म 2021 में रिलीज हुई फिल्म पुष्पा- द राइज का सीक्वल है, जिसे दर्शकों का खूब प्यार मिल रहा है। इस फिल्म की ब्लॉकबस्टर सफलता के बाद अब दर्शकों को बेसब्री से इसके तीसरे भाग का इंतजार है। वहीं, अब पुष्पा 3 को लेकर दिलचस्प जानकारी सामने आई है।

पुष्पा 3 पर तेजी से काम करना चाहते हैं अल्लू अर्जुन

पुष्पा 2 द रूल को हिंदी पट्टी में सबसे ज्यादा दर्शक मिले। ऐसे में अभिनेता अल्लू अर्जुन इस फिल्म से मिली सफलता और लोगों से उत्साह को कम नहीं करना चाहते हैं। ऐसे में जल्द से जल्द पुष्पा 3 का निर्माण करना चाहते हैं, जिसकी घोषणा पहले ही की जा चुकी है। वहीं, अब निर्माताओं के साथ मिलकर अल्लू अर्जुन इस परियोजना को तेजी से आगे बढ़ाना चाहते हैं।

राम चरण के साथ सुकुमार की फिल्म

हालांकि, अल्लू अर्जुन को पुष्पा 3 से पहले निर्देशक त्रिविक्रम के साथ एक फिल्म पर काम करना था। अब पुष्पा 3 के लिए निर्देशक सुकुमार के साथ मिलकर काम करने से पहले निर्देशक त्रिविक्रम के साथ एक फिल्म पूरी करने की उनकी मूल योजना खतरे में पड़ सकती है। इस बीच सुकुमार भी राम चरण के साथ एक फिल्म निर्देशित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आयुष्मान और रश्मिका की 'थामा' का इंट्रोडक्टरी शूट हुआ पूरा, फिल्म से जुड़ी अपडेट आई सामने

आयुष्मान खुराना और रश्मिका मंदाना ने हाल ही में अपनी आगामी फिल्म 'थामा' की आधिकारिक घोषणा की। अब इस फिल्म से जुड़ी एक और अपडेट सामने आई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक परेश रावल के साथ आयुष्मान और रश्मिका ने फिल्म के इंट्रोडक्ट्री सीन शूट किए हैं। कथित तौर पर फिल्म से नवाजुद्दीन सिद्दिकी के किरदार से जुड़ी जानकारी भी सामने आई है। आइए जानते हैं फिल्म की अगला शूट कहां होगा।

इस दिन शूट किया गया सीन

रिपोर्ट्स के मुताबिक आयुष्मान खुराना, रश्मिका मंदाना और परेश रावल ने 12 दिसंबर, 2024 को रात के शेड्यूल के साथ शूटिंग शुरू की। आयुष्मान खुराना और रश्मिका मंदाना की 'थामा', निर्माता दिनेश विजान की हॉरर-कॉमेडी दुनिया की अगली किस्त होगी। फिल्म को अक्तूबर 2024 में ही शुरू किया जाना था, लेकिन इसमें देरी हुई।

दिल्ली में हो सकता है अगला शूट

कहा जा रहा है कि फिल्म की टीम जनवरी 2025 में लगातार शूटिंग शेड्यूल के लिए दिल्ली में फिर से इकट्ठा हो सकती है। राजधानी में एक महीने की फिल्मांकन के बाद, वह फरवरी 2025 में ऊटी जाएंगे, जहां नवाजुद्दीन सिद्दीकी कलाकारों में शामिल होंगे।

ऊटी के जंगलों में चलेगी लंबी शूटिंग

रिपोर्ट्स की माने तो ऊटी के जंगलों में लंबी शूटिंग की योजना बनाई गई है, क्योंकि नवाजुद्दीन के किरदार को जंगल में रहते हुए दिखाया गया है। खलनायक की भूमिका निभाने वाले अभिनेता कॉस्ट्यूम डिजाइनर शीतल शर्मा द्वारा डिजाइन किए गए एक अनोखे लुक में नजर आएंगे। आदित्य सतपोदार के निर्देशन में बनी फिल्म 'थामा' दिवाली 2025 पर रिलीज होने वाली है। इस फिल्म में रश्मिका मंदाना और आयुष्मान खुराना पहली बार एक साथ नजर आएंगे।

मानसिक अवरोधों को तोड़ने में मदद करती है अलग-अलग तरह की भूमिका

टीवी अभिनेत्री भूमिका गुरुंग ने अलग-अलग तरह की भूमिका को निभाने को लेकर अपने विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि अलग-अलग तरह की भूमिका मानसिक अवरोधों को तोड़ने और एक कलाकार के रूप में अपनी सीमाओं को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान में 'बस इतना सा ख्वाब' में शगुन की भूमिका निभा रही अभिनेत्री ने बताया कि शगुन की भूमिका उनके व्यक्तिगत विकास को भी दिखाती है। इस बारे में बात करते हुए अभिनेत्री ने साझा किया, मुझे एहसास हुआ कि मैं सिर्फ मुख्य भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहना चाहती। अगर सही तरह से निभाया जाए तो एक किरदार कम से कम स्क्रीन टाइम में भी अलग दिख सकता है। यह मानसिक अवरोधों को तोड़ने और भूमिकाओं में विविधता को अपनाने के बारे में है।

गुरुंग ने यह भी खुलासा किया कि शगुन का उनका किरदार पारंपरिक ढांचे से अलग है। शो में उनका किरदार आधुनिक, व्यावहारिक और अपनी पसंद को लेकर पूरी तरह आश्वस्त है और भारतीय टेलीविजन पर अक्सर दिखाए जाने वाले त्याग करने वाली बहू से के किरदार बिल्कुल अलग है। भूमिका ने बताया, शगुन कोई कोमोलिका या खलनायिका नहीं है। उसकी अपनी भावनाएं हैं, वह गलतियां करती है और अपने फैसलों की जिम्मेदारी खुद लेती है। यही बात उसे दूसरों से अलग बनाती है। शो के बारे में बात करते हुए भूमिका ने कहा, हम सभी ने कभी न कभी किसी न किसी चीज का सपना देखा है। सपने हमें परिभाषित करते हैं। यही बात शो के टाइटल को प्रासंगिक बनाता है। यह छोटी-छोटी इच्छाओं और आकांक्षाओं के बारे में है, जो हर किसी के साथ जुड़ती है। भूमिका गुरुंग ने कहा, पिछले कुछ सालों में इंडस्ट्री काफी विकसित हुई है। नए ट्रेंड, कार्य संस्कृति और कहानी कहने की तकनीकों को अपनाना बहुत जरूरी है।

टीवी सेलिब्रिटी दिखाएंगे मास्टर शेफ में कुकिंग का हुनर, फराह खान-रणवीर बरार होंगे जज

मास्टर शेफ को पसंद करने वालों की संख्या काफी है। इस शो के जरिए आम लोगों को भी अपने खाना बनाने के हुनर के कारण सेलिब्रिटी शेफ बनने का मौका मिला है। देश में आज कई ऐसे बड़े शेफ हैं, जो 'मास्टर शेफ' में बतौर प्रतियोगी आए और बाद में सेलिब्रिटी शेफ बन गए। अब इस शो में टीवी के नामी सेलिब्रिटीज नजर आएंगे और अपनी कुकिंग का हुनर दर्शकों को दिखाएंगे। 'सेलिब्रिटी मास्टर शेफ' जल्द ही शुरू होने वाला है।

मिलेंगे मुश्किल कुकिंग टास्क

सोनीटीवी ऑफिशियल के इंस्टाग्राम पेज पर एक वीडियो शेयर किया गया है। यह वीडियो 'सेलिब्रिटी मास्टर शेफ' का नया प्रोमो है। इसमें शेफ रणवीर बरार, एक मुश्किल कुकिंग टास्क प्रतियोगियों को देते हुए नजर आ रहे हैं। साथ ही निर्देशक, कोरियोग्राफर फराह खान भी नजर आती हैं। इस वीडियो के साथ एक कैप्शन भी लिखा है- 'जिन्हें देखकर पूरा इंडिया सीटी बजाता था, अब उन सबकी सीटी बजेगी।'

दीपिका कक्कड़ की टीवी पर वापसी

इस शो में जो टीवी सेलिब्रिटी नजर आएंगे, उनमें से एक दीपिका कक्कड़ भी है। हाल ही में अपने व्लॉगिंग चैनल पर ही दीपिका कक्कड़ ने बताया कि वह जल्द ही एक दर्शकों को एक खास प्रोजेक्ट में नजर आएंगी। इसी व्लॉग में वह शूटिंग वाली जगह पर भी नजर आईं। शूटिंग पर उनका बेटा भी साथ में मौजूद था। दीपिका ने कहा कि वह जल्द ही बताएंगी कि किस प्रोजेक्ट का हिस्सा बन रही हैं। अब साफ हो गया है कि 'मास्टर शेफ' के जरिए दीपिका एक बार फिर से टीवी पर नजर आएंगी।

गौरव खन्ना भी होंगे शामिल

टीवी सीरियल 'अनुपमा' छोड़ने के बाद गौरव खन्ना भी अब 'सेलिब्रिटी मास्टर शेफ' में नजर आएंगे। वह दिखाएंगे कि एक्टिंग करने के अलावा उन्हें अच्छी कुकिंग करनी भी आती है।

तेजस्वी प्रकाश भी आएंगी नजर

तेजस्वी प्रकाश कई टीवी रियालिटी शो का हिस्सा बन चुकी हैं। वह 'बिग बॉस 15' जीत भी चुकी हैं। अब तेजस्वी प्रकाश भी 'सेलिब्रिटी मास्टर शेफ' में नजर आएंगी।

महेश बाबू की SSMB29 से जुड़ सकती हैं प्रियंका

पिछले लंबे समय से महेश बाबू अपनी आने वाली फिल्म SSMB29 को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। इसका निर्देशन एसएस राजामौली कर रहे हैं। यह राजामौली और महेश के बीच पहला कोलैबोरेशन है, जिसे लेकर दर्शक काफी उत्साहित हैं। अब खबर आ रही है कि फिल्म में लीड एक्ट्रेस के लिए मेकर्स ने प्रियंका चोपड़ा से संपर्क किया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, बॉलीवुड से हॉलीवुड तक अपने अभिनय का परचम लहराने वाली प्रियंका जल्द ही फिर से इंडियन सिनेमा में वापसी कर सकती हैं। वह राजामौली और महेश की फिल्म SSMB29 में नजर आएंगी। निर्माताओं और प्रियंका के बीच बातचीत जारी है और कहा जा रहा है कि प्रियंका जल्द ही फिल्म साइन कर सकती हैं।

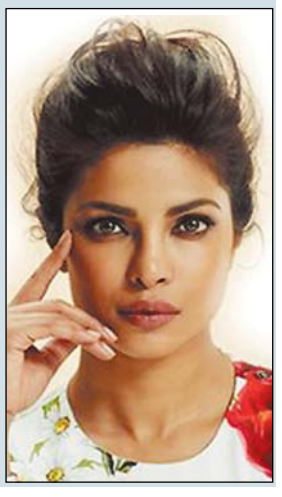

शास्त्री ने बॉक्सिंग डे टेस्ट से पहले की भविष्यवाणी, इस टीम पर लगाया जीत का दाव

मेलबर्न (ऑस्ट्रेलिया) (एजेंसी)। मेलबर्न में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे टेस्ट से पहले पूर्व भारतीय ऑलराउंडर और मुख्य कोच रवि शास्त्री ने भविष्यवाणी की कि भारत मैच जीतेगा। उन्होंने कहा कि मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (MCG) में बॉक्सिंग डे टेस्ट का पहला दिन तय करेगा कि श्रृंखला किस दिशा में जाएगी। श्रृंखला 1-1 से बराबर होने के साथ दोनों पक्ष आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के लिए एक महत्वपूर्ण श्रृंखला बढ़त हासिल करने के इरादे से बहुप्रतीक्षित बॉक्सिंग डे टेस्ट खेलेंगे।

शास्त्री ने एक न्यूज वेबसाइट से बातचीत में कहा, 'जिस तरह से यह श्रृंखला आगे बढ़ रही है, मुझे लगता है कि भारत इस श्रृंखला को जीत लेगा। टीम 1-1 से बराबरी पर है, खासकर जब खेल पर्थ, एडिलेड और ब्रिस्बेन में हो गए हैं, तो

वे इसे जीत लेंगे। बॉक्सिंग डे में 1-1 से आगे बढ़ना सबसे अच्छी स्थिति है। मैं कहूंगा कि भारत आगे है।'

शास्त्री ने कहा कि भारत यहां जीतने के लिए आया है, न कि संख्या बढ़ाने के लिए। उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया में जीतने के लिए एक टीम के पास अच्छी तरह से सोची-समझी योजना और तरीके होने चाहिए और केवल प्रतिस्पर्धा करने से मदद नहीं मिलती।

उन्होंने कहा, 'जब मैं कोच था, तब भी हमारा मंत्र बहुत कठिन, निष्पक्ष खेलना और जीतना था। आपको ऑस्ट्रेलिया को हराने के लिए एक तरीका सोचना होगा, न कि केवल प्रतिस्पर्धा करना। आपको ठीक से योजना बनानी होगी, कि अपने 20 विकेट कैसे लें। भारत ने ऐसा किया है और बहुत आक्रामक रहा है। वे ऑस्ट्रेलिया का सामना कर चुके हैं और जितना हो सके उतना अच्छा प्रदर्शन किया है। यह मनोरंजक और उत्साहपूर्ण रहा है। भारत आगे है। मुझे लगता है कि बॉक्सिंग डे टेस्ट का पहला दिन तय करेगा कि सीरीज किस तरफ जाएगी।'

ऑस्ट्रेलियाई प्लेइंग 11 = उस्मान ख्वाजा, सैम कोनस्टास, मार्नस लाबुस्चगने, स्टीव स्मिथ, ट्रैविस हेड, मिच मार्श, एलेक्स कैरी (विकेटकीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिशेल स्टार्क, नाथन लियोन, स्कॉट बोलैंड

भारतीय टीम = रोहित शर्मा (कप्तान), जसप्रित बुमरा (वीसी), यशस्वी जयसवाल, अभिमन्यु ईश्वरन, शुबमन गिल, विराट कोहली, केएल राहुल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), सरफराज खान, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जड़ेजा, मो. सिराज, आकाश दीप, प्रसिद्ध कृष्णा, हर्षित राणा, नितीश कुमार रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, देवदत्त पडिक्कल, तनुश कोटियन।

बुमराह आईसीसी रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचे

दुबई (एजेंसी)। आईसीसी की ताजा टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह 904 रेटिंग अंकों के साथ ही शीर्ष पर पहुंच गये हैं। बुमराह ने ने बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में अब तक कुल 21 विकेट लिए हैं और इसके कारण ही वह नंबर एक स्थान पर पहुंच गये हैं। उनके दूसरे स्थान पर चल रहे प्रतियोगी से 48 रेटिंग अंक अधिक हैं।

वहीं दक्षिण अफ्रीका के कगिसो रबाडा 856 रेटिंग अंक लेकर दूसरे जबकि ऑस्ट्रेलिया के जॉश हेजलवुड 852 रेटिंग अंक के साथ तीसरे स्थान पर हैं। पैट कमिंस 822 रेटिंग अंक के साथ चौथे, आर अश्विन 789 रेटिंग के साथ पांचवें स्थान पर है। इसके अलावा मैट हैनरी (782) छठे, नाथन लायन (770) सातवें, प्रभात जयसूर्या (768) आठवें, नोमान अली (759) नौवें और रवींद्र जडेजा (755) रेटिंग अंक के साथ दसवें स्थान पर है।

मोहम्मद सिराज एक स्थान के फायदे के साथ 24वें पायदान पर पहुंच गए हैं। जबकि बल्लेबाजी रैंकिंग में ट्रैविस हेड भारत के यशस्वी जायसवाल को छाड़ते हुए बल्लेबाजी चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। बल्लेबाजी रैंकिंग में नंबर एक स्थान पर इंग्लैंड के जो रूट हैं। ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ भी शीर्ष 10 में शामिल हैं। स्मिथ ने पिछले मैच में 101 रनों की पारी खेली थी। जबकि 70 और 20 नाबाद रनों की पारी खेलने वाले ऐलेक्स कैरी 11 पायदान की छलांग के साथ 29वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

शैली में बदलाव के कारण रन नहीं बना पा रहे शुभमन : पोंटिंग

-रक्षात्मक तकनीक को बेहतर बनायें

मेलबर्न (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के युवा बल्लेबाज शुभमन गिल अभी तक अपने इस ऑस्ट्रेलिया दौरे पर रन बनाने में विफल रहे हैं। जिसके बाद से ही उनपर बड़ी पारी खेलने का दबाव है। इसी को लेकर ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने कहा है कि शुभमन ने अपनी बल्लेबाजी शैली में पिछले कुछ समय में बदलाव किये हैं, इसलिए लिए वह विदेश दौरों पर असफल हो रहे हैं। उन्हें इससे उबरने अपना आत्मविश्वास बनाये रखना होगा इसके अलावा अपनी रक्षात्मक तकनीक को भी बेहतर करना होगा। गिल अंगूठे की चोट के कारण बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में पहला टेस्ट नहीं खेल सके थे। वहीं एडीलेड में दूसरे टेस्ट में वह अच्छी शुरूआत को बड़ी पारियों में नहीं बदल सके। ब्रिसबेन में तीसरे टेस्ट में भी वह पहली पारी में रन नहीं बना पाये।

पोंटिंग ने कहा, 'मुझे उसे खेलते देखना पसंद है। जब आप उसे अच्छी बल्लेबाजी करते देखें तो उसका कोई जवाब नहीं है पर विदेश में उसका प्रदर्शन वैसा नहीं रहा है। पोंटिंग ने कहा कि एडीलेड में दूसरे टेस्ट में उन्होंने इस युवा बल्लेबाज की तकनीक में काफी बदलाव देखे जिससे उनसे रन नहीं आ रहे हैं। उन्होंने कहा, 'मैने एडीलेड में उसे बल्लेबाजी करते देखा और लगा कि उसने काफी बदलाव कर लिया है। स्कॉट बोलैंड गेंदबाजी कर रहा था और उसने ऑफ स्टम्प पर पड़ती गेंद पर फ्रंट पैड आगे कर विकेट गंवा दिया।

पोंटिंग ने कहा कि शैली में बदलाव करने की जगह शुभमन को अपने आप पर भरोसा करके बल्लेबाजी में सुधार करना चाहिए था। उन्होंने कहा, 'उसे अपनी रक्षात्मक तकनीक को और बेहतर करना होगा जिससे ऑस्ट्रेलिया में वह रन बना सके। उसने अपने देश में या दुनिया में हर जगह आक्रामक होकर रन बनाए हैं। वह आउट होने के बारे में नहीं बल्कि रन बनाने के बारे में ही सोचता आया है। उसे उसी मानसिकता के साथ यहां भी खेलना चाहिये।

पिछली यादगार जीत को दोहराने मेलबर्न उतरेगी भारतीय टीम

मेलबर्न (एजेंसी)। आज से शुरु होने जा रहे चौथे टेस्ट मैच में भारतीय टीम में पिछली बार वर्ष 2020-21 बॉर्डर-गावस्कर सीरीज में इसी मैदान पर मिली जीत के दोहराने के इरादे से उतरेगी। भारतीय प्रबंधन को इस टेस्ट में जीत दर्ज करने के लिए चुनौतीपूर्ण निर्णय लेने होंगे।

सीरीज के पिछले तीन मुकाबलों में देखा गया है कि भारतीय टीम शीर्षक्रम बल्लेबाजी को लेकर असमंजस की स्थिति रही। अब तक देखा गया है कि फॉर्म में चल रहे बल्लेबाज ने इस सीरीज में बेहतरीन प्रदर्शन किया है, लेकिन खराब फॉर्म से जूझ रहे कप्तान रोहित शर्मा ने भारत के बल्लेबाजी क्रम को बिगाड़ दिया है। इस बॉक्सिंग डे टेस्ट में दो क्रिकेट दिग्गज रोहित शर्मा ,केएल राहुल के चरित्र, धैर्य और दृढ़ संकल्प की परीक्षा होगी। भारत अभी भी बुमराह के पर्याप्त समर्थन और खराब फॉर्म में चल रहे शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों से काफी अपेक्षा कर रहा है। बल्लेबाजी क्रम में खिलाड़ियों को बदलने के मामले में भारत के पास अधिक विकल्प नहीं हैं। इसलिए वे उम्मीद करेंगे कि कोई के एल राहुल का साथ दे और उनके साथ घंटों बल्लेबाजी कर सके।

अगर भारतीय टीम यह टेस्ट हारती है तो डब्ल्यूटीसी के फाइनल में पहुंचने के लिए उन्हें अन्य मैचों के परिणाम पर निर्भर रहना होगा। साथ ही एक दशक के बाद ऐसा होगा, जब ऑस्ट्रेलिया भारत के खिलाफ कोई टेस्ट श्रृंखला जीतने के बेहद करीब होगा। वहीं अगर भारत को जीत मिलती है तो वे बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को रिटेन कर लेंगे।

भारत के पूर्व दिग्गज क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने केएल राहुल को छठे नंबर पर बल्लेबाजी करने का सुझाव

दिया है। यह उन्हें पारी की शुरुआत में नई गेंद से बचायेगा और उन्हें दूसरी नई गेंद के खिलाफ मजबूती से खड़े हो सकेंगे। हालांकि इस रणनीति के अपने फायदे हैं, लेकिन इससे राहुल की लय को बिगाड़ने का भी जोखिम है, विशेषकर सलामी बल्लेबाज के रूप में उनकी सफलता को देखते हुए।

रोहित का शीर्ष पर स्थान अभी सुरक्षित लगता है, भले ही वह रन नहीं बना रहे हों। अगर राहुल नीचे आते हैं तो मध्यक्रम की गतिशीलता में काफी बदलाव आएगा। देखना होगा कि शुभमन गिल एकादश में अपना स्थान बरकरार रख पाते है या ध्रुव जुरेल को मौका मिलेगा।

जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज की अगुवाई में भारत के गेंदबाजी आक्रमण को अपनी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस मैदान की सतह पारंपरिक रूप से तेज गेंदबाजों के अनुकूल है, लेकिन 40 डिग्री सेल्सियस के चिलचिलाती गर्मी के पूर्वानुमान के कारण भारत को दूसरा स्पिनर शामिल करना होगा।

दूसरी ओर ऑस्ट्रेलिया भी शीर्षक्रम की बल्लेबाजी को लेकर परेशान है। ऑस्ट्रेलिया ने जसप्रीत बुमराह का मुकाबला करने के लिए अपनी सलामी जोड़ी में बदलाव करना पड़ा है। इसके लिए ऑस्ट्रेलिया ने टीम में सैम कॉन्स्टास को जगह दी है। गेंदबाजी में पैट कमिंस और मिशेल स्टार्क की जोड़ी किसी भी बल्लेबाजी क्रम को ध्वस्त करने में सक्षम है। पूरी तरह से फिट और खेलने के लिए तैयार ट्रैविस हेड की वापसी से मध्य क्रम को मजबूती मिली है। स्टार्क और स्कॉट बोलैंड से इस पिच की उछाल पर बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है।

मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में भारत का दिलचस्प इतिहास रहा है इस जगह हाल के वर्षों में कई यादगार भारतीय जीत देखी हैं, जिसमें प्रतिष्ठित 2020-21 बॉर्डर-गावस्कर सीरीज के दौरान उनकी जीत भी शामिल है। भारत को इस मुकाबले में जीत दर्ज करने के लिए बल्ले और गेंद दोनों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा।

टीम

भारत : यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, शुभमन गिल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रोहित शर्मा (कप्तान), रवींद्र जडेजा, नीतीश कुमार रेड्डी/वॉशिंगटन सुंदर, आकाश दीप, जसप्रीत बुमराह, और मोहम्मद सिराज।

ऑस्ट्रेलिया: उस्मान ख्वाजा, सैम कॉन्स्टास, मार्नस लाबुशेन, स्टीवन स्मिथ, ट्रैविस हेड, मिचेल मार्श, ऐलेक्स कैरी (विकेटकीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिचेल स्टार्क, नाथन लायन और स्कॉट बोलैंड

चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए दक्षिण अफ्रीका दौरे से बाहर रहेंगे शाहीन अफरीदी

कराची। पाकिस्तान के स्टार तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी आगामी आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी के पहले पूरी तरह से तरोताजा होना चाहते हैं। इसी को देखते हुए शाहीन टेस्ट सीरीज के लिए दक्षिण अफ्रीका दौरे पर नहीं जाना चाहते हैं। शाहीन ने टीम प्रबंधन और चयन समिति से कहा है कि दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए उन्हें शामिल नहीं किया जाये। अफरीदी फरवरी मार्च में होने वाली आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी के लिये पूरी तरह फिट होना चाहते हैं। वहीं पाक टीम को दक्षिण अफ्रीका दौर में दो टेस्ट मैच खेलने हैं। ऐसे में शाहीन के नहीं होने से उसे परेशानी होगी पर मुख्य चयनकर्ता आकिब जावेद ने कहा कि चैम्पियंस ट्रॉफी के लिये उन्हें तरोताजा रखने की कवायद में आराम दिया जा सकता है। शाहीन ने टीम प्रबंधन और बोर्ड को बताया कि उन्हें बांग्लादेश प्रीमियर लीग की एक टीम से पेशकश भी मिली है और उन्होंने आश्वस्त किया है कि वह 30 दिसंबर से सात फरवरी तक होने वाली टी20 लीग के दौरान कार्यभार प्रबंधन कर लेंगे।

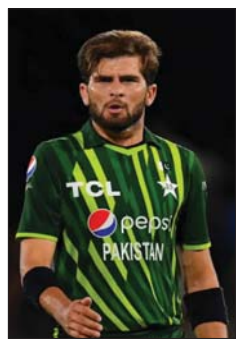

बॉक्सिंग डे टेस्ट में राहुल बना सकते हैं रिकार्ड

मेलबर्न । भारतीय क्रिकेट टीम के बल्लेाज केएल राहुल मेजबान ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ गुरुवार से यहां होने वाले एक चौथे क्रिकेट टेस्ट मैच में अगर शतक लग देते हैं तो एक अहम उपलब्धि अपने नाम कर लेंगे। राहुल ने अब तक तीन मैचों में भारत की ओर से सबसे ज्यादा 235 रन बनाए हैं हालांकि इस दौरान वह कोई शतक नहीं लगा पाये। अब भारत को चौथा टेस्ट मैच मेलबर्न में खेला है और यहां पर केएल राहुल से भी अच्छी पारी की उम्मीद सबको है। वहीं अगर इस टेस्ट मैच में राहुल शतक लगा देते हैं तो वो बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच में भारत की तरफ से सबसे ज्यादा शतक लागने वाले बल्लेबाज बन जाएंगे।

बॉक्सिंग डे टेस्ट में अब तक सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में केएल राहुल सचिन तेंदुलकर और अंजिक्य रहाणे के साथ संयुक्त रूप से पहले नंबर पर हैं। तेंदुलकर और रहाणे ने भारत के लिए बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच में दो-दो शतक लगाए थे। और राहुल के नाम भी दो शतक दर्ज हैं। अब मेलबर्न में अगर राहुल शतक लगा देते हैं तो वो भारत की तरफ से बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच में सबसे ज्यादा शतक बनाने वाले खिलाड़ी बन सकते हैं।

डब्ल्यूटीसी फाइनल में पहुंचने भारतीय टीम को ऑस्ट्रेलिया से जीतने होंगे दोनो मैच

मुम्बई (एजेंसी)। अगामी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल में कौन सी चार टीमें पहुंचेंगी। ये अभी तक तय नहीं हुआ है। फाइनल की रेस में भारत, ऑस्ट्रेलिया दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका जैसी टीमें हैं। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीद अभी दो टेस्ट मैच होने हैं और भारतीय टीम को अगर सीधे फाइनल में जगह बनानी है तो इन दोनो को ही जीतना होगा।

अभी डब्ल्यूटीसी अंकतालिका में दक्षिण अफ्रीका पहले नंबर पर है। दक्षिण अफ्रीका के 10 मैचों में से 6 जीत, तीन हार और एक ड्रॉ से 76 अंक हैं। उसका अंक प्रतिशत 63.33 है। वहीं ऑस्ट्रेलियाई टीम दूसरे स्थान पर है। ऑस्ट्रेलिया के 15 मैचों में 9 जीत, चार हार और 2 ड्रॉ से 106 अंक हैं। उसका अंक प्रतिशत 58.89 है। तीसरे नंबर पर मौजूदा भारत के 17 मैचों में 9 जीत, 6 हार और 2 ड्रॉ से 114 अंक हैं। भारत का अंकों का प्रतिशत 55.88 है। भारतीय टीम को अभी दो मैच ऑस्ट्रेलिया से खेलने हैं।

उधर श्रीलंकाई टीम पांचवें नंबर पर है पर

उसके भी फाइनल में पहुंचने की संभावनाएं कम हैं। श्रीलंकाई टीम के 45.45 प्रतिशत अंक हैं और वह अधिकतम 53.85 प्रतिशत अंकों तक पहुंच सकती है। 48.21 प्रतिशत अंकों के साथ चौथे नंबर पर न्यूजीलैंड की टीम है, जो रेस से बाहर हो चुकी है। इंग्लैंड छठे, पाकिस्तान सातवें, बांग्लादेश आठवें और वेस्टइंडीज नौवें स्थान पर है।

भारतीय टीम के लिए ये है फाइनल का समीकरण

भारतीय टीम को आसानी से फाइनल में पहुंचने के लिए ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दोनों टेस्ट जीतने होंगे। यदि भारतीय टीम एक भी मुकाबला ड्रॉ कराती है या हारती है तो उसे दूसरे परिणामों पर निर्भर रहना होगा। यदि भारतीय टीम सीरीज को 2-1 से जीतती है, तो उसे उम्मीद करनी होगी कि श्रीलंका ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दो मैचों की घरेलू सीरीज में कम से कम एक मैच को ड्रॉ करा ले। या फिर दक्षिण अफ्रीकी टीम पाकिस्तान के खिलाफ सीरीज हार जाए।

यदि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज 2-2 से ड्रॉ होती है, तो भारत 55.26 प्रतिशत अंकों पर समाप्त होगा। ऐसे में भारतीय टीम तभी फाइनल में पहुंचेगी जब श्रीलंका अपने घर पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज में 1-0 या 2-0 से जीत हासिल करे। या पाकिस्तानी टीम दक्षिण अफ्रीका को 2-0 से हराए।

यदि मेलबर्न और सिडनी टेस्ट ड्रॉ रहते हैं तो भारतीय टीम 53.51 अंकों पर समाप्त करेगी। ऐसे में भारत तभी फाइनल में पहुंचेगा, जब दक्षिण अफ्रीका को पाकिस्तान के हाथों दोनों टेस्ट में हार मिले या श्रीलंकाई टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 1-0 से सीरीज जीते या 0-0 से बराबरी करे। श्रीलंका के खिलाफ सीरीज 0-0 से बराबर होने पर ऑस्ट्रेलिया के भारत के समान 53.51 प्रतिशत अंक होंगे लेकिन इस चक्र में अधिक सीरीज जीतने के आधार पर भारत उससे आगे रहेगा। यदि श्रीलंका 2-0 से सीरीज जीतता है, तो वो भारत से आगे हो जाएगा।

सांता सिंह धोनी... पत्नी साक्षी और बेटी संग महान कप्तान ने मनाया क्रिसमस

मुम्बई । भारत के पूर्व कप्तान एमएस धोनी सांता क्लॉज बने और पत्नी साक्षी और बेटी जीवा के साथ क्रिसमस मनाया। इस दौरान धोनी के करीबी साथी भी मौजूद रहे। धोनी ने फुल सांता सूट पहना था। उन्होंने लंबे बूट्स पहनने के अलावा लंबी सफेद दाढी भी लगा रखी थी। दिग्गज क्रिकेटर ने आउटफिट में एक अलग टच देने के लिए पीले रंग का चश्मा भी पहना। साक्षी सिंह धोनी द्वारा शेयर की गई तस्वीरों में, पूर्व क्रिकेटर एक तस्वीर में अपनी पत्नी और बेटी के साथ पोज देते हुए दिखाई दिए, जबकि दूसरी तस्वीर में उन्होंने जीवा को गले लगाया था। क्रिसमस ट्री को बेहद खूबसूरती से सजाया गया था। इस पर गहने, सफेद फूल और ऊपर एक स्टार लगाया गया था। इसे पेड़ को खिड़की के पास रखा गया था। क्रिसमस ट्री के बेस पर रंग-बिरंगे कागज में लिपटे कई सारे उपहार रखे गए थे। धोनी ने एक तस्वीर में पेड़ के साथ पोज भी दिया। इस बीच, बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सेनन और उनके कथित बॉयफ्रेंड कबीर बहिया को भी जश्न मनाते देखा गया। कृति ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर धोनी के साथ अपनी एक तस्वीर पोस्ट की। बहिया, जो यूके के एक व्यवसायी हैं, ने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट पर पूरी गैंग की एक तस्वीर साझा की, जिसे कृति ने फिर से पोस्ट किया। हालांकि, यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि यह जश्न किसके घर पर मनाया गया। बता दें कि 2019 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद, धोनी केवल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के लिए खेलते हैं। दरअसल, रोहित शर्मा के बाद धोनी पांच आईपीएल खिताब जीतने वाले एकमात्र कप्तान हैं। कई बार आईपीएल जीतने वाले कप्तान, जिन्होंने आईपीएल 2024 से पहले कप्तानी छोड़ दी थी, अगली बार आईपीएल 2025 में दिखाई देंगे, जो अगले साल 14 मार्च से शुरू होने वाला है। धोनी आईपीएल 2025 के लिए सीएसके द्वारा रिटायर किए जाने वाले पांच खिलाड़ियों में से एक थे।

जुरेल ने 300 डॉलर का इनाम जीता

मेलबर्न । भारतीय टीम के युवा विकेटकीपर-बल्लेबाज ध्रुव जुरेल को अब तक इस सीरीज में खेलने का अवसर नहीं मिला है पर उन्हें अच्छी फिल्डिंग के कारण इनाम जरुर मिल गया है। जुरेल को बॉक्सिंग डे टेस्ट से पहले फील्डिंग ड्रिल में नकद पुरस्कार मिला है। जुरेल ने फील्डिंग कौशल को निखारने के लिए आयोजित एक अभ्यास सत्र के दौरान अन्य खिलाड़ियों को पीछे छोड़ दिया। इसमें टीम प्रबंधन ने बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी के लिए 300 डॉलर का नकद पुरस्कार घोषित किया था जिसे जुरेल ने अपने बेहतरीन प्रयासों से जीता। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अभ्यास ड्रिल की एक क्लिप भी साझा की है। फील्डिंग अभ्यास सत्र के दौरान खिलाड़ियों को तीन अलग-अलग समूहों में विभाजित किया गया। इसमें फील्डिंग कोच टी दिलीप ने बताया, आज के लक्ष्य में, आप तीन स्टंप देख सकते हैं। बड़े स्टंप पर एक अंक होगा, छोटे स्टंप पर दो अंक होंगे, बीच में गेंद पर चार अंक होंगे। हम आज कोण का उपयोग कर रहे हैं। आप तीन मार्कर देख सकते हैं। प्रत्येक मार्कर से, प्रत्येक छह गेंदें जाएगी। फील्डिंग कोच ने कहा कि ड्रिल आयोजित करने का उद्देश्य खिलाड़ियों को उनके निर्धारित नेट सत्र से पहले ऊर्जावान बनाना था।

'यह अंतिम सूची नहीं है', खेल रत्न पुरस्कार की अंतिम सूची में जोड़ा जाएगा मनु भाकर का नाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रतिष्ठित खेल रत्न पुरस्कार के लिए अनुशंसित लोगों में मनु भाकर का नाम न होने के एक दिन बाद यह विश्वसनीय रूप से पता चला है कि केंद्रीय खेल मंत्री मनसुख मंडाविया द्वारा कुछ दिनों में इस मामले पर निर्णय लिए जाने के बाद इसे अंतिम सूची में जोड़े जाने की संभावना है। कोई औपचारिक घोषणा नहीं की गई, लेकिन देश के शीर्ष खेल पुरस्कार के लिए प्रारंभिक सूची में केवल भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान और ड्रैग-फ्लिकर हरमनप्रीत सिंह और पेरिस पैरालिंपिक में पैरा हाई जंप स्वर्ण पदक विजेता प्रवीण कुमार का नाम शामिल था जिन्होंने तीन साल पहले टोक्यो में भी रजत पदक जीता था।

भाकर का नाम इस साल की शुरुआत में पेरिस ओलंपिक में दो पदक जीतकर इतिहास रचने के बाद औपचारिकता माना जा रहा था, पर विचार नहीं किया गया, जिसके कारण आलोचना हुई। खेल मंत्रालय और 12 सदस्यीय पुरस्कार समिति की आलोचना के बाद मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा, 'यह अंतिम सूची नहीं है, इसमें एक प्रक्रिया शामिल है।'

पुरस्कार चयन समिति के अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति वी रामसुब्रमण्यम हैं और इसमें पूर्व महिला हॉकी कप्तान रानी रामपाल, मुक्केबाज विजेंदर सिंह और महान क्रिकेटर अनिल कुंबले जैसे अन्य लोग शामिल हैं। समिति को उन लोगों पर विचार करने का अधिकार है जो अपना आवेदन दाखिल करते हैं, लेकिन यदि आवश्यक हो, तो यह उन नामों पर चर्चा करने के लिए भी अधिकृत है जो उस सूची में शामिल नहीं हैं।

शूटिंग फेडरेशन (एनआरएआई) ने सचिव-खेल, सुजाता चतुर्वेदी को पत्र लिखकर आग्रह किया कि मंत्रालय 'असाधारण आधार' पर खेल रत्न के लिए भाकर पर विचार करे। एक रिपोर्ट में एनआरएआई के अध्यक्ष कलिकेश सिंह देव ने कहा, 'हमें यह भी नहीं पता कि उसने आवेदन किया है या नहीं, लेकिन अगर उसने किया है, तो मुझे नहीं लगता कि समिति के पास उस पर विचार न करने का कोई कारण था। अगर उसने आवेदन नहीं किया है, तो समिति कुछ नहीं कर सकती थी। हमें उम्मीद है कि मंत्रालय हमारे दृष्टिकोण को समझेगा और उसे वह पुरस्कार देगा जिसकी वह पूरी तरह से हकदार है।'

पूरे मामले पर भाकर की प्रतिक्रिया

मनु भाकर ने 'एक्स' पर लिखा, 'सबसे प्रतिष्ठित खेल रत्न पुरस्कार के लिए मेरे नामांकन को लेकर चल रहे मुद्दे के संबंध में मैं यह कहना चाहूंगी कि एक खिलाड़ी के रूप में मेरी भूमिका अपने देश के लिए खेलना और प्रदर्शन करना है। मुझे लगता है कि नामांकन दाखिल करते समय शायद मेरी ओर से कोई चूक हुई है जिसे ठीक किया जा रहा है। उन्होंने कहा, 'पुरस्कार और मान्यता मुझे प्रेरित करते हैं, लेकिन ये मेरा लक्ष्य नहीं हैं। पुरस्कार मिले या नहीं, मैं अपने देश के लिए और अधिक पदक जीतने के लिए प्रेरित रहूंगी। सभी से अनुरोध है कि कृपया इस पर अटकलें न लगाएं।'

पूर्व क्रिकेटर ने ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को बताया बुमराह का सामना करने का तरीका

मेलबर्न । ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर साइमन कैटिच ने कहा है कि भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह अब तक इस सीरीज में ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों के लिए सबसे बड़ी समस्या रहे हैं। बुमराह ने ही तीनों टेस्ट मैचों में सबसे ज्यादा विकेट लिए हैं। उनका सामना करने में ट्रेविस हेड सहित अन्य बल्लेबाज विफल रहे हैं। कैटिच ने कहा है कि वह इस मामले में अपनी टीम की सहायता कर सकते हैं। कैटिज ने कहा है कि मेजबान टीम के बल्लेबाजों को बुमराह के खिलाफ सफल होने के लिए स्ट्राइक रोटेट करने के साथ ही रक्षात्मक तकनीक को भी बेहतर बनाना होगा। कैटिच ने कहा कि बुमराह शायद ही कभी ढीली गेंद फेंकते हैं, इसलिए ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को अपना रुख सही रखते हुए एक तय रणनीति से उतरना होगा। कैटिच ने कहा कि, सभी बातें सकारात्मक रुख को लेकर हैं और इसका ध्यान उन्हें रखना होगा। इसके अलावा बुमराह जैसे गेंदबाज के खिलाफ केवल बाउंड्री लगाने पर ही ध्यान नहीं देना चाहिये। इसका कारण है कि वह बहुत खराब गेंद नहीं फेंकता। इसलिए सबसे अधिक अहम ये है कि स्ट्राइक रोटेट कर आराम से खेला जाये।

संक्षिप्त समाचार

इराकी रेजिस्टेंस संग मिलकर इजरायल के खिलाफ किया ड्रोन अटैक : हूती का दावा

सना , एजेंसी। यमन के हूती समूह ने कहा कि उन्होंने इजराइल में सैन्य स्थलों पर इराकी रेजिस्टेंस के साथ मिलकर ड्रोन हमले शुरू किए हैं। हूती सैन्य प्रवक्ता याह्या सारेया ने एक बयान में कहा, हम यमन के खिलाफ किसी भी इजरायली-अमेरिकी हमले का जवाब उसी तरीके से देंगे और इजरायली दुश्मन के महत्वपूर्ण जगहों के साथ-साथ अमेरिकी सैन्य कार्रवाइयों को भी निशाना बनाने में कोई संकोच नहीं करेंगे। यह बयान शुक्रवार को राजधानी सना में हूती समर्थकों की एक रैली में दिया गया। उन्होंने कहा कि इजरायल के खिलाफ हमले तब तक जारी रहेंगे, जब तक गाजा पर हमला बंद नहीं हो जाता। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के मुताबिक, इजरायल ने हूती के दावे पर अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। इजरायली सैन्य प्रवक्ता डेनियल हगारी ने गुरुवार को दावा किया था कि इजरायली बलों ने यमन के हूती ठिकानों पर हवाई हमले किए, जिसमें नौ लोग मारे गए। हगारी ने कहा, इन ठिकानों में सना का बंदरगाह और ऊर्जा सुविधाएं शामिल हैं, जिन्हें हूती अपनी सैन्य कार्रवाई में प्रभावी ढंग से उपयोग कर रहे हैं। इससे पहले, यमन के हूती समूह ने कहा था कि उसने इजरायली शहर तेल अवीव में एक सैन्य लक्ष्य पर ड्रोन हमला किया और सफलतापूर्वक अपना लक्ष्य पूरा किया। हूती सैन्य प्रवक्ता याह्या सारेया ने गुरुवार को हूती द्वारा संचालित अल-मसीरा टीवी पर प्रसारित एक बयान में कहा, हम इजरायली दुश्मन के साथ लंबे युद्ध के लिए तैयार हैं। हूती समूह 2014 के अंत से उत्तरी यमन के अधिकांश हिस्से पर काबिज है, जिसके कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त यमनी सरकार को सना से बाहर जाना पड़ा। नवंबर 2023 से हूती समूह इजरायली शहरों पर रॉकेट और ड्रोन हमले कर रहा है और लाल सागर में इजरायल से जुड़े शिपिंग को रुकवा रहा है। यह सब इजरायलियों के साथ चल रहे संघर्ष के बीच गाजा में फिलिस्तीनियों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए किया जा रहा है।

पाकिस्तान : इमरान खान ने सविनय अवज्ञा आंदोलन की धमकी दी

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान में जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने एक बार फिर विरोध प्रदर्शन की घोषणा की है। इस बार यह सविनय अवज्ञा आंदोलन होगा। इमरान खान ने पाकिस्तानी प्रवासियों से कहा कि यदि रविवार तक उनकी मांगें पूरी नहीं की गईं तो वे पाकिस्तान में धनराशि भेजने का बहिष्कार करें। इमरान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने अपने सर्वोच्च नेता की रिहाई की मांग को लेकर 2023 और 2024 के दौरान कई विरोध प्रदर्शन शुरू किए हैं, जिनमें से सबसे हालिया विरोध प्रदर्शन नवंबर 2024 में हुआ था।

सिंगापुर में प्रतिद्वंद्वी समूह के सदस्य को चोट पहुंचाने के लिए भारतीय मूल के व्यक्ति को जेल की सजा

सिंगापुर , एजेंसी। सिंगापुर में प्रतिद्वंद्वी गिरोह के सदस्य को जानबूझकर चोट पहुंचाने का अपराध स्वीकार करने के बाद भारतीय मूल के एक व्यक्ति को छह सप्ताह की जेल की सजा सुनाई गई है। द स्ट्रेट टाइम्स'' की खबर के अनुसार विष्णु सूर्यमूर्ति पर अवैध रूप से जुआ खेलने से जुड़ा एक अलग अपराध स्वीकार करने के बाद 2,000 सिंगापुरी डॉलर का जुर्माना भी लगाया है। विष्णु के समूह से जुड़े एक सदस्य अस्वेन पाचान पिल्लई सुकुमार पर 20 अगस्त 2023 को ऑर्चर्ड रोड के पास सुबह करीब छह बजे कहासुनी के बाद मोहम्मद इशरत मोहम्मद इस्माइल (29) की हत्या का आरोप लगाया गया है। भारतीय मूल के ही सुकुमारन (30) के खिलाफ दर्ज मामला फिलहाल अदालतों में विचाराधीन है। सुकुमारन ने कथित तौर पर इस्माइल का चाकू छीनकर उसपर कई बार वार किए थे। विष्णु को जानबूझकर चोट पहुंचाने के लिए 2022 में दो बार जेल भेजा गया था। न्यायाधीश ओंग लुआन त्जे ने उक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए विष्णु को सजा सुनाई और कहा, आप अब भी युवा हैं... यह सोचने के लिए कुछ समय लें कि आप अपना भविष्य कैसा चाहते हैं, और इस मामले के बाद, अदालत में वापस न आने पर गंभीरता से विचार करें। विष्णु ने इलाज के लिए खुद को एक अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां से पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया था।

इटली की अदालत ने साल्विनी को अवैध रूप से प्रवासियों को हिरासत में रखने के आरोप से मुक्त किया

रोम, एजेंसी। इटली की एक अदालत ने उप प्रधानमंत्री माटेओ साल्विनी को एक जहाज पर 100 प्रवासियों को अवैध रूप से हिरासत में रखने के मामले में आरोपमुक्त करार दिया। यह मामला उस वक्त का है जब साल्विनी गृह मंत्री थे। अदालत ने 2019 की घटना के संबंध में साल्विनी के खिलाफ सभी आरोपों को हटा दिया। साल्विनी ने प्रवासियों को कथित रूप से इटली के दक्षिणी द्वीप लैम्पेदुसा में 'ओपन आर्म्स' बचाव जहाज से उतरने की अनुमति देने से इनकार कर दिया था। साल्विनी ने हमेशा अपना बचाव करते हुए कहा है कि उन्होंने इटली की सीमाओं की रक्षा के लिए काम किया।

अमेरिकी संसद के निचले सदन में फंडिंग बिल पास

23 लाख कर्मचारियों की सैलरी इस पर निर्भर ; अब वोटिंग के लिए सीनेट में जाएगा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी संसद के निचले सदन हाउस ऑफ रेप्रेसेंटेटिव से शुक्रवार को एक अस्थायी फंडिग बिल पारित हो गया है। इससे आखिरी वक्त में गवर्नमेंट शटडाउन टल गया है। अगर यह शटडाउन लागू हो जाता तो सरकार के पास कर्मचारियों को सैलरी देने के पैसे नहीं बचते। हाउस ऑफ रेप्रेसेंटेटिव में रिपब्लिकन पार्टी का कंट्रोल है, लेकिन आंतरिक मतभेद की वजह से उन्हें शटडाउन से बचने के लिए डेमोक्रेट्स पर निर्भर रहना पड़ा।

रिपब्लिकन पार्टी के 170 सांसदों और डेमोक्रेटिक पार्टी के 196 सांसदों ने बिल के पक्ष में वोट दिया। जबकि 34 रिपब्लिकन सांसदों ने इस बिल के खिलाफ वोट दिया। इस तरह 34 के मुकाबले यह बिल 366 वोट से पारित हो गया। अब यह बिल वोटिंग के लिए अमेरिकी संसद के ऊपरी सदन सीनेट में जाएगा। जहां सांसदों के पास बिल पारित करने और संघीय एजेंसियों को चालू रखने के लिए आधी रात तक का वक्त है। अगर यह बिल सीनेट में पास नहीं हो पाता है तो शटडाउन शुरू हो जाएगा। अगर अमेरिका में सरकारी शटडाउन लगता है तो 8.75 लाख कर्मचारियों को छुट्टी दी जा सकती है, जबकि इमरजेंसी सेवा में लगे 14 लाख कर्मचारियों को बिना वेतन के काम करना पड़ सकता है। पिछली बार 2018 में जब 35 दिनों तक शटडाउन रहा था तब 20 लाख से ज्यादा लोग इससे प्रभावित हुए थे। ट्रम्प की पार्टी में भी बिल को लेकर विरोध

इससे पहले अमेरिका के निचले सदन में गुरुवार रात को शटडाउन रोकने के मकदस से एक बिल लाया गया था। इस बिल को अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और उनके सहयोगी इलॉन मस्क के समर्थन से रिपब्लिकन पार्टी ने पेश किया था। हालांकि, विपक्षी डेमोक्रेट्स ने विरोध कर इसे गिरा दिया। बिल को पास होने के लिए 435 सांसदों वाले हाउस से दो तिहाई यानी 290 वोटों की जरूरत थी। लेकिन समर्थन में 174 सांसदों ने ही वोट किया। जबकि इसके विरोध में 235 वोट पड़े। बिल का विरोध करने वालों में ट्रम्प की पार्टी के 38 सांसद भी शामिल रहे। इससे पहले हाउस के स्पीकर माइक जॉनसन ने डेमोक्रेटिक पार्टी को साथ लेकर एक बिल तैयार किया था। हालांकि डोनाल्ड ट्रम्प और मस्क ने इस बिल पर कड़ी आपत्ति जताई थी और इसे पेश ही नहीं होने दिया था। सरकारी खर्च चलाने के लिए संसद में बिल पास होना जरूरी अमेरिका में सरकार के कर्ज की एक सीमा तय होती है। वह देश चलाने के लिए उससे ज्यादा उधार नहीं ले सकती है। बीते सालों में सरकार को कैशलेस होने से बचाने के लिए ये सीमा कई बार बढ़ी है। इसके लिए एक बिल अमेरिकी संसद हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव में लाया जाता है। मौजूदा बिल को ट्रम्प की ओर से लाया गया था, ताकि राष्ट्रपति बनने पर वे आसानी से देश चला सकें। इसे ही विपक्ष ने खारिज किया है। इसका सीधा मतलब है कि अमेरिका को खर्च के लिए पैसा नहीं मिलेगा। एक बार बिल खारिज होने के बाद इसे दोबारा पास कराने के लिए आज यानी शुक्रवार तक का आखिरी समय है। इसके बाद भी बिल पास नहीं हुआ तो अमेरिकी सरकार के पास सरकारी खर्च के लिए पैसे नहीं बचेंगे। ऐसी स्थिति में अमेरिका में शटडाउन लग सकता है। अगर ऐसा होता है तो इससे अमेरिका की अर्थव्यवस्था पर खराब असर पड़ेगा और आने वाली ट्रम्प सरकार पर दबाव बढ़ेगा।

न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका का बजट घाटा बहुत ज्यादा है। इसका मतलब ये हुआ कि सरकार का खर्च उसकी कमाई से कहीं ज्यादा है। इसके चलते उसे अपने कामकाज के लिए कर्ज लेना पड़ता है। हालांकि अमेरिकी सरकार जितना चाहे उतना कर्ज नहीं ले सकती है। इसके लिए एक कर्ज सीमा तय होती है। अमेरिकी सरकार अपने खर्चे का भुगतान इसी सीमा के भीतर कर पाती है। अमेरिका में कर्ज लेने की प्रक्रिया 1939 में शुरू हुई थी। लेकिन तब से अब तक कर्ज लेने की सीमा को 103 बार बढ़ाया जा चुका है। आखिरी बार मई 2023 में अमेरिकी सरकार की कर्ज लेने की सीमा 31.4 ट्रिलियन डॉलर यानी कि 26 लाख हजार करोड़ रुपए तय की गई थी। यह 1 जनवरी 2025 को खत्म हो रहा है। बाइडेन सरकार जो विधेयक ला रही थी, उसमें यह प्रावधान था कि 14 मार्च 2025 तक कर्ज सीमा को यूं ही बरकरार रखा जाए। उसके बाद की मामला ट्रम्प सरकार देखे। ट्रम्प और मस्क को इसी से आपत्ति है। ट्रम्प ने कहा कि संसद को कर्ज सीमा से छुटकारा पा जाना चाहिए या फिर इसे 2029 तक बढ़ा देना चाहिए। इसके बिना हम कोई भी समझौता नहीं करेंगे। ट्रम्प ने शुक्रवार सुबह इस मामले पर कहा था कि अगर शटडाउन होता है तो अभी हो जाए, 20 जनवरी के बाद नहीं। यह बाइडेन की समस्या है, लेकिन अगर रिपब्लिकन इसे ठीक करने में मदद कर सकते हैं तो करेंगे। रिपब्लिकन पार्टी के कई सांसद ट्रम्प के कर्ज सीमा से पूरी तरह छुटकारा पाने की मांग से सहमत नहीं हैं।

जर्मनी हमले का वीडियो; भीड़ पर दौड़ा दी कार, पुलिस ने किया गिरफ्तार

बर्लिन, एजेंसी। जर्मनी में क्रिसमस मार्केट में लोगों को कार से रौंदने वाला गिरफ्तार किया जा चुका है। इसकी गिरफ्तारी का ड्रामाटिक वीडियो सामने आया है। इस वीडियो में दिखाई दे रहा है कि संदिग्ध कार चालक को पुलिस ने कैसे गिरफ्तार किया। जर्मन समाचार एजेंसी डीपीए ने एक विजुअल जारी किया है। इसमें दिखाई दे रहा है कि एक पुलिसवाला संदिग्ध पर बंदूक ताने खड़ा है। वह चिल्ला रहा है, लेट जाओ। अपने हाथों को पीछे कर लो। बिल्कुल भी मत हिलो। लोगों को रौंदने वाला संदिग्ध दाढ़ी रखे हुए हैं और चश्मा लगाए हुए है। वह एक बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कार के पास जमीन पर लेटा हुआ है। थोड़ी देर के बाद अन्य पुलिसवाले वहां पर पहुंचते हैं और उसको गिरफ्तार कर लेते हैं। संदिग्ध व्यक्ति ने घटना को किस तरह से अंजाम दिया इसका भी वीडियो सामने आया है। इसमें दिखाई दे रहा है कि लोग क्रिसमस मार्केट में खरीदारी कर रहे हैं। इसी वक्त एक कार तेजी से आती है लोगों को रौंदती हुई चली जाती है। इससे वहां पर अफरातफरी मच जाती है। लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागते हुए दिखाई दे रहे हैं। मामले में सऊदी अरब के एक 50 वर्षीय शख्स को गिरफ्तार किया गया है। घटना में दो लोग मारे गए हैं, जिनमें से एक छोटा बच्चा है। अधिकारियों के मुताबिक 68 लोग घायल भी हुए हैं, जिनमें 15 की हालत बेहद नाजुक है। सैक्सोनी-एनाहाल्ट राज्य के गृह मंत्री तमारा जीसचांग ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि संदिग्ध 50 वर्षीय सऊदी डॉक्टर है जो 2006 में जर्मनी आया था। वह मैगडेबर्ग से करीब 40 किलोमीटर दक्षिण में बर्नबर्ग में डॉक्टरी की प्रैक्टिस करता है।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर 2200 से ज्यादा हमले, दो दिन में ही तीन मंदिरों में तोड़फोड़; मूर्तियां खंडित

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में हिंदू मंदिरों पर हमले थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। अब मैमनसिंह और दिनाजपुर में बदमाशों ने दो दिन के भीतर तीन हिंदू मंदिरों में आठ मूर्तियों को खंडित कर दिया है। शुक्रवार को एक खबर में यह जानकारी दी गई। 'डेली स्टार' समाचार पत्र के अनुसार पुलिस ने एक मंदिर में तोड़फोड़ के सिलसिले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। मैमनसिंह के हलुआघाट उप-जिले में बृहस्पतिवार और शुक्रवार की सुबह दो मंदिरों की तीन मूर्तियों को खंडित कर दिया गया।

मंदिर सूत्रों और स्थानीय लोगों के हवाले से हलुआघाट पुलिस थाने के प्रभारी अधिकारी (ओसी) अबुल खैर ने बताया कि शुक्रवार तड़के बदमाशों ने हलुआघाट के शाकुआई संघ स्थित बोंदरपारा मंदिर की दो मूर्तियों में तोड़फोड़ की। उन्होंने बताया कि इस घटना में अभी तक कोई मामला दर्ज नहीं किया गया है और न ही कोई गिरफ्तारी हुई है। अपराधियों ने गुरुवार की तड़के एक अन्य घटना में हलुआघाट के बेलडोरा संघ में पोलाशकंद काली मंदिर में एक मूर्ति को खंडित कर दिया। पुलिस ने शुक्रवार को पोलाशकंद गांव के 27 वर्षीय एक व्यक्ति को उसकी कथित संलिप्तता के आरोप में गिरफ्तार किया है। ओसी ने बताया कि गिरफ्तार किए गए अलालउद्दीन ने पूछताछ के दौरान अपना अपराध कबूल कर लिया।

अमेरिका ने सीरिया के नए नेता पर रखा एक करोड़ डॉलर का इनाम वापस लिया; दमिश्क वार्ता के बाद बड़ा फैसला

वॉशिंगटन, एजेंसी। सीरिया के नए नेता और हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस) समूह के प्रमुख अहमद अल-शरा को पकड़ने के लिए जिस इनाम का अमेरिका ने एलान किया था, उसे वापस ले लिया है। इस बात का खुलासा अमेरिकी राजनयिक बारबरा लीफ ने किया।

दमिश्क में चर्चा के बाद फैसला : बता दें, एक करोड़ डॉलर का इनाम वापस लेने का फैसला दमिश्क में हुई बातचीत के बाद लिया गया, जो राष्ट्रपति बशर अल-असद के इस महीने सत्ता से हटने के बाद से सीरिया में अमेरिकी अधिकारियों का पहला दौरा था।

एचटीएस पर जताया विश्वास : पूर्वी मामलों की सहायक विदेश मंत्री लीफ ने इस फैसले को उस बैठक के बाद साझा किया, जिसमें उन्होंने अल-शरा (जिन्हें अबू मोहम्मद अल-जुलानी के नाम से भी जाना जाता है) और सीरिया की संक्रमणकालीन प्रशासन के अन्य अधिकारियों से मुलाकात की थी। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका को वार्ता के दौरान सकारात्मक संदेश मिले, जिसमें आश्वासन भी शामिल था कि एचटीएस किसी भी आतंकवादी खतरों को रोकेगा। उन्होंने आगे कहा कि हमारी चर्चा के आधार पर मैंने बताया कि हम एलान किए इनाम को वापस ले रहे हैं।

दमिश्क में हुई चर्चाएं अमेरिका के सीरिया के प्रति राजनैतिक प्रयासों में एक महत्वपूर्ण बदलाव को उजागर करती हैं। हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस), जिसने असद को सत्ता से हटाने का

अभियान चलाया था, को 2018 में अमेरिकी द्वारा आतंकी संगठन के रूप में सूचीबद्ध किया गया था, क्योंकि इसके अल-कायदा से संबंध थे।

क्या बोलीं लीफ : हालांकि, अब लीफ ने सीरिया के संक्रमणकालीन काल में समावेशन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, हम एक सीरिया-निर्देशित और सीरिया-स्वामित्व वाले राजनीतिक प्रक्रिया का पूरी तरह समर्थन करते हैं, जो एक समावेशी और प्रतिनिधि सरकार का निर्माण करे, जो सभी सीरियाई नागरिकों के अधिकारों का सम्मान करे, जिसमें महिलाएं और सीरिया के विविध जातीय और धार्मिक समुदाय शामिल हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका ने फिलहाल एचटीएस को आंतकी सूची से नहीं हटाया है। साथ ही यह भी बताया गया कि इनाम वापस लेने का फैसला कोई सीधा सौदा नहीं है, बल्कि यह चर्चा को सुविधाजनक बनाने के लिए है, जो उत्पादक, सुरक्षित और स्थिर सीरिया की ओर बढ़ सकती है।

यह मुद्दा भी अहम : पत्रकार ऑस्टिन टाइस, जो 2012 में गायब हुए थे, उनके बारे में पता लगाना भी अमेरिका के लिए एक अहम मुद्दा है।

क्रोएशिया: स्कूल में चाकू से हमले की घटना, छात्रा की मौत, शिक्षक समेत 8 घायल

जाग्रेब, एजेंसी। क्रोएशिया के जाग्रेब में एक स्कूल में बड़ी घटना सामने आई है. मानसिक रूप से बीमार एक युवक ने कक्षा में घुसकर चाकूबाजी की जिससे एक सात वर्षीय लड़की की मौत हो गई जबकि आठ अन्य घायल हो गए. घायलों में एक शिक्षक भी शामिल है. घायलों का इलाज चल रहा है. आरोपी हमलावर पकड़ा गया. जानकारी के अनुसार एलिमेंट्री स्कूल में शुक्रवार की सुबह एक युवक कक्षा में घुस गया और चाकू से हमला करना शुरू कर दिया. हमले के बाद स्कूल में हड़कंच मच गया. आपातकालीन सेवा के लिए कर्मचारी तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे. घायलों को हेलीकॉप्टर की मदद से विभिन्न अस्पतालों में भर्ती कराया गया. इस बीच सूचना पाकर पुलिस मौक पर पहुंची और हमलावर को काबू में किया. हमलावर की पहचान 19 वर्षीय प्रेको के रूप में हुई. वह उसी एलिमेंट्री स्कूल का पूर्व छात्र माना जाता है. वह कथित तौर पर स्कूल के पास रहता था. इस हमले में सात वर्षीय लड़की की मौत हो गई और आठ अन्य घायल हो गए. इसमें एक शिक्षक भी शामिल हैं. शिक्षक की हालत गंभीर है. पांच

घायल छात्रों में से तीन को मामूली चोटें आई हैं. घायल छात्रों का शहर के अस्पतालों में इलाज चल रहा है. अधिकारियों ने पुष्टि की है कि शिक्षक की हालत गंभीर बनी हुई है. पुलिस का कहना है कि हमलावर पुलिस की हिरासत में है. घायलों का इलाज चल रहा है. क्रोएशियाई गृह मंत्री डेवोर बोजिनोविच ने पुलिस की त्वरित प्रतिक्रिया की प्रशंसा की. उन्होंने हमला शुरू होने के 10 मिनट बाद ही हमलावर को काबू कर लिया. उधर हमलावर की मां ने क्रोएशियाई मीडिया से बात करते हुए बताया कि उसका बेटा कई सालों से मानसिक रूप से बीमार है. उसे कई बार मनोरोग वार्ड में भर्ती कराया गया. आरोपी की मां ने कहा कि उसने डॉक्टर से उसे नहीं छोड़ने के लिए विनती की थी. उसकी मां को एहसास था कि वह अस्पताल से बाहर रहने के लिए मानसिक रूप से फिट नहीं है. उसने पांच साल पहले स्कूल से स्नातक किया था. क्रोएशियाई सरकार ने इस घटना पर अपनी चिंता व्यक्त की है. प्रधानमंत्री आंद्रेज प्लेंकोविच ने इस त्रासदी की निंदा की और कहा कि राष्ट्र इस हमले से स्तब्ध है।

पूर्व आईएमएफ चीफ राटो को भ्रष्टाचार मामले में चार साल की जेल

मैड्रिड, एजेंसी। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पूर्व प्रबंध निदेशक और स्पेन के उप प्रधानमंत्री रोड्रिगो राटो को मैड्रिड प्रांतीय अदालत ने चार साल नौ महीने कैद की सजा सुनाई। 75 वर्षीय रोड्रिगो राटो को टैक्स फ्रॉड, धन शोधन और भ्रष्टाचार के मामले में दोषी पाया गया। साल 1996 से 2004 तक जोस मारिया अजनार की पीपुल्स पार्टी (पीपी) सरकार के दौरान उप प्रधानमंत्री और अर्थव्यवस्था मंत्री के रूप में कार्य करने वाले राटो को बहामास, स्विट्जरलैंड, मोनाको, लक्जमबर्ग और यूनाइटेड किंगडम सहित अन्य स्थानों पर बैंक खातों में संपत्ति छिपाने के मामले में दोषी पाया गया।

जांचकर्ताओं ने अघोषित निधियों और पूंजीगत लाभ में 15 मिलियन यूरो (15.6 मिलियन) से अधिक का पता लगाया। सुनवाई के दौरान, पूर्व बैंकर अन्य 16 प्रतिवादियों के साथ बेंच पर बैठे थे, जिनमें रिश्तेदार और करीबी सहयोगी शामिल थे जिन पर धोखाधड़ी की योजना बनाने में उनकी मदद करने का आरोप था। अभियोजकों ने आरोप लगाया कि 2005 से 2015 के बीच के दशक में राटो ने स्पेनिश टैक्स ऑफिस को धोखा दिया और 8.5 मिलियन यूरो (9.3 मिलियन) की राशि अपनी जेब में भर ली थी।

सिन्हुआ समाचार एजेंसी के मुताबिक अदालत ने यह भी पाया कि राटो ने मारियानो राजोय की पीपी सरकार द्वारा शुरू की गई 2012 की टैक्स माफी का

फायदा उठाया, लेकिन अपने स्वामित्व वाली किसी भी कंपनी की घोषणा करने में विफल रहा। स्पेन के भ्रष्टाचार निरोधक कार्यालय ने कहा कि अपने वित्त को नियमित करने के बजाय, राटो ने अवैध रूप से प्राप्त धन को लूटने के साधन के रूप में माफी का इस्तेमाल किया। बता दें कि राटो को दूसरी बार जेल की सजा हुई है। फरवरी 2017 में उन्हें विफल बैंकिया सेविंग्स बैंक के सीईओ के रूप में कार्य करते हुए 500 से अधिक अघोषित खरीद और नकद निकासी के लिए एक गुप्त कॉर्पोरेट क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने के लिए चार साल और छह महीने की सजा सुनाई गई थी। उन्होंने अक्टूबर 2018 से अक्टूबर 2020 तक दो साल जेल में काटे।

संयुक्त राष्ट्र ने मनाया विश्व ध्यान दिवस, आध्यात्मिक गुरु ने कहा- यह सभी धर्मों और समय से परे

वाशिंगटन, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के नेताओं ने आज 21 दिसंबर को न्यूयॉर्क में विश्व ध्यान दिवस मनाया। इस खास मौके पर उन्होंने ध्यान को सभी धर्मों और सीमाओं से परे बताया। उनका कहना है कि मौजूदा समय में जारी संघर्षों और अविश्वास में यह (ध्यान) कूटनीति का एक शक्तिशाली साधन है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन ने शुक्रवार को पहले विश्व ध्यान दिवस के मौके पर एक विशेष कार्यक्रम वैश्विक शांति और सद्भाव के लिए ध्यान का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में संयुक्त राष्ट्र के राजदूतों, अधिकारियों, कर्मचारियों, नागरिक समाज के सदस्यों के साथ-साथ भारतीय-अमेरिकी प्रवासी भी शामिल हुए।

श्री श्री रविशंकर ने कार्यक्रम को किया संबोधित : आध्यात्मिक नेता गुरुदेव श्री श्री रविशंकर ने इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा, आजकल ध्यान कोई लक्जरी नहीं है बल्कि एक आवश्यकता है। ध्यान एक ऐसी चीज है, जिसे आप कहीं भी लगा सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय ध्यान दिवस बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि कई लोग जैसे ही ध्यान शब्द सुनते हैं, उन्हें लगता है कि यह अभ्यास या तो किसी धर्म से है या उनके धर्म ने इसे नहीं सिखाया। आध्यात्मिक नेता गुरुदेव श्री श्री रविशंकर ने इस बात पर जोर दिया कि ध्यान सभी धर्मों और सभी भौगोलिक सीमाओं से परे है, इसलिए यह कई मायनों में बहुत उपयोगी है।

यूएन महासभा के अध्यक्ष ने भी मनाया विश्व ध्यान दिवस : यूएन महासभा के अध्यक्ष फिलेमोन यांग ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा, ध्यान सभी सीमाओं,

परंपराओं और समय से परे है। आज दुनिया में सभी को शांति चाहिए। दुनिया में तनाव के कारण यह जरूरी हो गया है कि हम शांति और शांति लाने वाली हर चीज को अपनाएं। आइए हम सभी के लिए एक सुरक्षित, अधिक न्यायसंगत भविष्य लाने के लिए अपने द्वारा साझा किए गए इस अभ्यास को आगे बढ़ाएं।

इस महीने की शुरुआत में 193 सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सर्वसम्मति से 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस मनाने की घोषणा की। ऑपरेशनल सपोर्ट के अवर महासचिव अतुल खरे ने कहा कि नागरिक और कर्मचारी दुनिया की सबसे गंभीर चुनौतियों पर उच्च दबाव के साथ काम करते हैं। वे अपने परिवार और घर से दूर होते हैं। इससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है।

मुंबई में 34 साल से रह रहा एक बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार

मुंबई। मुंबई की कफ परेड पुलिस ने बांग्लादेशी नागरिकों के खिलाफ चलाए गए एक अभियान में मोईन हयात बादशाह शेख (51) को गिरफ्तार किया है। वह घुसपैठ के जरिए भारत आया और 34 साल तक मुंबई में रहा। चौंकाने वाली जानकारी ये है कि उसने फर्जी दस्तावेजों से बने मतदाता पहचान पत्र का इस्तेमाल कर लोकसभा तथा विधानसभा चुनाव में मतदान भी किया था। पुलिस ने मोईन के पास से आधार कार्ड, पैन कार्ड, वोटर आईडी कार्ड और ड्राइविंग लाइसेंस समेत एक मोबाइल फोन जब्त किया है और आगे की जांच पुलिस कर रही है। बताया गया है कि अंबेडकरनगर इलाके से कफ परेड पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया मोईन 1990 में बांग्लादेश से भारत में घुसपैठ कर मुंबई पहुंचा था। बांग्लादेश के चटगांव का रहने वाला मोईन महज 17 साल की उम्र में अवैध रूप से भारत आया था। मुंबई के घाटकोपर, परेल, कुर्ला, गोवंडी और ठाणे के मुंब्रा में रहकर मोईन ने बच्चों को उर्दू और कुरान की शिक्षा दी। वह वर्तमान में कफ परेड में रहता था। कफ परेड में वह एक बड़े होटल में मौलाना के रूप में विदेश से आने वाले मुस्लिम समुदाय के साथ नमाज़ पढ़ने में भाग लेता था। उसने मुंबई में फर्जी दस्तावेज बनाए। इन दस्तावेजों की मदद से उसने मतदान भी किया। मोईन के जब्त मोबाइल फोन से पुलिस को सारी जानकारी मिल गयी है। मोइन की पत्नी बांग्लादेश में हैं और उसका बेटा विदेश में पढ़ाई कर रहा है। वह अपने बच्चों और पत्नी को मुंबई से बांग्लादेशी मुद्रा में पैसे भेजता था। मोईन ने 2021 में बांग्लादेश का दौरा किया। जांच से पता चला कि वह कोलकाता से चटगांव तक सीमा पार करने के लिए एजेंटों को भुगतान कर रहा था।

कनाडा में मानव तस्करी, भारतीय संस्थाओं और कॉलेजों की जांच कर रही ईडी

नई दिल्ली। ईडी मानव तस्करी के जरिये कनाडा सीमा से भारतीय लोगों को अमेरिका भेजने से संबंधित धन शोधन से जुड़े मामले में कनाडा के कॉलेजों और भारतीय संस्थाओं की संलिप्तता की जांच कर रही है। ईडी ने जानकारी देते हुए कहा कि जांच गुजरात के डिंगुचा गांव के रहने वाले चार सदस्यीय भारतीय परिवार की मौत से जुड़ी है, जो 19 जनवरी, 2022 को अवैध रूप से कनाडा-अमेरिका सीमा पार करने की कोशिश में तेज ठंड के कारण मारे गए थे। ईडी ने मुख्य आरोपी भावेश अशोक भाई पटेल और कुछ अन्य के खिलाफ अहमदाबाद पुलिस की प्राथमिकी का संज्ञान लेते हुए पीएमएलए की आपराधिक धाराओं के तहत मामला दर्ज किया था। पटेल और अन्य पर आरोप है कि उन्होंने मानव तस्करी करके भारतीयों को अवैध रूप से कनाडा से अमेरिका भेजने की एक सुनियोजित साजिश रची थी। जांच में पहले पाया गया था कि इस मानव तस्करी गिरोह के हिस्से के रूप में आरोपी ने कनाडा स्थित कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अवैध रूप से अमेरिका जाने के चाह रखने वालों के लिए प्रवेश की व्यवस्था की थी।

मानसिक रूप से अस्वस्थ महिला से दुष्कर्म मामले में आरोपी को मिली उम्र कैद

पालघर। महाराष्ट्र के पालघर जिले की एक कोर्ट ने 2021 में मानसिक रूप से अस्वस्थ महिला से दुष्कर्म के मामले में एक व्यक्ति को उम्र कैद की सजा सुनाई है। कोर्ट के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश एवी चौधरी-इनामदार ने आदेश में कहा कि विक्रमगाड इलाके में रहने वाले दशरथ मारूति (45) के खिलाफ आरोप साबित हो गए हैं। अतिरिक्त लोक अभियोजक अरुण मसराम ने कोर्ट से कहा कि दिसंबर 2021 में पीड़िता मनोर इलाके में अपने घर में सो रही थी और उसकी मां बाहर गई हुई थी, तभी आरोपी वहां पहुंचा और महिला से रेप किया। उसके बाद आरोपी ने धमकी दी कि अगर उसने इस बारे में किसी को बताया तो उसे गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। अप्रैल 2022 में महिला के गर्भवती होने का पता चला, जिसके बाद उसकी मां की शिकायत पर पुलिस ने रेप समेत विभिन्न आरोपों में प्राथमिकी दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार किया था। अभियोजक ने बताया कि परीक्षण के दौरान पीड़िता के भ्रूण का डीएनए आरोपी के डीएनए से मेल खा गया और इस सबूत को कोर्ट ने स्वीकार कर लिया और आरोपी को आजीवन कारावास की सजा के साथ 11 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया और निर्देश दिया कि यह राशि पीड़िता को मुआवजे के तौर पर दी जाए।

आर्मी वैन दुर्घटना में 5 जवानों की मौत, 4 जवानों की हालत गंभीर

पुंछ। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में मंगलवार शाम आर्मी वैन 350 फीट गहरी खाई में गिर गई। वैन में 18 जवान सवार थे। इसमें से 5 की मौत हुई । वहीं, 13 घायल हैं। इसमें से भी 4 की हालत गंभीर बनी हुई है। हादसे की सूचना मिलते ही सेना की तत्काल प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी) ने मौके पर पहुंचकर रेस्क्यू शुरू किया। घायल जवानों को आसपास के अस्पताल में शिफ्ट किया है। सर्च ऑपरेशन खत्म हो गया है। सेना ने बताया कि काफिले में 6 गाड़ियां थी, जो पुंछ जिले के पास ऑपरेशनल ट्रैक से होते हुए बनोई इलाके की तरफ जा रही थीं। तभी एक वाहन के ड्राइवर के संतुलन खोने की वजह से वैन खाई में गिर गई। हादसे में शामिल सभी जवान 11 मराठा रेजिमेंट के बताए जा रहे हैं। सेना ने इस घटना में किसी आतंकी एंगल होने की संभावना नकार दी है।

मणिपुर में पुल के नीचे से 3.6 किलोग्राम विस्फोटक मिला, बड़े ब्लास्ट की थी साजिश

इंफाल। मणिपुर के चुराचांदपुर जिले में इंफाल-चुराचांदपुर मार्ग पर पुल के नीचे से असम राइफल्स, आर्मी और मणिपुर पुलिस ने 3.6 किलोग्राम विस्फोटक, डेटोनेटर और अन्य सामान बरामद किया है। उग्रवादी बड़े धमाके की तैयारी में थे। पिछले दो माह से असम राइफल्स और मणिपुर पुलिस उग्रवादियों के खिलाफ लगातार अभियान चला रही है। इसके पहले आर्मी और मणिपुर पुलिस ने तलाशी अभियान के दौरान कई जगहों से 21.5 किलोग्राम वजन की 5 इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) बरामद की थीं।

चुनाव आते ही केजरीवाल बांटने लगे फ्री की रेवड़ियां, कर्ज में डूब रही दिल्ली

-राजनीतिक पंडितों का मानना फ्री की योजनाओं से बिगड़ेगी आर्थिक स्थिति

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली चुनाव में एक बार फिर अरविंद केजरीवाल रेवड़िया बांटने का काम कर रहे हैं। कभी महिलाओं को 2100 रुपए देने का ऐलान, कभी बुजुर्गों को मुफ्त इलाज, कभी दलित बच्चों के लिए स्कॉलरशिप, चुनावी मौसम में आम आदमी पार्टी हर कीमत पर दिल्ली की सत्ता पर काबिज होना चाहती है।

राजनीतिक पंडितों का मानना है कि अरविंद केजरीवाल की योजनाएं एक तरफ उन्हें वोट तो दिलवा सकती हैं, लेकिन दिल्ली की आर्थिक स्थिति पर इसका बुरा असर पड़ सकता है। अगर आरबीआई के ही पिछले कुछ सालों के आंकड़े निकाल कर देखें तो स्थिति चिंताजनक है। अगर दिल्ली की मुफ्त बिजली योजना की बात करें तो सालाना इस पर केजरीवाल की सरकार 3600 करोड़ रुपए खर्च कर रही है। पानी की सब्सिडी पर भी सालाना 500 करोड़ तक का खर्च आ रहा है। इसके ऊपर महिलाओं को जो फ्री बस सेवा दी है, उस पर भी सरकार के खजाने से हर साल 440 करोड़ रुपए खर्च हो रहे हैं।

अब इन फ्री योजनाओं से एक तरफ वोट तो मिल रहे हैं, लेकिन दिल्ली कर्ज में डूबती जा रही है। 2020 में दिल्ली पर 3,631 करोड़ रुपए का कर्ज था, यह 2021 में बढ़कर 9,464 करोड़ तक पहुंच गया। इसके बाद 2022 में 15,689 करोड़ और अब 2025 को लेकर कहा जा रहा है कि यही कर्ज 15,881 करोड़ रुपए तक पहुंच सकता है।

दिल्ली की आप सरकार का ही वित्त विभाग मानता है कि महिलाओं को जो 2100 रुपए हर माह देने का ऐलान किया है, इससे आर्थिक बजट बिगड़ सकता है। वित्त विभाग ने यहां तक कहा है कि महिला सम्मान पर जो अभी तक बजट का 15 फीसदी हिस्सा खर्च किया जा रहा है, अगर सब्सिडी का दायरा बढ़ा दिया जाता है तो यह आंकड़ा 20 फीसदी तक चला जाएगा। अब दिल्ली सरकार की तरफ से जो फ्री योजनाओं को चलाया जा रहा है, इस पर दिल्ली हाईकोर्ट भी चिंता जता चुका है। इसी साल 26 नवंबर को आतिशी सरकार को तब फटकार पड़ी थी जब कहा गया कि बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने के लिए ज्यादा काम नहीं किया गया है। तब हाईकोर्ट ने यहां तक कहा था कि राजनेता ना तो शहर के विकास के लिए पैसा खर्च कर रहे हैं और ना ही कहीं से पैसा इकट्ठा कर रहे हैं। केवल मुफ्त की योजनाओं पर पैसा खर्च किया जा रहा है।

कांग्रेस विधायक ने अल्लू को चेताया कहा- सीएम के खिलाफ कुछ भी बोला तो...

हैदराबाद। निजामाबाद (ग्रामीण) से कांग्रेस विधायक आर भूपति रेड्डी ने मंगलवार को अभिनेता अल्लू अर्जुन को चेतावनी देते हुए कहा कि अगर उन्होंने तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी के खिलाफ कोई टिप्पणी की तो उनकी फिल्मों को राज्य में चलने नहीं दिया जाएगा। और भूपति रेड्डी ने कहा कि कांग्रेस कभी भी सिनेमा उद्योग के खिलाफ नहीं रही है। कांग्रेस सरकारों ने हैदराबाद में फिल्म उद्योग को स्थापित करने के लिए फिल्मी हस्तियों को जमीन दी। लेकिन पुष्पा जैसी फिल्में समाज के लिए लाभकारी नहीं हैं।

यह एक तस्कर की कहानी है। रेड्डी ने आगे कहा, आप (अल्लू अर्जुन) हमारे मुख्यमंत्री के बारे में कुछ भी कहने से पहले अलर्ट रहें। आप आंध्र प्रदेश से हैं और यहां रहने आए हैं। तेलंगाना के लिए आपका योगदान क्या है? हम 100 प्रतिशत चेतावनी दे रहे हैं। अगर आप अपने तरीके नहीं सुधारते, तो हम आपकी फिल्मों को तेलंगाना में चलने नहीं देंगे। यह बयान उस घटना के संदर्भ में आया है जिसमें 4 दिसंबर को पुष्पा-2 की स्क्रीनिंग के दौरान एक महिला की मौत हो गई थी और उसका बेटा घायल हो गया था। उस घटना को लेकर मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने अल्लू अर्जुन की आलोचना की थी। रेड्डी ने यह भी आरोप लगाया कि अल्लू अर्जुन ने थिएटर में बिना अनुमति के फिल्म की स्क्रीनिंग की थी।

आज 14 राज्यों के 17 बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित करेंगी राष्ट्रपति मुर्मू

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय गुरुवार, 26 दिसंबर को राजधानी के भारत मंडपम में वीर बाल दिवस मनाएगा। जिसमें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू असाधारण उपलब्धियों के लिए 14 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के कुल 17 बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित करेंगी। 17 में 7 लड़के और 10 लड़कियां शामिल हैं। इस वर्ष यह पुरस्कार बच्चों को सात श्रेणियों में प्रदान किया जाएगा। मंत्रालय ने बताया कि इस वर्ष वीर बाल दिवस समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पुरस्कार विजेताओं व गणमान्य व्यक्तियों के साथ ही कुल करीब 3 हजार 500 बच्चे भाग लेंगे। भारत की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करते हुए यह बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत करेंगे।

इन सात श्रेणियों में मिलेगा पुरस्कार

मंत्रालय ने बताया कि 2024 में जिन सात श्रेणियों के तहत बच्चों को वीर बाल पुरस्कार प्रदान किए जाएगा। उनमें कला और संस्कृति, बहादुरी, नवाचार, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, सामाजिक सेवा और खेल और पर्यावरण मुख्य हैं। पुरस्कार के रूप में प्रत्येक विजेता को एक पदक, प्रमाणपत्र और प्रशस्ति पत्र पुस्तिका प्रदान की जाएगी।

पीएम करेंगे सुपोषित पंचायत योजना का शुभारंभ

समारोह के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सुपोषित पंचायत योजना की शुरुआत करेंगे और मार्च पास्ट को हरी झंडी दिखाएंगे। इस अवसर केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी का उद्घाटन भाषण होगा। इस समारोह का उद्देश्य युवा मस्तिष्कों को पोषित करने, उनकी रचनात्मकता बढ़ाने और विकसित भारत की भविष्य दृष्टि में योगदान के लिए उन्हें प्रेरित करने पर केंद्रित रहेगा। इस खास अवसर पर देशभर में माई गॉव, माई भारत पोर्टल पर ऑनलाइन गतिविधियां सहित देशभर के स्कूलों, बाल देखभाल संस्थानों, आंगनबाड़ी केंद्रों में कहानी सुनाने, रचनात्मक लेखन, पोस्टर बनाने, निबंध लेखन, कविता और प्रश्नोत्तरी जैसे विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

अब पॉपकॉर्न पर भी लगेगा जीएसटी, यूजर्स सरकार के लेने लगे मजे

-यूजर्स बोले-सुनार की दुकान पर मिलेगा, क्या अब सांस लेने पर लगेगा टैक्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। जीएसटी काउंसिल की बैठक में सरकार ने कई फैसलों पर मुहर लगा दी है। केंद्र सरकार ने पुरानी गाड़ियों से लेकर पॉपकॉर्न तक पर जीएसटी लगाने का ऐलान कर दिया है, जिसके बाद पॉपकॉर्न खाने वाले परेशान हो गए हैं कि अब पॉपकॉर्न खाना भी मुश्किल हो गया है। सोशल मीडिया पॉपकॉर्न पर लगे जीएसटी को लेकर बहस छिड़ गई। जहां यूजर्स केंद्र सरकार के इस फैसले पर मजे ले रहे हैं। कुछ यूजर्स ने इस पर सरकार का बचाव भी किया तो कुछ ने इसे खुलेआम लूट बताया है।

कई लोगों का कहना है कि सरकारी खजाने इज्जत से भी भरे जा सकते हैं, लेकिन सरकार लूट मचाकर इन्हें भरना चाहती है। सबसे ज्यादा चोट थिएटर में जाकर फिल्म देखने वाले लोगों को पहुंची, जो हर हफ्ते एक फुल पॉपकॉर्न का पैक लेकर फिल्म के मजे लेते हैं। बता दें कि केंद्र सरकार ने शनिवार को हुए जीएसटी काउंसिल की बैठक में फैसला लेते हुए पॉपकॉर्न पर कैटेगरी वाइज जीएसटी लगाया था, जिसके बाद नेटीजंस ने इंटरनेट पर हलचल मचा दी।

पॉपकॉर्न पर कैटेगरी वाइज जीएसटी की खबर जैसे ही फैली लोगों ने इस पर मीम बनाने शुरू कर दिए किसी ने कहा कि पॉपकॉर्न खरीदने से पहले जीएसटी स्लैब की पढ़ाई करनी पड़ेगी तो किसी ने कहा कि अब सांस लेने पर जीएसटी लगने की देर है। एक और यूजर ने लिखा कि कैरेमलाइज्ड पॉपकॉर्न पर 18 फीसदी जीएसटी ऐसा है मानो इसे सुनार की दुकान पर बेचा जाने लगेगा।

बता दें कि केंद्र सरकार ने जीएसटी की अलग-अलग कैटेगरी बनाई हैं, जिनमें रेडी टू ईट पॉपकॉर्न पर 5 फीसदी जीएसटी, लेबल वाले और डब्बा पैक पॉपकॉर्न पर 12 फीसदी तो वहीं कैरेमलाइज्ड पॉपकॉर्न पर 18 फीसदी जीएसटी लगाया गया है। यूजर्स ने मोदी सरकार से सवाल किया है कि सांस लेने पर जीएसटी कब लगा रहे हो। सोशल मीडिया पर पॉपकॉर्न को लेकर मीम की बाढ़ आ गई, लोगों ने पॉपकॉर्न का असली इज्जत का हकदार बताया तो कुछ ने कहा कि पॉपकॉर्न कंपनियों को बगैर प्रचार के ही इतनी प्रसिद्धि मिल गई है।

एक यूजर ने लिखा कि पॉपकॉर्न अब सभी स्नैक्स का सरदार बन गया है, लिहाजा इसे फूड इंडस्ट्री का राजा घोषित कर देना चाहिए। हालांकि जीएसटी पॉपकॉर्न के अलग-अलग फ्लेवर को लेकर लगाया गया है, लेकिन जनता तो जनता है और टांग खींचना उनका अधिकार जो ठहरा। इंटरनेट पर कैरेमलाइज्ड और सॉल्टेड पॉपकॉर्न पर टैक्स की तुलना की जा रही है और लोग इस पर केंद्र सरकार के मजे ले रहे हैं।

अयोध्या में राम दरबार सहित 18 मंदिर का निर्माण जारी, तुलसी दास के मंदिर का शिखर पूजन हुआ

अयोध्या। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि परिसर में भव्य राम मंदिर का निर्माण चल रहा है। परिसर में राम दरबार सहित 18 मंदिर भी तैयार हो रहे हैं। इन मंदिरों के निर्माण में तेजी आ गई है। मंदिर परिसर में श्रद्धालु सुविधा केन्द्र (पीएफसी) भवन के निकट श्रीराम चरित मानस के रचयिता तुलसी दास का मंदिर बनाया जा रहा है। इसके शिखर का पूजन किया गया। श्रीराम जन्मभूमि ट्रस्ट ने परिसर में बन रहे मंदिरों की तस्वीरें जारी की हैं। इसमें रामायण कालीन महर्षियों और महापुरुषों के मंदिर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। सभी मंदिरों की तस्वीरें तीन तरफ से ली गई हैं, जो देखने में अद्भुत लग रही हैं। 161 फीट ऊंचे तीन मंजिला राम मंदिर का निर्माण दिसंबर, 2025 तक पूरा करने की योजना है। ग्राउंड फ्लोर से लेकर दूसरे फ्लोर तक की कुल ऊंचाई 60 फीट से अधिक होगी। इसके बाद श्रद्धालुओं को भूतल से प्रथम और दूसरे तल पर जाने में कोई असुविधा न हो, राम मंदिर ट्रस्ट इसके लिए लिफ्ट भी लगवा रहा है। श्रीराम जन्मभूमि क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य डॉ. अनिल मिश्रा ने बताया कि मंदिर के पश्चिम में दो लिफ्ट भी बन रही हैं। एक लिफ्ट 24 लोगों की क्षमता वाली होगी। उत्तर दिशा में छह लोगों की क्षमता वाली एक लिफ्ट का भी निर्माण होना है। प्राण प्रतिष्ठा की वर्षगांठ यानी 22 जनवरी 2025 से पहले लिफ्ट का काम पूरा हो जाएगा।

सीएम सिद्धारमैया के नाम पर सड़क का नाम, बीजेपी बोली- यह मैसूर की समृद्ध विरासत का अपमान

बेंगलुरु (एजेंसी)। मैसूरु में एक सड़क का नाम कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के नाम पर रखने से एक नया विवाद खड़ा हो गया है। विपक्ष ने इस कदम के लिए अधिकारियों पर हमला बोला है। जनता दल (सेक्युलर) पार्टी और भाजपा ने इसे कर्नाटक के लोगों के साथ 'विश्वासघात और अपमान' बताया और फैसले को वापस लेने की मांग की। हेरिटेज शहर के नागरिक निकाय, मैसूर सिटी कॉर्पोरेशन ने मेटागल्ली में श्री लक्ष्मी वेंकटरमण स्वामी मंदिर सर्कल और रॉयल इन जंक्शन के बीच के हिस्से का नाम बदलकर सिद्धारमैया आरोग्य मार्ग करने का प्रस्ताव रखा और इस कदम पर सार्वजनिक सुझाव भी आमंत्रित किए गए।

कुछ रिपोर्टों से पता चलता है कि यह चामराजा विधायक हरीश गौड़ा थे जिन्होंने सबसे पहले सड़क के लिए सिद्धारमैया के नाम की सिफारिश की थी। जेडीएस ने सवाल किया कि एमसीसी कैसे सड़क का नाम सिद्धारमैया के नाम पर रख सकती है, जो मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) घोटाले में आरोपी हैं और जांच का सामना कर रहे हैं। जेडीएस ने कहा कि मैसूर महानगर निगम में कोई निर्वाचित बोर्ड नहीं है। कांग्रेस सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारियों ने अपना कर्ज चुकाने के लिए सड़क का नाम सिद्धारमैया के नाम पर रखने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री के नाम पर एक सड़क का नाम रखना न केवल ऐतिहासिक शहर मैसूर बल्कि पूरे राज्य के साथ विश्वासघात और अपमान है।

कर्नाटक सरकार द्वारा मैसूरु में एक सड़क का नाम बदलकर सीएम सिद्धारमैया के नाम पर करने के प्रस्ताव की रिपोर्ट पर बीजेपी नेता शहजाद पूनावाला ने कहा कि कांग्रेस का एकमात्र उद्देश्य हर चीज का नाम टीपू सुल्तान या सिद्धारमैया के नाम पर रखना है...वे मैसूर के लोगों को क्या संदेश देना चाह रहे हैं? सिद्धारमैया ने उनकी जमीनें हड़प लीं, आरोपी नंबर बन गए। एमयूडीए घोटाले में 1, और अब एक सड़क का नाम उसके नाम पर रखा जा रहा है। यह मैसूर की समृद्ध विरासत का अपमान है।

एमयूडीएघोटाला मामले पर विधानसभा में चर्चा कराने की मांग उठी है और पिछले हफ्ते विधानसभा सत्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तीखी नोकझोंक देखने को मिली थी। कांग्रेस नेता बीके हरिप्रसाद ने एमयूडीए घोटाले पर बीजेपी अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र की मांगों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और उनसे उन जमीनों के बारे में भी बोलने को कहा जो कथित तौर पर पिछली बीजेपी सरकार के दौरान आरएसएस को आवंटित की गई थीं।

विपक्ष का खेल होगा खराब, एनडीए नेताओं के साथ जेपी नड्डा और अमित शाह की बड़ी बैठक, बना ये प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीआर अंबेडकर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की टिप्पणी को लेकर कांग्रेस और भारतीय धड़े के तीखे हमलों के बीच, भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने विपक्ष की कहानी का मुकाबला करने की पूरी रणनीति बना ली है। पार्टी ने एकजुट प्रतिक्रिया की रणनीति बनाने के लिए बुधवार को अपने एनडीए सहयोगियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के आवास पर आयोजित बैठक एक घंटे तक चली और शाह की टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया, जाति जनगणना पर बहस और सामाजिक न्याय की राजनीति जैसे प्रमुख मुद्दों पर केंद्रित रही।

शाह ने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू सहित गठबंधन नेताओं को संबोधित करते हुए कथित तौर पर इस बात पर जोर दिया कि कांग्रेस भाजपा को कमजोर करने के लिए झूठी कहानियां गढ़ने का प्रयास कर रही है। उन्होंने एनडीए से ऐसे प्रयासों का एकजुट होकर मुकाबला करने का आग्रह किया। सूत्रों ने कहा कि भाजपा का अपने सहयोगियों को केंद्रीय संदेश स्पष्ट है-विपक्ष के हमलों को प्रभावी ढंग से बेअसर करने के लिए एनडीए को एक एकीकृत मोर्चा पेश करना होगा।

बैठक में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे विशेष रूप से अनुपस्थित रहे। जद (यू) का प्रतिनिधित्व केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन, जिन्हें ललन सिंह के नाम से भी जाना जाता है, ने किया, जबकि शिवसेना ने केंद्रीय राज्य मंत्री प्रतापराव गणपतराव जाधव को भेजा। अन्य प्रमुख उपस्थित लोगों में केंद्रीय मंत्री और जद (एस) नेता एचडी कुमारस्वामी, टीडीपी नेता के. राममोहन नायडू, और केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल, जीतन राम मांझी और संजय निषाद शामिल थे। चर्चा के दौरान, शाह ने कथित तौर पर हाल के राजनीतिक घटनाक्रमों, विशेष रूप से संसद के शीतकालीन सत्र से लिए गए सबक पर विचार किया। उन्होंने कांग्रेस पर ऐतिहासिक रूप से अंबेडकर की विरासत की उपेक्षा करने का आरोप लगाया, जबकि अब इसे राजनीतिक लाभ के लिए हथियाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने भाजपा और उसके सहयोगियों को इस तरह के युद्धाभ्यासों का मजबूती से और एकजुट होकर जवाब देने की आवश्यकता को रेखांकित किया।

हिमाचल में बर्फबारी के चलते 233 सड़कें बंद, चार पर्यटकों की मौत, वाहन फिसलने से कई घायल

*** अटल सुरंग के पास फंसे करीब 500 वाहनों के यात्रियों को सुरक्षित बचाया**

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश में बीते दो रोज से लगातार बर्फबारी का दौर जारी है। शिमला के नारकंडा, मनाली की अटल टनल सहित ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी हो रही है। अटल टनल के पास मंगलवार रात को भी बर्फ गिरी है। इसके बाद अटल टनल को सैलानियों के लिए बंद किया गया है। मनाली के सोलांग तक ही सैलानियों की आवाजाही हो रही है। फिलहाल, आगे बर्फबारी अधिक हुई है।

उधर, बर्फबारी के चलते तीन नेशनल हाईवे सहित राज्य में 233 सड़कें बंद हैं। हिमाचल सरकार के अधिकारियों ने इसकी जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि प्रदेश के किन्नौर, लाहौल एवं स्पीति, शिमला, कुल्लू, मंडी, चंबा और सिरमौर जिले के ऊंचे इलाकों में बर्फबारी हुई। जानकारों ने बताया कि शिमला के होटल में 70 प्रतिशत कमरे भरे हैं। उन्होंने बताया कि बर्फबारी के कारण कमरों की बुकिंग में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अतिरिक्त मुख्य सचिव (राजस्व और आपदा) ओंकार शर्मा ने बताया कि अटल सुरंग के पास फंसे करीब 500 वाहनों में मौजूद पर्यटकों को सुरक्षित बचाया गया।

खबरों के अनुसार, बर्फबारी के कारण पिछले 24 घंटे में हुई दुर्घटनाओं में चार लोगों की मौत हो गई तथा कुछ स्थानों पर वाहन फिसलने के कारण कई लोग घायल हुए। प्रशासन ने अभी तक मृतकों के बारे में अभी कोई जानकारी साझा नहीं की है। प्रशासन ने बताया कि शिमला में सबसे ज़्यादा 145 सड़कें बंद हैं, इसके बाद कुल्लू में 25 और मंडी में 20 सड़कें बंद हैं। वहीं बर्फबारी के कारण 356 ट्रांसफार्मर ठप पड़ गए हैं, जिससे कई इलाकों में बिजली गुल हो गई है।

लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने बताया कि हिमाचल प्रदेश में दिसंबर में होने वाली बर्फबारी सेब के लिए अच्छी मानी जाती है, क्योंकि इससे मिट्टी को नमी मिलती है और इससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलता है। अधिकारियों के साथ सड़क की स्थिति की समीक्षा करने के बाद सिंह ने कहा कि शिमला, कुल्लू-मनाली और डलहौजी में पर्यटकों के आने की उम्मीद है। उन्होंने बताया कि पर्यटकों की आमद को संभालने के लिए विभाग पूरी तरह तैयार है। सड़कों पर बर्फ हटाने के लिए दो 'स्नो ब्लोअर' सहित कुल 268 मशीनों का इस्तेमाल किया जा रहा है।

मौसम विभाग ने हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों तथा विशेषकर शिमला में कुछ स्थानों पर शुक्रवार शाम से रविवार दोपहर तक बारिश और बर्फबारी की संभावना जाहिर की है। शनिवार को बारिश की संभावना अधिकतम होगी। मौसम विभाग ने

बिलासपुर, ऊना, हमीरपुर और मंडी में भीषण ठंड के लिए 'ऑरेंज' अलर्ट जारी किया है, जबकि भाखड़ा बांध जलाशय क्षेत्र और मंडी के बल्ह घाटी के कुछ हिस्सों में बृहस्पतिवार तक घने कोहरा छाए रहने की संभावना के चलते 'येलो' अलर्ट जारी किया है।